SANTOSH
Deemed to be University

NATIONAL DENTAL BIOETHICS UNIT
SANTOSH DEEMED TO BE UNIVERSITY

दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता

2016-2023

NATIONAL DENTAL BIOETHICS UNIT
SANTOSH DEEMED TO BE UNIVERSITY
SANTOSH

2016
में स्थापित

फ़ोरवर्ड

डॉ. पी. महालिंगम
अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक
(संतोष मान्यता प्राप्त
विश्वविद्यालय)

एक ऐसी दुनिया में जहाँ तकनीक स्वास्थ्य देखभाल के परिदृश्य को लगातार नया आकार दे रही है, नैतिक सोचना अब और भी महत्वपूर्ण हो गया है। दंत चिकित्सा, स्वास्थ्य देखभाल की एक महत्वपूर्ण शाखा के रूप में, इन नैतिक चुनौतियों से मुक्त नहीं है। दंत चिकित्सा पेशेवर विज्ञान, तकनीक और मानवता के चौराहे पर खड़े होते हैं, वे ऐसे निर्णय लेते हैं जो न केवल उनके मरीज़ों के मौखिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके समग्र कल्याण और जीवन की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं!

मैं बहुत गर्व और उत्साह के साथ इस असाधारण कार्य का परिचय दे रहा हूँ, जो राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम के सहयोगात्मक प्रयासों से उत्पन्न हुआ है। जैसे-जैसे हम दंत चिकित्सा नैतिकता के जटिल क्षेत्र में आगे बढ़ते हैं, यह पुस्तक एक प्रकाशस्तंभ के रूप में उभरती है, जो कर्तव्यनिष्ठ और सहानुभूति पूर्ण दंत चिकित्सा अभ्यास की दिशा में मार्ग को उजागर करती है।

दंत चिकित्सा का नैतिक ढांचा जानकारी पूर्ण सहमति, गोपनीयता और मरीज़ के अपना स्वयं पर फैसला लेने के अत्यंत सम्मान के धागों से बुना गया है ये सिद्धांत उन जटिल नैतिक दुविधाओं से निपटने में हमारा मार्गदर्शन करते हैं, जिनका हम रोजाना सामना करते हैं। यह पुस्तक इन सिद्धांतों के बारे में गहराई से बताती है और दंत चिकित्सा देखभाल के संदर्भ में उनके अनुप्रयोगों का अन्वेषण करती है, जो हम सभी को चुनौती देने वाली बारीकियों पर प्रकाश डालती हैं।

जो बात इस पुस्तक को वास्तव में सबसे अलग बनाती है, वह है इसकी उत्पत्ति जो इस क्षेत्र में समर्पित विशेषज्ञों के ठोस प्रयासों से हुई है। यह दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के प्रति उनकी बुद्धिमत्ता, अनुभव और जुनून की पराकाष्ठा को दर्शाता है। साथ में, उन्होंने हमारे पेशे में नैतिक चुनौतियों के लगातार विकसित होते परिदृश्य को नेविगेट करने के तरीके के बारे में जागरूकता पैदा करने और व्यावहारिक मार्गदर्शन देने का प्रयास किया है।

जब आप इस पुस्तक के पन्नों के माध्यम से इस सफ़र की शुरुआत करते हैं, तो मेरा आपसे आग्रह है कि आप इसे न केवल एक संसाधन के रूप में देखें, बल्कि अपने अभ्यास में एक भरोसेमंद साथी के रूप में इस पर विचार करें। डॉक्टरों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के तौर पर हमारा साझा लक्ष्य दांतों की देखभाल के ताने-बाने में नैतिक सिद्धांतों को मूल रूप से शामिल करना है। यह पुस्तिका इस नेक काम के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

मैं राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई के सदस्यों को, जिन्होंने इस कार्यक्रम को आकार देने के लिए अपनी विशेषज्ञता समर्पित की और हमारी संस्था के समर्पित स्टाफ को, जिन्होंने इसके विकास में सहायता की, दिल से आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह पुस्तक चर्चाओं को बढ़ावा देगी, चिंतन को प्रेरित करेगी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे कार्यों को प्रेरित करेगी जिससे हमारे मरीज़ों और उनकी सेवा करने वाले दंत चिकित्सा पेशेवरों दोनों के लिए बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

contd.

फ़ोरवर्ड

जब आप इस पुस्तक के पन्नों के माध्यम से इस सफ़र की शुरुआत करते हैं, तो मेरा आपसे आग्रह है कि आप इसे न केवल एक संसाधन के रूप में देखें, बल्कि अपने अभ्यास में एक भरोसेमंद साथी के रूप में इस पर विचार करें। डॉक्टरों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के तौर पर हमारा साझा लक्ष्य दांतों की देखभाल के ताने-बाने में नैतिक सिद्धांतों को मूल रूप से शामिल करना है। यह पुस्तिका इस नेक काम के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

इसके अलावा, इस प्रकाशन में दुनिया भर के दंत चिकित्सा पेशेवरों के सहयोगात्मक प्रयासों को दिखाया गया है, जो जैव-नैतिक चुनौतियों और समाधानों पर अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं। यह दंत चिकित्सा के नैतिक आयाम को बढ़ाने के लिए सामूहिक रूप से काम करने वाले क्षेत्र के लोगों की प्रतिबद्धता और समर्पण का प्रमाण है।

मैं इस किताब में अमूल्य जानकारी देने और उनके योगदान के लिए संपादकों, लेखकों और योगदानकर्ताओं की सराहना करता हूँ। दंत चिकित्सा अभ्यासों के प्रति उनकी विशेषज्ञता और प्रतिबद्धता बेशक इस क्षेत्र में वर्तमान और भावी पेशेवरों के लिए प्रेरणा का काम करेगी।

मैं राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम और जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने लगातार सहयोग और मार्गदर्शन दिया। मुझे पूरा भरोसा है कि यह किताब सभी दंत चिकित्सा पेशेवर, शिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं और दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता में दिलचस्पी रखने वाले छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में काम करेगी।

आइए हम नैतिक दंत चिकित्सा अभ्यासों और सभी के लिए मौखिक स्वास्थ्य देखभाल की बेहतरी की दिशा में अपनी यात्रा जारी रखें।

प्रस्तावना

प्रो. रसल डी'सूज़ा

प्रमुख एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
जैवनैतिकता में अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई द्वारा अपनी पुस्तक लॉन्च करने के इस अवसर पर मुझे बेहद खुशी है और मैं आपको बधाई देता हूं। यह वास्तव में एक स्वागत योग्य दिशा है क्योंकि जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष के भारतीय कार्यक्रम का दंत जैवनैतिकता कार्यक्रम, एकीकृत दंत जैवनैतिकता पाठ्यक्रम शुरू करने में सक्रिय रहा है जिसे प्रायोगिक तौर पर शुरू किया गया है और अब उन विश्वविद्यालयों में पेश किया गया है जो जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष के भारतीय कार्यक्रम का हिस्सा हैं। इसके अलावा कार्यक्रम ने कोविड महामारी के मद्देनजर नैतिक मुद्दों के साथ दंत चिकित्सा पेशेवरों की चुनौतियों पर यूनेस्को अध्यक्ष श्रृंखला के अंतर्राष्ट्रीय पैनल चर्चा वेबिनार की मेजबानी की जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष के शिक्षा विभाग के सहयोग से दंत चिकित्सा जैवनैतिकता प्रोग्राम स्वास्थ्य विज्ञान शिक्षा में जैवनैतिकता और मानवाधिकार के सिद्धांतों पर अंतर्राष्ट्रीय स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए दंत चिकित्सा शिक्षण संकाय के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संकाय के साथ वेबिनार पाठ्यक्रम का आयोजन कर रहा है। सफल संकाय यूरोपीय संघ के मेडिकल विश्वविद्यालय सोफिया में यूनेस्को अध्यक्ष के जैवनैतिकता के शिक्षकों के अंतर्राष्ट्रीय मंच के साथ पंजीकरण और सदस्यता के लिए पात्र होंगे। मैं जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष के राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम की पुस्तक और गतिविधियों की सफलता की कामना करता हूँ।

प्रो. मैरी. मैथ्यू

पसह-अध्यक्ष एवं उप प्रमुख
शिक्षा विभाग,icb

मुझे राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई को 'द बायोइथिक्स बुक' के विमोचन का नेतृत्व करने के लिए बधाई देते हुए बहुत खुशी हो रही है, दंत चिकित्सा में नैतिक मुद्दों को अपनी अलग जगह चाहिए क्योंकि ये चिंताएं पेशे के लिए अनोखी और समस्या से भरी हुई हैं। यह प्लेटफॉर्म इन मुद्दों को रोकने, कम करने और उनसे सीखने के उद्देश्य से प्रसार करने, साझा करने और सहयोग करने के लिए जगह प्रदान करता है, जो कई बार परेशान करने वाला हो सकता है। मैं इस टीम की सफलता और इस प्रयास के लिए टीम को शुभकामनाएं देती हूँ।

विषय-सूची

- **हमारा लक्ष्य** **02**
- **हमारीं दृष्टि** **03**
- **बोर्ड की तरफ से** **05**
- **जैवनैतिकता की अनिवार्यता** **08**
- **यूनेस्को चेयर (हाइफ़ा) का उद्घाटन** **10**
- **राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम** **16**
- **क्षेत्रीय प्रभाव** **18**
  - वेबिनार @ शारदा विश्वविद्यालय 19
  - जैवनैतिकता दिवस 2022 20
  - विश्व जैवनैतिकता दिवस 22
  - दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता 24
- **राष्ट्रीय जागरूकता** **41**
  - लेट्स बी द चेंज @ AIIMS 42
  - एस.आर.एम. विश्वविद्यालय 44
  - राजस्थान डेंटल कॉलेज 46
  - मानव रचना विश्वविद्यालय 47
  - एस.जी.टी. विश्वविद्यालय 48
- **अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता** **49**
  - एथिकल एस्पेक्ट्स ऑफ़ एमरर्जेंस स्ट्रैटेजीज 50
  - ग्लोबल वेबिनार: दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता 55
- **एथियोस्कोप** **57**
- **जैवनैतिकता में अनुसंधान** **61**
- **समझौता प्रमाणपत्र** **62**
- **पब्लिकेशन्स** **66**
- **राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मान्यताएं** **68**
- **पैनलिस्ट की सूची** **71**
- **डी.सी.आई. आचार संहिता** **72**
- **एकीकृत जैवनैतिकता बी.डी.एस. पाठ्यक्रम** **76**
- **मीडिया कवरेज** **82**
- **संपादकीय टीम** **85**

हमारा लक्ष्य

दंत चिकित्सा पेशेवर के तौर पर, हम मानते हैं कि हमारी फ़ील्ड हमारे और हमारे मरीज़ों के बीच मौजूद विश्वास पर आधारित है।यह विश्वास इस आश्वासन पर टिका हुआ है कि हम अपने मरीज़ों के हित में लगातार काम करेंगे, और उन्हें अच्छी से अच्छी देखभाल प्रदान करेंगे।इस विश्वास को बनाए रखने के लिए, हमें नैतिक सिद्धांतों का पालन करना ज़रूरी है,जो हमारे अभ्यास का मार्गदर्शन करता है।

दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता का उद्देश्य नैतिक निर्णय लेने के लिए एक तंत्र स्थापित करना है, जो हमारे समुदाय में देखभाल और व्यावसायिकता के उच्चतम मानकों को पूरा करता हो।दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता एक जटिल और बहुआयामी क्षेत्र है, जिसमें कई तरह की नैतिक, नीतिपरक और कानूनी चिंताएं शामिल हैं।

दंत चिकित्सा पेशेवर के तौर पर, हमारा पहला लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि हमारे मरीज़ों को सबसे अच्छी देखभाल मिले।इसमें उनके स्वयं पर फैसला लेने और उनके इलाज के बारे में सोच-समझकर निर्णय लेने के अधिकार का सम्मान करना, साथ ही उनकी निजता और गोपनीयता की रक्षा करना शामिल है।

हमें ऐसी देखभाल देने की भी कोशिश करनी चाहिए जो साक्ष्य-आधारित, प्रभावी और कुशल हो, साथ ही जो कम नुकसान करते हुए ज़्यादा से ज़्यादा लाभ प्रदान कर सके। दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता का दूसरा मुख्य उद्देश्य हमारे बीच यानी दंत चिकित्सा पेशेवर के बीच नैतिक जागरूकता और ज़िम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देना है।

इसमें निरंतर रूप से सीखने और व्यावसायिक विकास के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा देना, साथ ही सहकर्मियों, मरीज़ों और अन्य हितधारकों के बीच निष्पक्ष और स्वतंत्र रूप से संवाद को प्रोत्साहित करना शामिल है। हमें अपनी सीमाओं के बारे में भी पता होना चाहिए और देखभाल के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए ज़रूरत पड़ने पर सहायता लेनी चाहिए। इसके अलावा, दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता का उद्देश्य हमारे अभ्यास के व्यापक सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों को दूर करना है।

इसमें देखभाल तक पहुंच स्थापित करना, पर्यावरण पर दंत चिकित्सा सामग्री और अपशिष्ट का प्रभाव और सार्वजनिक स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने में दंत चिकित्सा की भूमिका जैसे मुद्दों पर विचार करना शामिल है।इन व्यापक विषयों की दिशा में काम कर, हम, दंत चिकित्सा पेशेवर के तौर पर, एक ज़्यादा न्यायसंगत और विश्व के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए, नैतिक सिद्धांतों की एक सूची निर्देशित की जानी चाहिए, जो समग्र रूप से मरीज़ों, चिकित्सकों और सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता देती हो।

इन सिद्धांतों का पालन करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम उन्हें उत्तम देखभाल प्रदान कर रहे हैं और अपने पेशे की सिद्धांतों को कायम रख रहे हैं।

हमारी दृष्टि

दंत चिकित्सा पेशेवर के तौर पर, दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के लिए हमारी दृष्टि एक ऐसे भविष्य का निर्माण करना है, जहां हमें मजबूत नैतिक दृष्टिकोण द्वारा निर्देशित किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारे काम और निर्णय हमेशा हमारे मरीज़ों और समाज के सर्वोत्तम हित में हों।इस दृष्टिकोण में कई प्रमुख तत्व शामिल हैं:

1. मरीज़-केंद्रित देखभाल: हम अपने मरीज़ों की ज़रूरतों, मूल्यों और प्राथमिकताओं पर ध्यान देंगे, यह सुनिश्चित करेंगे कि उनके साथ आदर, सम्मान और करुणा के साथ पेश आया जाए।इसमें निष्पक्ष संचार को बढ़ावा देना, सोच-समझकर दी गई सहमति और साथ मिलकर निर्णय लेना महत्वपूर्ण है,साथ ही मरीज़ों की निजता और गोपनीयता की सुरक्षा करना भी।

2. पेशेवर उत्कृष्टता: हम लगातार सीखने, आत्म-चिंतन करने और साक्ष्य-आधारित पद्धतियों का पालन करके देखभाल के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध होंगे।हम अपने काम और निर्णयों के लिए भी जवाबदेह होंगे और अपने साथियों और सलाहकारों से उनकी सक्रिय प्रतिक्रिया और साहयता लेंगे।

3. सहयोग और सामूहिक कार्य: हम व्यापक और समन्वित देखभाल प्रदान करने के लिए अलग-अलग पृष्ठभूमि और विषयों के सहयोगियों के साथ मिलकर काम करने के महत्व को पहचानेंगे।हम निष्पक्ष और स्वतंत्र रूप से संवाद में भी शामिल होंगे और अपने मरीजों और अपने पेशे के हितलाभ साथ ही अपने ज्ञान और विशेषज्ञता को साझा करने के लिए तैयार रहेंगे।

4. सामाजिक जिम्मेदारी: हमें अपने अभ्यास के व्यापक सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में पता होगा और हम देखभाल तक पहुंच स्थापित करने को बढ़ावा देने, स्वास्थ्य संबंधी असमानताओं को कम करने और अपनी पारिस्थितिक पहचान को कम करने का प्रयास करेंगे।हम ऐसी नीतियों और पहलों का भी समर्थन करेंगेजो सार्वजनिक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए सहायक हों।

5. नैतिक नेतृत्व: हम अपने अभ्यास और व्यापक समुदाय दोनों के तहत नैतिक व्यापार करने का उदाहरण बनेंगे। हम दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के सिद्धांतों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देंगे और अपने साथियों और ट्रेनी के बीच नैतिक जागरूकता और ज़िम्मेदारी की संस्कृतिबनाने के लिए काम करेंगे।
दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के इस सपने को पूरा कर, हम, दंत चिकित्सा पेशेवर के तौर पर, एक ऐसा भविष्य बनाने में मदद कर सकते हैं, जहां नैतिक निर्णय लेने पर ज़ोर दिया जाता है, और जहां मरीज़ों, चिकित्सकों और समाज की भलाई हमेशा सबसे ऊपर रखी जाती है।आगे जारी है....इस दृष्टि के लिए निरंतर रूप से सीखने के प्रति प्रतिबद्धता, सहयोग और सामाजिक ज़िम्मेदारी के साथ-साथ देखभाल और व्यावसायिकता के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के प्रति समर्पण की आवश्यकता होती है।
हम इस दृष्टि की दिशा में साथ मिलकर काम करके, यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम अपने मरीज़ों को उत्तम संभव देखभाल दे रहे हैं और साथ ही हम एक न्यायपूर्ण और सतत दुनिया में योगदान भी दे रहे हैं।

ऊपर दिए गए दृष्टिकोण के अलावा, दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के उद्देश्यों में ये बातें भी शामिल है:

6. सांस्कृतिक क्षमता: दंत चिकित्सा पेशेवर के तौर पर, हम अपने मरीजों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को समझने और उनका सम्मान करने की कोशिश करेंगे, यह मानते हुए कि सांस्कृतिक अंतर मरीजों की देखभाल और संचार को प्रभावित कर सकते हैं।यह बात का ध्यान रखते हुए कि सभी मरीज़ समझ गए हैं और सभी मरीज़ सम्मानित महसूस करेंहम सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील देखभाल प्रदान करने के लिए ज़रूरी कौशल विकसित करने की कोशिश करेंगे।

हमारी दृष्टि

7. तकनीकी प्रगति:हम दंत चिकित्सा में हुई नवीनतम तकनीकी प्रगति के बारे में अवगत रहेंगे और अपने अभ्यास में नई तकनीकों को शामिल करने के नैतिक प्रभावों पर विचार करेंगे।हम नई तकनीकों के संभावित लाभ और जोखिमों का ध्यानपूर्वक मूल्यांकन करेंगे, यह सुनिश्चित करेंगे कि उन्हें अपनानाहमारे मरीज़ों और प्रोफेशन के सर्वोत्तम हितों के अनुरूप हो।

8. अनुसंधान से जुड़ी नैतिकता:अनुसंधान में लगे दंत चिकित्सा पेशेवर के तौर पर, हम यह सुनिश्चित करते हुए कि हमारा काम ईमानदारी, पारदर्शिता और मानवीय विषयों के प्रति सम्मान के साथ हो,हम उच्चतम नैतिक मानकों का पालन करेंगे।हम अपने रिसर्च के निष्कर्षों को ज़िम्मेदार और सरल तरीके से प्रसारित करने का भी प्रयास करेंगे, जिससे दंत चिकित्सा के क्षेत्र में ज्ञान की उन्नति में मदद मिलेगी।दंत चिकित्सा पेशेवर के नज़रिए से दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के उद्देश्यों में मरीज़ों की देखभाल, पेशेवर विकास और सामाजिक ज़िम्मेदारी के लिए समग्र दृष्टिकोण शामिल है।इन सिद्धांतों को अपने व्यवहार में शामिल करके, हम एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जहाँ नैतिक निर्णय को प्राथमिकता दी जाए, जिससे मरीज़ों, चिकित्सकों और समग्र सामाजिक कल्याण सुनिश्चित हो सके।

बोर्ड की तरफ से

डॉ. राजीव आहलूवालिया

अध्यक्षराष्ट्रीय दंत चिकित्सक
जैवनैतिकता इकाई

जैसे-जैसे तकनीक और दंत चिकित्सा का क्षेत्र आगे बढ़ रहा है, वैसे ही मरीजों की देखभाल कैसे की जाए, इस बारे में नैतिक सवाल और दुविधाएं बढ़ती जा रही हैं। दंत चिकित्सा पेशेवर को अक्सर ऐसे फैसले लेने पड़ते हैं जो न केवल उनके मरीजों के मौखिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं, बल्कि उनके संपूर्ण स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। इसलिए, दंत चिकित्सकों को जैवनैतिकता और दंत चिकित्सा में इसके अनुप्रयोग की पूरी समझ होनी चाहिए।

जैवनैतिकता के प्रमुख के तौर पर, मुझे राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम के तहत किए गए काम पर यह किताब प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है। दंत चिकित्सा पेशेवरों की अपने मरीज़ों के स्वास्थ्य और सेहत को बढ़ावा देने में अनोखी और महत्वपूर्ण भूमिका होती है।सूचित सहमति, गोपनीयता, और रोगी की स्वायत्तता के प्रति सम्मान ऐसे कुछ नैतिक सिद्धांत हैं जिन्हें दंत चिकित्सा के अभ्यास में बरकरार रखा जाना चाहिए।

इस किताब का उद्देश्य दंत चिकित्सा पद्धति के संदर्भ में उत्पन्न होने वाली नैतिक समस्याओं का व्यापक अवलोकन प्रदान करना है।इसमें मरीज़ों की स्वायत्तता, गोपनीयता, सूचित सहमति, जीवन के अंत में देखभाल और नई तकनीकों के इस्तेमाल जैसे विषय शामिल हैं, इन जटिल नैतिक मुद्दों को हल करने के तरीके के बारे में जागरूकता पैदा करने और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा कई गतिविधियाँ शुरू की गई थीं।

हमें उम्मीद है कि यह पुस्तिका दंत चिकित्सा पेशेवरों के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में काम करेगी, क्योंकि वे अपने मरीज़ों को सर्वोत्तम संभव देखभाल प्रदान करने का प्रयास करते हैं।जैवनैतिकतावादी के तौर पर, हमारा लक्ष्य स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के नैतिक सिद्धांतों को अपने व्यवहार में शामिल करने में मदद करना है और हमारा मानना है कि यह पुस्तिका उसी दिशा में एक कदम का प्रतिनिधित्व करती है।

मैं राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता समिति के सदस्यों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने इस कार्यक्रम में योगदान दिया, साथ ही हमारी संस्था के कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने इसके विकास में सहयोग दिया। हम उम्मीद करते हैं कि यह पुस्तिका आगे चर्चा और चिंतन को प्रोत्साहित करेगी और अंततः रोगियों और दंत पेशेवरों के लिए समान रूप से बेहतर परिणाम देगी।

बोर्ड की तरफ से

डॉ. अक्षय भार्गवडीन

दंत चिकित्सासंतोष
मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय

मैं दंत चिकित्सा के क्षेत्र में नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने में राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई को उनके प्रभावशाली काम के लिए बधाई देता हूँ।अच्छी दंत चिकित्सा उन व्यक्तियों पर निर्भर करती है जो समाज और अपने मरीजों के साथ निष्पक्ष, यानी नैतिक रूप से व्यवहार करने के लिए समर्पित हैं।इस तरह, दंत चिकित्सा में पेशेवर नैतिकता सिखाने का औचित्य यह है कि इच्छुक दंत चिकित्सकों के व्यक्तिगत और पेशेवर विकास को सामाजिक और पेशेवर रूप से जिम्मेदार इंसान बनाया जाए।

मैं नियमित रूप से ऐसे बहुआयामी कार्यक्रम आयोजित करके दंत चिकित्सकों के बीच जैवनैतिकता के मूल मूल्यों को मज़बूत करने में राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई के सदस्यों के लगातार और अडिग प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ।ऐसे और भी कई सफल प्रयासों के लिए मैं टीम को शुभकामनाएं देता हूँ।

डॉ. ज्योति बत्रा

डीन अनुसंधानसंतोष
मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय

''अगर सब एक साथ मिलकर आगे बढ़ रहे हैं, तो सफलता अपना ख्याल खुद रखती है'।मुझे राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता प्रोग्राम, संतोष डेंटल कॉलेज, गाजियाबाद एवं राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई, जैवनैतिकता में अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष और वर्ल्ड मेडिकल एसोसिएशन को बधाई देते हुए बहुत खुशी हो रही है।

मैं इस अवसर का लाभ उठाना चाहती हूँ और इस कार्यक्रम को शानदार बनाने के लिए लगातार काम करने के लिए टीम के हर सदस्य की दिल से सराहना करती हूँ।छात्रों द्वारा नैतिकता में जो मूल्य अपनाए जाते हैं, वे इस बारे में संवेदनशीलता फैलाने में मदद करेंगे।इस कार्यक्रम ने छात्रों के लिए तरह-तरह के आयोजनों और प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा दिखाकर वाहवाही जीतने का बेहतरीन अवसर प्रदान किया है।

पूरी टीम को उनके अच्छे प्रयास के लिए मेरी हार्दिक बधाई और आने वाले सालों में भी अच्छा काम जारी रखने के लिए मैं उनकी सफलता की कामना करती हूँ।

बोर्ड की तरफ से

डॉ. नीरज ग्रोवर
आयोजन अध्यक्ष

मैं राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई को जैवनैतिकता शिक्षा और जागरूकता के क्षेत्र में उनके असाधारण काम के लिए हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ।दंत चिकित्सा के क्षेत्र में नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए आपकी अटूट प्रतिबद्धता सचमुच सराहनीय है।आपके, जैवनैतिकता में अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष और विश्व चिकित्सा संघ के बीच हुए सहयोगात्मक प्रयासों ने बेशक दंत समुदाय पर स्थायी प्रभाव छोड़ा है।संतोष डेंटल कॉलेज और अस्पताल में "दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता" पर हाल ही में हुआ राष्ट्रीय सम्मेलन, आपके समर्पण का एक शानदार उदाहरण है।सम्मेलन के दौरान आयोजित किए जाने वाले कई आकर्षक कार्यक्रमों ने केवल छात्रों की सक्रिय भागीदारी को, बल्कि सीखने और विकास के उत्साहपूर्ण माहौल को भी बढ़ावा दिया।इसके अलावा, सम्मानित डीन से लेकर फैकल्टी, पोस्टग्रेजुएट, इंटर्न और अंडरग्रेजुएट्स तक, पूरे डेंटल कॉलेज समुदाय को संवेदनशील बनाने के आपके निरंतर प्रयास, जैवनैतिकता के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने में आपके प्रभाव को और उजागर करते हैं।मैं आपको और आपकी टीम को इस असाधारण यात्रा के लिए बधाई देता हूँ और मैं जैवनैतिकता के क्षेत्र में निरंतर सकारात्मक प्रभाव को देखने के लिए सचमुच उत्साहित हूँ।

डॉ. निधि गुप्ता
आयोजन सचिव

मैं दंत चिकित्सा जैवनैतिकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम को हार्दिक बधाई देती हूँ।संतोष डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में 19 से 21 अप्रैल तक हुए "दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता" सम्मलेन के दौरान उनके प्रभावशाली काम को शानदार ढंग से प्रदर्शित किया गया था।यह आयोजन आपके द्वारा इस क्षेत्र में लाए गए समर्पण और सकारात्मक प्रभाव का एक जीता जागता उदाहरण है।राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई, जैवनैतिकता में अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष और विश्व चिकित्सा संघ का सहयोग दंत चिकित्सा समुदाय के भीतर नैतिक जागरूकता और उत्कृष्टता की संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण रहा है।डॉ. राजीव आहलूवालिया के कुशल मार्गदर्शन में आयोजन समिति का समर्पण और अथक प्रयास कार्यक्रम के हर पहलू में स्पष्ट दिख रहा था।आगे देखते हुए, आपके समर्पण और कड़ी मेहनत ने भविष्य के प्रयासों के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया है।जैसे-जैसे आप इस यात्रा को जारी रखेंगे, मुझे विश्वास है कि आप दंत चिकित्सा जैवनैतिकता के उद्देश्य को और आगे बढ़ाएंगे और दूसरों को आपके नक्शेकदम पर चलने के लिए प्रेरित करेंगे।मैं टीम के हर सदस्य को हार्दिक आभार और बधाई देती हूँ।दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता को बढ़ावा देने के लिए आपका जुनून, समर्पण और अथक प्रयास वास्तव में सराहनीय हैं।आपके इस उल्लेखनीय सफर का साक्षी बनना सम्मान की बात है और मैं उत्सुकता से भविष्य में आपसे और भी अधिक योगदान की उम्मीद करती हूं।

जैवनैतिकता की अनिवार्यता

दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता में नैतिक विचारों और मार्गदर्शक सिद्धांतों का जटिल जाल शामिल है, जिसका दंत चिकित्सा पेशेवर मरीजों की देखभाल करते समय, अनुसंधान करते समय, और दंत चिकित्सा के क्षेत्र में शैक्षिक प्रयासों में शामिल होने के दौरान सच्ची लगन से पालन करते हैं। यह एक अंत:विषय अनुशासन है जो नैतिक मुद्दों और दुविधाओं की बारीकी से छानबीन करता है, उस जटिल क्षेत्र की गहराई तक जाता है जहाँ दंत चिकित्सा नैतिकता के साथ मिलती है।

इसके मूल में, जैवनैतिकता एक मज़बूत ढांचा प्रदान करता है जिसके माध्यम से दंत चिकित्सक और डेंटल प्रैक्टिशनर नैतिक निर्णय लेने के पेचीदा क्षेत्र में नेविगेट करते हैं, चतुराई से जटिल परिस्थितियों से गुज़रते हैं, जिसमें मरीज़ों की भलाई और अधिकारों के बीच नाज़ुक संतुलन की ज़रूरत होती है।यह दंत पेशेवरों को इलाज के विभिन्न विकल्पों से जुड़े फ़ायदों और जोखिमों को तौलने, मरीज़ों के फैसले का सम्मान करने, मरीज़ों की निजता और गोपनीयता की रक्षा करने, दंत चिकित्सा देखभाल प्रावधान में निष्पक्षता और न्याय का समर्थन करने और पेशेवर आचरण संहिता की पवित्र संहिताओं का कर्तव्यनिष्ठा से पालन करने का अधिकार देता है।

जैवनैतिकता में, कुछ मूलभूत सिद्धांत नैतिक और सहानुभूतिपूर्वक देखभाल प्रदान करने के लिए दंत पेशेवरों की महान खोज में मार्गदर्शन करने वाले प्रकाशस्तंभ के रूप में काम करते हैं:

1. जानकारीयुक्त सहमति:दंत चिकित्सकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मरीज़ों को उनकी मौखिक स्वास्थ्य स्थिति, प्रस्तावित उपचार विकल्प और कार्रवाई के प्रत्येक कोर्स से जुड़ेसंभावित जोखिमों और फायदों के बारे में व्यापक और समझने योग्य जानकारी मिले।इस ज्ञान से मरीज़ों को सशक्त बनाने से वे सावधानीपूर्वक विचार करने और विचार करने के बाद, अपनी दंत चिकित्सा देखभाल के बारे में ख़ुद से निर्णय ले सकते हैं।

2. स्वयं के लिए फैसला लेना:रोगी की स्वायत्तता का सम्मान दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के एक स्तंभ के रूप में खड़ा है।दंत चिकित्सकों का कर्तव्य है कि वे फ़ैसले लेने की प्रक्रिया में मरीज़ों को शामिल करें,ताकि उन्हें अपने इलाज संबंधी फैसले लेने का अधिकार प्राप्त हो।पारदर्शी और व्यापक जानकारी प्रदान करके, सूचित सहमति प्राप्त करके, और इलाज स्वीकार करने या अस्वीकार करने के मरीज़ के अधिकार का सम्मान करके, दंत चिकित्सक अपने स्वयं के लिए फैसला लेने के सार का सम्मान करते हैं।

3. परोपकारिता:दंत चिकित्सकों का नैतिक दायित्व है कि वे अपने मरीज़ों के सर्वोत्तम हित में काम करें, उनके संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए अथक प्रयास करें।यह सिद्धांत मरीज़ की विशिष्ट प्राथमिकताओं,ज़रूरतों और परिस्थितियों पर विचार करते हुए उचित और प्रभावी उपचार प्रदान करने की अनिवार्यता को रेखांकित करता है।

4. ग़ैर-नुक़्सानदेह:नैतिक दंत चिकित्सा पद्धति की खोज में, दंत चिकित्सक "कोई नुकसान नहीं पहुँचाने" का प्रयास करते हैं।अनावश्यक जोखिमों से बचने के लिए विवेकपूर्ण उपाय करके, प्रक्रियाओं के दौरान जटिलताओं को रोकने के लिए सावधानियां लागू करकेऔर मरीजों की सुरक्षा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करके, दंत पेशेवर गैर-नुक़्सानदेह के मूल सिद्धांतों को अपनाते हैं।

5. न्याय:दंत चिकित्सा देखभाल के क्षेत्र में न्याय, चिकित्सकों की नैतिक दिशा का मार्गदर्शन करने वाला एक प्रकाशस्तंभ बन जाता है।दंत चिकित्सा सेवाओं के प्रावधान में निष्पक्षता और समानता बनाए रखने के लिए देखभाल तक समान पहुंच सुनिश्चित करना, असमानताओं को कम करना और नस्ल, जातीयता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति या अक्षमता के आधार परभेदभावपूर्ण पद्धतियों से बचना आवश्यक है।

जैवनैतिकता की अनिवार्यता

6. सत्यता: दंत चिकित्सकों को मरीज़ों के साथ बातचीत में सच्चाई और ईमानदारी की ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है।सत्यता के सिद्धांत का सम्मान करते हुए, वे मरीज़ के मौखिक स्वास्थ्य,इलाज के प्रस्तावित विकल्पों, संभावित जोखिमों और फायदों के बारे में सटीक और पूरी जानकारी देते हैं।यह पारदर्शिता विश्वास को बढ़ावा देती है और मरीज़ों को अच्छी तरह से सोच-समझकर निर्णय लेने में मदद करती है।

7. गोपनीयता: दंत चिकित्सा में मरीज़ की गोपनीयता की पवित्रता सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है।दंत चिकित्सा पेशेवर मरीज़ की निजता और गोपनीयता की सुरक्षा करते हैं,संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा के लिए स्थापित प्रोटोकॉल का पूरी लगन से पालन करते हैं। मरीज़ डेटा का खुलासा सिर्फ़ अधिकृत व्यक्तियों या संस्थाओं तक सीमित होता है, जिसमें मरीज़ की सहमति मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में काम करती है।

8. अनुसंधान नैतिकता: अनुसंधान में लगे दंत चिकित्सा पेशेवर अनुसंधान नैतिकता की सख्त संहिता को बनाए रखते हैं।वे ऐसे सिद्धांतों का पालन करते हैं जो अनुसंधान प्रतिभागियों के अधिकारों और कल्याण की रक्षा करते हैं,जानकारीपूर्ण सहमति प्राप्त करते हैं, निजता और गोपनीयता सुनिश्चित करते हैं और वैज्ञानिक कठोरता और अखंडता के साथ अनुसंधान करते हैं।

9. समानता और पहुंच: समानता और पहुंच का लोकाचार दंत चिकित्सा के नैतिक ताने-बाने के अंदर गहराई तक गूंजता है।इस सिद्धांत को बनाए रखने के लिए निष्पक्षता और दंत चिकित्सा देखभाल तक समान पहुंच के लिए प्रयास करना,भेदभावपूर्ण पद्धतियों को दूर करना और उन अंतरालों को दूर करने का प्रयास करना होगा जो समान मौखिक स्वास्थ्य परिणामों में बाधा डालती हैं।

10. पेशेवर आचरण:

जैवनैतिकता हाइफ़ा में यूनेस्को अध्यक्ष का उद्घाटन

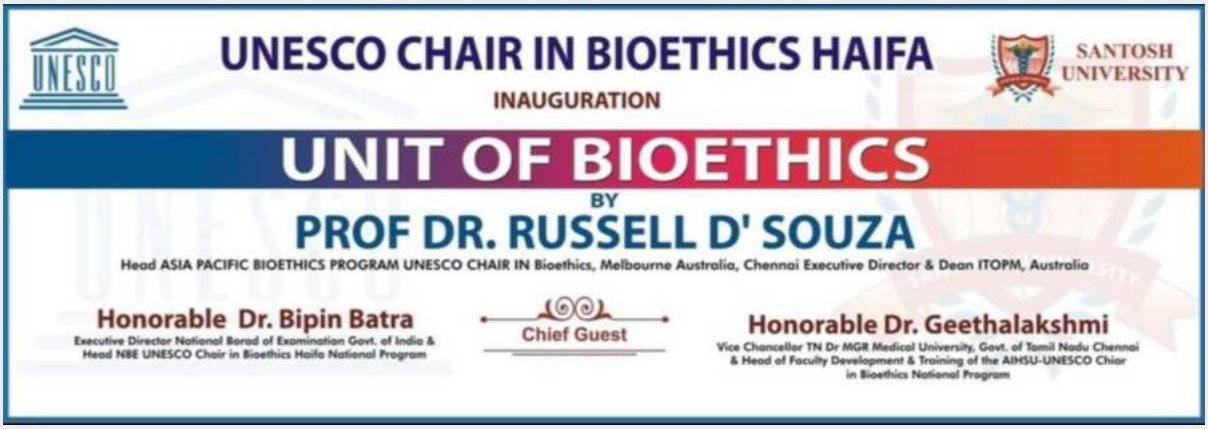

संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय के इतिहास में महत्वपूर्ण हैं,2016 में, हमारी संस्था को देश भर के 350 से अधिक डेंटल कॉलेजों के बीच राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम की अध्यक्षता करने का सम्मान मिला।

शुरू से ही, हमारे विश्वविद्यालय ने एक मज़बूत जैवनैतिक प्रशिक्षण संस्कृति को विकसित करने को प्राथमिकता दी है।2007 में अपनी स्थापना के बाद से, हमने जैवनैतिकता के प्रति लगातार निस्वार्थ और भावुक प्रतिबद्धता दिखाई है।खास बात यह है कि राष्ट्रीय टेलीविज़न पर होने वाली डिबेट में हमारी भागीदारी, ख़ासकर पेशेवर जैवनैतिकता पर ध्यान केंद्रित करती है, जिसने वैश्विक स्तर पर जैवनैतिकता के प्रति हमारे समर्पण और ज़िम्मेदारी को मज़बूत किया है।

भारत में, संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय गर्व से यूनेस्को के 180 देशों में हस्ताक्षर करने वालों में से एक के रूप में खड़ा हुआ,

जो स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के अंदर जैव-नैतिक मूल्यों को लागू करने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता की मिसाल है।

2016 में, एक महत्वपूर्ण उपलब्धि तब मिली जब जैवनैतिकता हाइफ़ा में यूनेस्को अध्यक्ष ने संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई की स्थापना की।इस सहयोग ने जैव-नैतिक मूल्यों और पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए हमारे विश्वविद्यालय के मिशन को और आगे बढ़ाया।

असमानताओं को दूर करने के लिए न केवल सभी देशों में सार्थक सहमति की आवश्यकता होती है, बल्कि अलग-अलग देशों की ओर से अपनी घरेलू नीतियों में साझा मूल्यों को शामिल करने के लिए गहरी प्रतिबद्धता की भी आवश्यकता होती है। संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय ने इस जिम्मेदारी को सबसे आगे रखते हुए यह सुनिश्चित किया कि जैव-नैतिक सिद्धांत हमारी शिक्षा, अनुसंधान और नैदानिक पद्धतियों में गहराई से जुड़े हुए हैं।

Media- NDTV (Annex 1)
Date- 23rd May 2013
Show- Ethics in Medical Advertising

राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम के माध्यम से, हमने दंत चिकित्सा समुदाय के अंदर नैतिक निर्णय लेने और ज़िम्मेदारी से जुडी पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किया है।

हमारी व्यापक प्रशिक्षण और जागरूकता पहलों ने दंत चिकित्सा पेशेवरों को जटिल नैतिक दुविधाओं से निपटने में मदद की है, जिससे करुणा, अखंडता और समानता द्वारा परिभाषित माहौल को बढ़ावा मिला है।

राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम में अपनी भागीदारी से हुई प्रगति और जो प्रभाव हासिल हुआ है, उस पर हमें बहुत गर्व है। यह दंत चिकित्सा के क्षेत्र में एक उज्जवल, अधिक नैतिक भविष्य को आकार देने की हमारी प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है।

मीडिया - एन.डी.टी.वी. (एनेक्स 1) मीडिया - एन.डी.टी.वी. (एनेक्स 1) तारीख - 23 मई 2013 शो - एथिक्स इन मेडिकल एडवरटाइजिंग जब हम इस परिवर्तनकारी अध्याय को पीछे मुड़कर देखते हैं, तो हम आपको इस परिवर्तनकारी अध्याय पर नज़र डालने के लिए आमंत्रित करते हैं, हम आपको संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से जुड़े रहने के लिए आमंत्रित करते हैं। नवाचार को बढ़ावा देने, नैतिक मानकों को बनाए रखने और जैवनैतिकता के क्षेत्र में स्थायी प्रभाव डालने के लिए हमारे इस सफर का अनुसरण करें।

संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय: जहाँ जैवनैतिकता संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय को आकार देती है: जहाँ जैवनैतिकता बेहतर कल की राह को आकार देती है। हमें जैवनैतिकता हाइफ़ा में यूनेस्को अध्यक्ष द्वारा संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय को मिलने वाली मान्यता पर बहुत गर्व है। जैवनैतिकता के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता को स्वीकार करते हुए, हमारे विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई की स्थापना दंत चिकित्सा में नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने के प्रति हमारे समर्पण का प्रमाण है।

संतोष डेंटल कॉलेज में ऑर्थोडॉन्टिक्स विभाग के प्रोफेसर और प्रमुख डॉ राजीव आहलूवालिया के सम्मानित नेतृत्व में, हम उन्हें राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम के सचिव के रूप में नियुक्त करके सम्मानित महसूस कर रहे हैं। उनकी विशेषज्ञता और जुनून ने हमारी संस्था के अंदर जैवनैतिकता के क्षेत्र को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

27 अप्रैल 2016 को, संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय में जैवनैतिकता इकाई के उद्घाटन को एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में चिह्नित किया गया। इस महत्वपूर्ण आयोजन को (एनेक्स 2) की सुविधा से संभव बनाया गया था, और इसने जैवनैतिकता की संस्कृति को बढ़ावा देने की दिशा में हमारी यात्रा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में काम किया है।

पिछले पांच सालों में, हमने विश्व जैवनैतिकता दिवस के सप्ताह के दौरान जैवनैतिकता सप्ताह मनाने की अवधारणा को अपनाया है। इस अभिनव दृष्टिकोण ने हमें छात्रों को जैवनैतिकता के सिद्धांतों को प्रभावी ढंग से सिखाने और उनमें शामिल करने में मदद की है। रंगोली, फ़ेस पेंटिंग, नुक्कड़ नाटक, डिबेट और पोस्टर प्रतियोगिताओं जैसे विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से, हमारे सभी छात्र जैव-नैतिक मूल्यों के बारे में अपनी समझ को बढ़ाते हुए सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। जैवनैतिकता को अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में शामिल करने की हमारी प्रतिबद्धता के अनुरूप, हमने PhD छात्रों, पोस्टग्रेजुएट और अंडरग्रेजुएट छात्रों के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम संचालित किए हैं।

जैवनैतिकता को पाठ्यक्रम में शामिल करके, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे भविष्य के स्वास्थ्य पेशेवरों को स्वास्थ्य देखभाल के जटिल परिदृश्य को नेविगेट करने के लिए आवश्यक ज्ञान और नैतिक ढांचे से सुसज्जित किया जाए।

हम अपनी शिक्षा, अनुसंधान और नैदानिक पद्धतियों में अखंडता और करुणा के उच्चतम मानकों को कायम रखते हुए जैवनैतिकता के लिए समर्थन देना जारी रखते हैं।

इस परिवर्तनकारी यात्रा में हमारे साथ शामिल हों, जब हम एक ऐसे भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं जहाँ जैव-नैतिक मूल्य स्वास्थ्य देखभाल के हर पहलू का मार्गदर्शन करते हैं। साथ मिलकर, हम जैवनैतिकता के क्षेत्र में स्थायी प्रभाव डाल सकते हैं, एक ऐसी दुनिया का निर्माण कर सकते हैं जो सभी की भलाई और नैतिक उपचार को प्राथमिकता देती है।

संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय में, जैवनैतिकता सिर्फ एक अवधारणा नहीं है, बल्कि जीवन का एक तरीका है।

הקתדרה לביו־אתיקה של אונסקו
UNESCO Chair in Bioethics
המרכז הבינלאומי לבריאות, משפט ואתיקה, הפקולטה למשפטים, אוניברסיטת חיפה
The International Center for Health, Law and Ethics, University of Haifa
ראש הקתדרה: פרופ' אמנון כרמי
Chairholder: Prof. Amnon Carmi

The UNESCO Chair in Bioethics Haifa

Confirms that

Dr Rajiv Ahluwalia

Vice-Dean, Faculty of Dental Sciences
Santosh Deemed to be University

Has been appointed

Head, National Dental Bioethics Programme

Of the International Network
of the UNESCO Chair in Bioethics
On the 10th February 2020

to fulfil the objectives of stimulating Teaching, Training and Research in Bioethics in Dental and Health Science Education.

Amnon Carmi

Prof. Amnon Carmi,
Head, UNESCO Chair in Bioethics
University of Haifa

Prof Russell D'Souza MD
Head Asia Pacific Division
UNESCO Chair in Bioethics

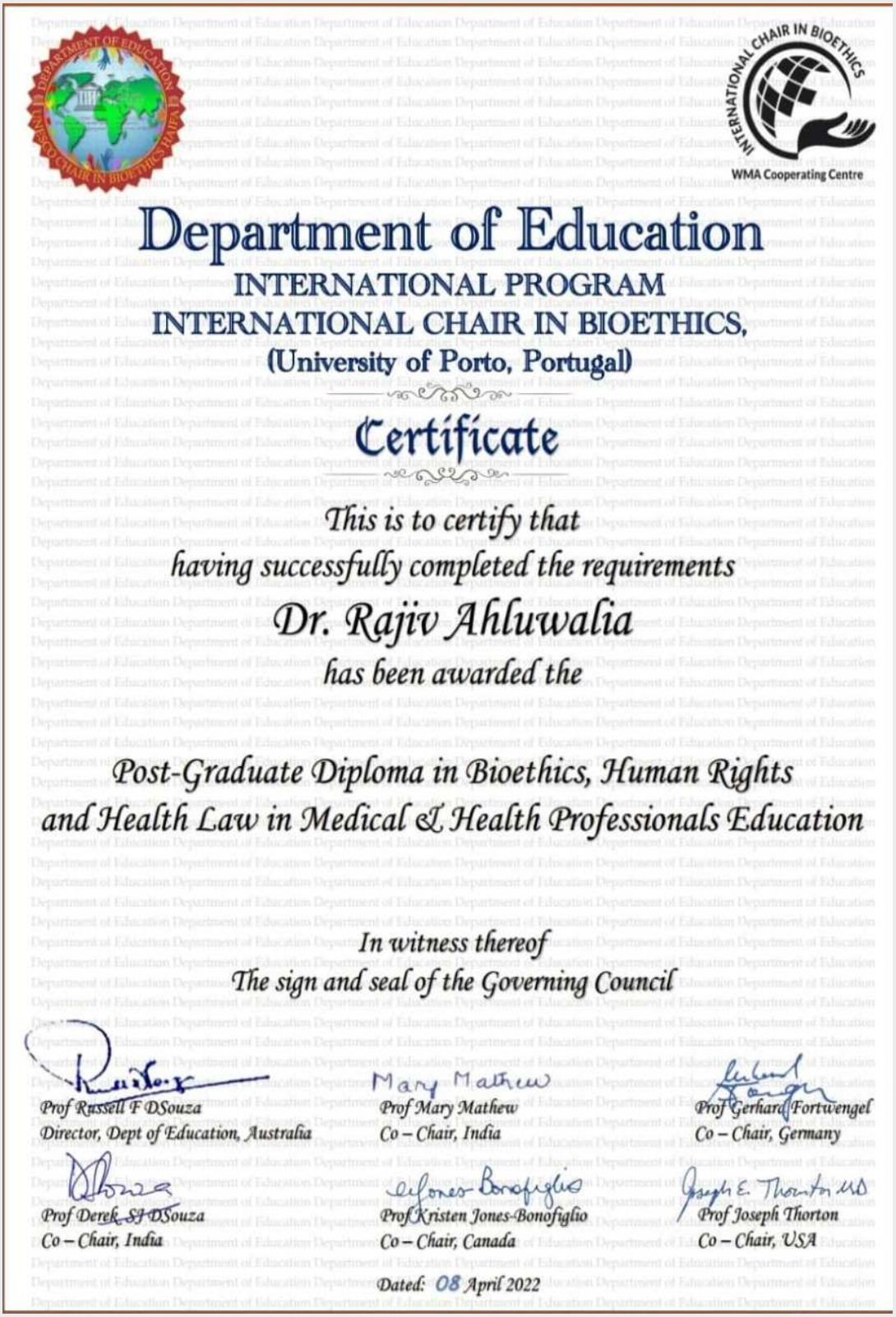

Department of Education
INTERNATIONAL PROGRAM
INTERNATIONAL CHAIR IN BIOETHICS,
(University of Porto, Portugal)

Certificate

This is to certify that
having successfully completed the requirements
Dr. Rajiv Ahluwalia
has been awarded the
Post-Graduate Diploma in Bioethics, Human Rights
and Health Law in Medical & Health Professionals Education

In witness thereof
The sign and seal of the Governing Council

Prof Russell F DSouza
Director, Dept of Education, Australia

Prof Mary Mathew
Co – Chair, India

Prof Gerhard Fortwengel
Co – Chair, Germany

Prof Derek SJ DSouza
Co – Chair, India

Prof Kristen Jones-Bonofiglio
Co – Chair, Canada

Prof Joseph Thorton
Co – Chair, USA

Dated: 08 April 2022

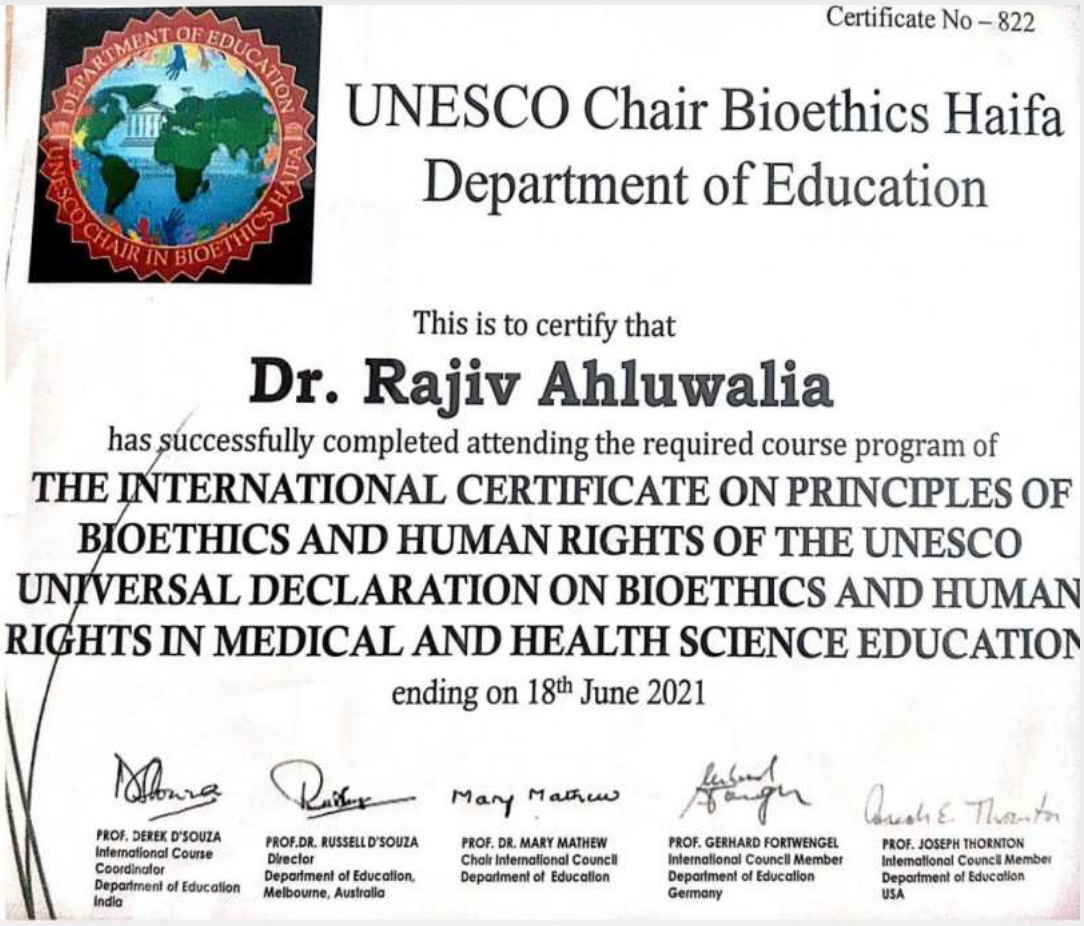

Certificate No – 822

UNESCO Chair Bioethics Haifa
Department of Education

This is to certify that

Dr. Rajiv Ahluwalia

has successfully completed attending the required course program of

THE INTERNATIONAL CERTIFICATE ON PRINCIPLES OF BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS OF THE UNESCO UNIVERSAL DECLARATION ON BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS IN MEDICAL AND HEALTH SCIENCE EDUCATION

ending on 18th June 2021

PROF. DEREK D'SOUZA
International Course Coordinator
Department of Education
India

PROF.DR. RUSSELL D'SOUZA
Director
Department of Education,
Melbourne, Australia

PROF. DR. MARY MATHEW
Chair International Council
Department of Education

PROF. GERHARD FORTWENGEL
International Council Member
Department of Education
Germany

PROF. JOSEPH THORNTON
International Council Member
Department of Education
USA

राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम'16

संतोष विश्वविद्यालय, गाजियाबाद में संतोष डेंटल कॉलेज, 14 नवंबर, 2016 को एक महत्वपूर्ण अवसर का साक्षी बना, क्योंकि राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई यूनेस्को-हाइफ़ा का आधिकारिक उद्घाटन हुआ।इस भव्य आयोजन में हाइफ़ा में जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष डॉ. रसल डी'सूज़ा और हाइफ़ा में जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष के एशिया पैसिफ़िक डिवीज़न के सम्मानित प्रोफ़ेसर प्रमुख की उपस्थिति रही।इकाई की स्थापना के लिए जिम्मेदार समिति का गठन जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष- हाइफ़ा के तत्वावधान में किया गया था।

इस कार्यक्रम में कई गणमान्य व्यक्ति शामिल थे, जिनमें एम.डी. संतोष विश्वविद्यालय, डॉ. शर्मिला आनंद, वाइस चांसलर डॉ. वाई. त्रिपाठी, संतोष डेंटल कॉलेज के डीन डॉ. मनोज गोयल, संतोष डेंटल कॉलेज के वाइस डीन, डॉ. राजीव आहलूवालिया (राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता समिति के सचिव), साथ ही संबंधित विभागों के प्रमुख, संकाय सदस्य, स्नातकोत्तर और स्नातक छात्र शामिल थे।

उद्घाटन समारोह बहुत सफल रहा, जिसका मुख्य आकर्षण संतोष डेंटल कॉलेज के प्रतिभाशाली छात्रों द्वारा किया गया फ़्लैश मॉब प्रदर्शन रहा।फ़्लैश मॉब, एक ध्यानपूर्वक कोरियोग्राफ किया हुआ और सिंक्रनाइज़ किया गया डांस रूटीन है, जिसने सभी को हैरान कर दिया।

अपनी ऊर्जावान प्रयासों, समन्वित संरचनाओं और संक्रामक उत्साह के साथ, छात्रों ने माहौल को खुशी और उत्सव के एक इलेक्ट्रिक वातावरण में बदल दिया।फ़्लैश मॉब संतोष डेंटल कॉलेज के छात्रों की रचनात्मकता, टीम वर्क और प्रतिभा का सच्चा प्रमाण था।फ़्लैश मॉब का प्रदर्शन न केवल मनोरंजन का एक स्रोत था, बल्कि यह एक गहरे उद्देश्य को भी पूरा करता था।इसने प्रभावी रूप से एकता, सद्भाव और दंत चिकित्सा के क्षेत्र में नैतिक पद्धतियों के महत्व का संदेश दिया।अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में नृत्य का उपयोग करके, छात्रों ने दर्शकों को आकर्षित करने और एक यादगार अनुभव बनाने में कामयाबी हासिल की, जिसमें राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई यूनेस्को-हाइफ़ा के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

Video Made by Students of Santosh Deemed to be University (https://www.youtube.com/watch?v=ro1760fzBKA&t=116s)

फ़्लैश मॉब का असर आयोजन की सीमाओं से परे तक फैला हुआ था।फ़्लैश मॉब के प्रदर्शन का एक वीडियो यूट्यूब पर अपलोड किया गया था, जहाँ इसने तेज़ी से ध्यान आकर्षित किया और इसे कई बार देखा गया।

वीडियो में छात्रों का उत्साह और प्रतिभा दिखाई दी, जिसने दुनिया भर के दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया था।यह दंत चिकित्सा के इच्छुक छात्रों और पेशेवरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया, साथ ही संतोष डेंटल कॉलेज के जीवंत और गतिशील समुदाय का प्रतीक बन गया। यूट्यूब पर फ्लैश मॉब वीडियो को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया ने राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई यूनेस्को-हाइफ़ा के उद्घाटन की पहुंच और प्रभाव को और बढ़ा दिया।इसने रचनात्मकता, नवाचार और दंत चिकित्सा पेशे में नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए कॉलेज की प्रतिबद्धता का एक शक्तिशाली प्रमाण साबित किया।फ़्लैश मॉब और उसके बाद हुए उद्घाटन समारोह की सफलता ने प्रतिभा, महत्वाकांक्षा और समर्पण के केंद्र के रूप में संतोष डेंटल कॉलेज की प्रतिष्ठा को और मजबूत किया।

यह कार्यक्रम एक ऐसा वातावरण तैयार करने के लिए कॉलेज की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है, जो न केवल अकादमिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करता है, बल्कि ऐसे संपन्न व्यक्तियों के विकास को भी प्रोत्साहित करता है, जो अपने भविष्य के दंत चिकित्सा करियर में नैतिक विचारों के महत्व को समझते हैं। यूनेस्को के सहयोग और छात्रों, शिक्षकों और सम्मानित मेहमानों द्वारा दिखाए गए उत्साह के साथ, संतोष डेंटल कॉलेज में राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई यूनेस्को-हाइफ़ा दंत चिकित्सा शिक्षा और नैतिक पद्धतियों के क्षेत्र में उत्कृष्टता का प्रकाशस्तम्भ बनने के लिए तैयार है।यूट्यूब के लोकप्रिय वीडियो में कैद किया गया फ़्लैश मॉब का प्रदर्शन दर्शकों को प्रेरित और आकर्षित करता रहेगा, जैवनैतिकता का संदेश और संतोष डेंटल कॉलेज की उल्लेखनीय उपलब्धियों को दूर-दूर तक फैलाएगा।

क्षेत्रीय प्रभाव

“द एथिकल गैप” @शारदा विश्वविद्यालय

शारदा विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ डेंटल साइंसेज ने 22 मई, 2020 को एक विचारोत्तेजक वेबिनार का आयोजन किया, जिसमें “द एथिकल गैप” के दिलचस्प विषय पर चर्चा की गई।इस आकर्षक कार्यक्रम का उद्देश्य अभूतपूर्व कोविड-19 महामारी के दौरान दंत चिकित्सा पेशे के सामने आने वाली नैतिक दुविधाओं का पता लगाते हुए मूलभूत जैव-नैतिक सिद्धांतों पर प्रकाश डालना था।

डॉ. राजीव आहलूवालिया, संतोष डेंटल कॉलेज, संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय, गाज़ियाबाद के वाइस डीन और जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम के प्रमुख, सम्मानित वक्ता के रूप में इस अवसर पर उपस्थित थे।इस क्षेत्र में अपने विशाल ज्ञान और विशेषज्ञता के साथ, डॉ. आहलूवालिया ने बुनियादी जैव-नैतिक सिद्धांतों का एक गहन अवलोकन प्रदान किया, जिसमें दंत चिकित्सा पेशे में उनके महत्व पर ज़ोर दिया गया।

स्कूल ऑफ़ डेंटल साइंसेज के डीन डॉ. एम. सिद्धार्थ ने इस कार्यक्रम का कुशलता से समन्वय किया था।उनके मार्गदर्शन में, वेबिनार ने उपस्थित लोगों को जैवनैतिकता के मूल सिद्धांतों से परिचित कराने और वैश्विक महामारी के बीच दंत चिकित्सा में आई नैतिक दुविधाओं पर चर्चा शुरू करने के अपने उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया।

SEA @SDS के निदेशक, डॉ. सुखदीप सिंह ने कुशलता से वेबिनार का संचालन किया

यह सुनिश्चित करते हुए कि चर्चाएं केंद्रित और फलदायी बनी रहें। उनके समझदारी भरे इस मार्गदर्शन ने इस अभूतपूर्व समय में दंत चिकित्सकों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक चुनौतियों के बारे में व्यापक समझ प्रदान की।

वेबिनार का शेड्यूल:
विषय: द एथिकल गैप
दिनांक: 22 मई 2020
समय: शाम 4:00 बजे से 5:00 बजे तक

इस वेबिनार ने दंत चिकित्सा पेशेवरों, अनुसंधानकर्ताओं और छात्रों को कोविड-19 महामारी के दौरान अपने अभ्यास के नैतिक आयामों का पता लगाने के लिए एक मंच प्रदान किया।दंत चिकित्सा से संबंधित जैव-नैतिक दुविधाओं को दूर करके, इस कार्यक्रम का उद्देश्य नैतिक अंतर को दूर करना और दंत समुदाय के भीतर नैतिक जिम्मेदारियों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की गहरी समझ को बढ़ावा देना था।

संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय दंत चिकित्सा पेशेवरों के बीच बौद्धिक विकास और नैतिक जागरूकता को बढ़ावा देने वाले ऐसे कार्यक्रमों को आयोजित करने में गर्व महसूस करता है।“द एथिकल गैप” पर वेबिनार उनकी अंदरूनी पहलों की श्रृंखला के लिए एक और महत्वपूर्ण परिवर्धन था, जो दंत चिकित्सा के क्षेत्र में ज्ञान साझा करने और महत्वपूर्ण सोच के लिए एक मंच प्रदान करता था।

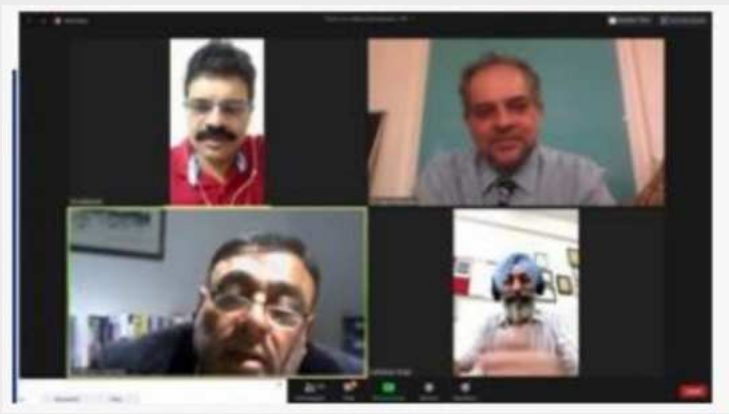

जैवनैतिकता दिवस

14 जुलाई, 2022 को संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय में जैवनैतिकता के छात्र विंग ने अपने बहुप्रतीक्षित जैवनैतिकता दिवस के साथ चिकित्सा समुदाय में तहलका मचा दिया।चिकित्सा और दंत चिकित्सा छात्रों के लिए समान रूप से खुले, इस सम्मेलन में 220 से अधिक उत्साही प्रतिभागियों ने भाग लिया, जो चिकित्सा में नैतिक पद्धतियों के बारे में ज्ञान हासिल करने के लिए उत्सुक थे।

मुख्य वक्ता ने जैवनैतिकता की अंतर्राष्ट्रीय इकाई में शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ. रसल डी'सूज़ा का सम्मान किया, जो ऑस्ट्रेलिया से जूम मीटिंग के माध्यम से दर्शकों से जुडी थी । डॉ. डी'सूज़ा ने प्रयोगशाला चिकित्सा में आने वाली नैतिक चुनौतियों का कुशलता से समाधान किया, छात्रों को अपने पेशेवर जीवन में नैतिक सिद्धांतों को बनाए रखने के महत्व के बारे में बताया।

रिसर्च की डीन और जैवनैतिकता इकाई की प्रमुख, डॉ. ज्योति बत्रा ने मंच पर एक आकर्षक भाषण दिया, जिसमें मेडिसिन में करियर बनाने वाले छात्रों के दैनिक जीवन में जैवनैतिकता के परिचय, महत्व और प्रगति पर प्रकाश डाला गया।डॉ. बत्रा के शब्द गहराई से गूंजते रहे, जिससे उपस्थित लोगों को अपने चुने हुए पेशे के नैतिक आयामों पर विचार करने के लिए प्रेरणा मिली।

उद्घाटन समारोह, जो पूरी तरह से बिना किसी गड़बड़ी के ऑनलाइन फ़ॉर्मेट में आयोजित किया गया था, उसके बाद एम्स, नई दिल्ली में लेबोरेटरी मेडिसिन विभाग के अतिरिक्त प्रोफ़ेसर डॉ. सुदीप कुमार दत्ता ने एक दिलचस्प प्रस्तुति दी।'प्रयोगशाला चिकित्सा में जैवनैतिकता' शीर्षक वाली डॉ. दत्ता की शानदार प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिससे उन्हें इस क्षेत्र में नैतिक प्रभावों की व्यापक समझ मिली।

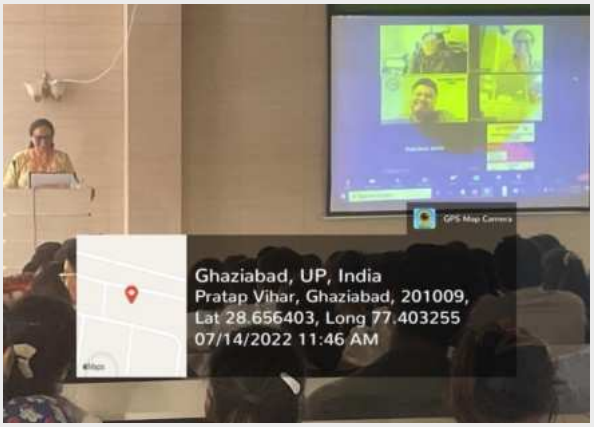

जैवनैतिकता दिवस

डेंटल साइंसेज के वाइस डीन, डॉ. राजीव आहलूवालिया ने दवा और जीवन विज्ञान में उत्पन्न होने वाले नैतिक मुद्दों को हल करने के महत्व पर ज़ोर देने के लिए मंच का सहारा लिया। जीवंत चर्चाओं में तल्लीन, दर्शकों ने विभिन्न परिदृश्यों की खोज में सक्रिय रूप से भाग लिया, जो उनकी नैतिक संवेदनाओं को चुनौती देते थे।

सम्मेलन का समापन एक शानदार सम्मान समारोह में हुआ, जहाँ सम्मानित अतिथि वक्ताओं, डॉ. सुदीप दत्ता, डॉ. राजीव आहलूवालिया, और पथप्रदर्शक डॉ. ज्योति बत्रा की प्रशंसा के प्रतीक के रूप में स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। जैवनैतिकता इकाई की सचिव डॉ चेतना अरोड़ा के साथ-साथ संकाय सलाहकार बोर्ड के सदस्य डॉ कनिका भल्ला और श्री गौरव श्रीवास्तव को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।छात्र सलाहकार बोर्ड के सदस्य क्षितिज मल्होत्रा, रोनिता डे, अरजीत बंसल और भावना को भी उनके बहुमूल्य योगदान के लिए प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।इसके अलावा, छात्र विंग के प्रमुख और सचिव, बैच के प्रतिनिधियों और कार्यकारी सदस्यों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

जैवनैतिकता के छात्र विंग के सचिव सार्थक गर्ग द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। यह स्पष्ट था कि उपस्थित छात्रों ने नैतिकता के बारे में बहुत ज्ञान और समझ हासिल की थी, जिसे वे अपने इसे अपने दैनिक जीवन में अपनाएंगे।

कुल मिलाकर, सम्मेलन एक शानदार सफलता साबित हुई, जिससे उपस्थित लोगों में जैवनैतिकता के सिद्धांतों की गहराई से सराहना हुई।संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय, चिकित्सा समुदाय में नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता के प्रमाण के तौर पर इस आयोजन पर गर्व से विचार कर सकता है। जब छात्र अपनी पेशेवर यात्रा शुरू करेंगे, तो हम उम्मीद करते हैं कि वे इस ज्ञानवर्धक सम्मेलन के दौरान सीखे गए सबक को शामिल करेंगे, जिसमें नैतिकता को अपने भविष्य के प्रयासों में मूल रूप से शामिल किया जाएगा।

विश्व जैवनैतिकता दिवस

स्वास्थ्य देखभाल में नैतिक प्रथाओं पर एक चिंतन

19 अक्टूबर 2022 को, कॉलेज ने बड़े उत्साह और कई आकर्षक गतिविधियों के साथ विश्व विश्व जैवनैतिकता दिवस मनाया। इस कार्यक्रम ने छात्रों और शिक्षकों के लिए स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में महत्वपूर्ण नैतिक विचारों का पता लगाने और उन पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में काम किया। यह दिवस जानकारीपूर्ण प्रतियोगिताओं, ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियों और नैतिक मूल्यों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों से भरा हुआ था।

आयोजन की शुरुआत "सरोगेटेड मदरहुड - बून या बैन" विषय पर एक विचारोत्तेजक वाद-विवाद प्रतियोगिता के साथ हुई। चार-चार के दो समूहों में बांटे गए आठ प्रतिभागियों ने इस प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में जोश के साथ अपने तर्क पेश किए। गहरी पहुँच वाली इस डिबेट ने सरोगेसी से जुड़ी जटिलताओं और नैतिक दुविधाओं पर प्रकाश डाला, जिससे दर्शकों को इस विषय की गहरी समझ मिली।

डिबेट के बाद, "जैवनैतिकता के सिद्धांत" पर एक उत्तेजक प्रश्नोत्तरी ने 20 से ज़्यादा प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित किया। 25 मिनट की समय सीमा के साथ, प्रतिभागियों ने स्वास्थ्य देखभाल में नैतिक निर्णय लेने में मार्गदर्शन करने वाले मूलभूत सिद्धांतों के बारे में अपनी जानकारी और समझ दिखाई। इस प्रश्नोत्तरी ने न केवल उनके ज्ञान का परीक्षण किया, बल्कि जैव-नैतिक सिद्धांतों की और खोज को भी प्रोत्साहित किया।

उस दिन का एक मुख्य आकर्षण पोस्टर प्रस्तुतीकरण था, जहाँ प्रतिभागियों ने जैवनैतिकता से संबंधित अपने अनुसंधान और विचारों को रचनात्मक रूप से प्रदर्शित किया।

हर प्रतिभागी को अपने पोस्टर के बारे में जजों को समझाने का अवसर मिला, जिसमें जैवनैतिक विषयों की एक श्रृंखला के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी गई।पोस्टर प्रस्तुति ने स्वास्थ्य देखभाल में नैतिक मामलों पर जागरूकता बढ़ाने और चर्चाओं को बढ़ावा देने के लिए प्रतिभागियों की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया।

यह कार्यक्रम क्लिनिकल साइकोलॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष और प्रोफ़ेसर, डॉ. रानी श्रीवास्तव के मुख्य भाषण के साथ जारी रहा।डॉ. श्रीवास्तव की विशेषज्ञता और अनुभव ने बहुत महत्व दिया क्योंकि उन्होंने "सामाजिक उत्तरदायित्व और स्वास्थ्य" पर एक शक्तिशाली प्रस्तुति दी।

विश्व जैवनैतिकता दिवस

उनकी बातचीत में स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के अंदर सामाजिक ज़िम्मेदारी को बढ़ावा देने में नैतिकता की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया गया, जिसमें दर्शकों से अपने पेशेवर प्रयासों में नैतिक विचारों को प्राथमिकता देने का आग्रह किया गया।

कार्यवाही में रचनात्मकता का एक तत्व जोड़ते हुए, इस कार्यक्रम में एम.बी.बी.एस. और बी.डी.एस. छात्रों द्वारा तैयार और प्रस्तुत की गई शैक्षिक व्यंग्य रचना दिखाई गई। यह व्यंग्य रचना उन नैतिक मूल्यों और आचरण की याद दिलाती है जिन्हें नैदानिक अभ्यास में बरकरार रखा जाना चाहिए।आकर्षक प्रदर्शनों के माध्यम से, छात्रों ने करुणा, मरीज़ के स्वयं के फैसले और सूचित सहमति के महत्व पर प्रकाश डाला, जिससे दर्शकों पर एक स्थायी प्रभाव पड़ा।

जैवनैतिकता से जुड़े नेतृत्व और संकायसदस्यों को पौधा भेंट किए जाने के साथ ही पर्यावरण चेतना के भाव के साथ इस दिवस का समापन हुआ। यह प्रतीकात्मक कृत्य नैतिक पद्धतियों और व्यक्तियों और पर्यावरण दोनों की भलाई के बीच के अंतर-संबंध की याद दिलाता है।

विश्व जैवनैतिकता दिवस समारोह ने छात्रों, शिक्षकों और पेशेवरों को एक साथ लाकर स्वास्थ्य देखभाल के नैतिक आयामों का पता लगाया।इस कार्यक्रम ने बौद्धिक चर्चाओं को बढ़ावा दिया, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा दिया और उपस्थित लोगों में ज़िम्मेदारी की भावना पैदा की।इसने नैतिक पद्धतियों के प्रति कॉलेज की प्रतिबद्धता और स्वास्थ्य देखभाल में जैवनैतिकता की उन्नति का प्रमाण दिया।

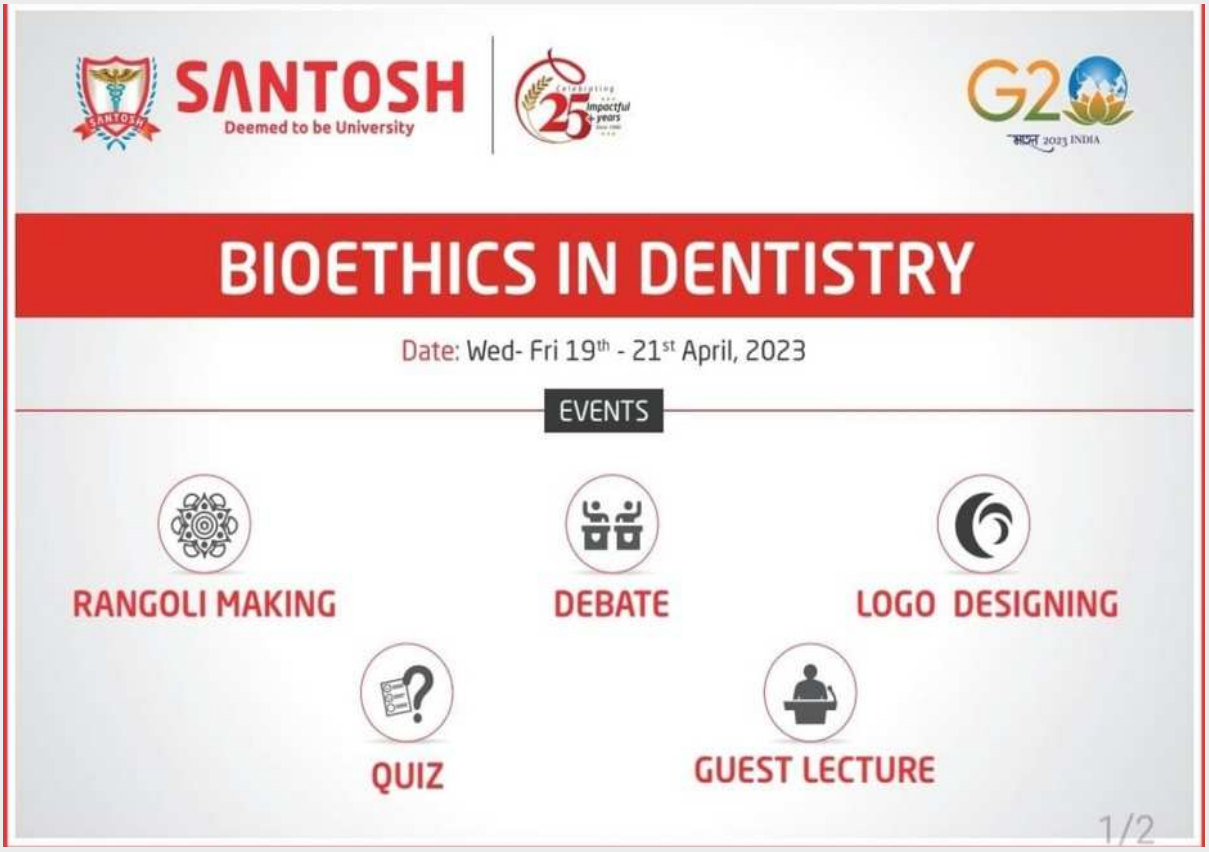

SANTOSH
Deemed to be University
BIOETHICS IN DENTISTRY
Date: Wed- Fri 19th - 21st April, 2023
EVENTS
RANGOLI MAKING
DEBATE
LOGO DESIGNING
QUIZ
GUEST LECTURE
1/2

वह आयोजन जिसने हमारे प्रतिष्ठित कॉलेज के प्रतिभाशाली दिमागों, सबसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों और रचनात्मक आत्माओं कोएक साथ लाया। इस असाधारण अवसर ने नैतिकता, दंत चिकित्सा और नवाचार के अंतर्संबंध का जश्न मनाया, जिससे व्यावहारिक चर्चाओं, रोमांचक प्रतियोगिताओं और विस्मयकारी कलात्मक प्रदर्शनों का मार्ग प्रशस्त हुआ। सम्मानित सलाहकारों के मार्गदर्शनऔर हमारे छात्रों की उत्साहपूर्ण भागीदारी के साथ, इस आयोजन ने हमारे कॉलेज के प्रतिभाशाली दिमागों और प्रतिभाओं को प्रदर्शित किया।

क्विज़ प्रतियोगिता ने ज्ञान और कौशल की गहन लड़ाई के लिए मंच तैयार किया।सात टीमों के प्रतिभागियों नेअपने कौशल का प्रदर्शन किया, "स्पिन द व्हील" और "बाउल ऑफ़ बोनस" जैसे चुनौतीपूर्ण राउंड में प्रतिस्पर्धा की,जिससे दर्शक बहुत उत्साहित हो गए।

"बुद्धिजीवियों की अंतिम लड़ाई" में, वाद-विवाद प्रतियोगिता में तेरह प्रतिभागियों ने जोशीले तर्क दिए, जिन्होंने विभिन्न विषयों पर अपने पक्ष का अर्थपूर्ण ढंग से बचाव किया। फाइनलिस्ट ने अपने अनोखे नजरिए और आलोचनात्मक सोच क्षमताओं से जजों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

लोगो डिजाइनिंग प्रतियोगिता ने असाधारण रचनात्मकता सामने आई, क्योंकि अलग-अलग पाठ्यक्रमों में प्रतिभागियों ने 33 आश्चर्यजनक प्रविष्टियां प्रस्तुत कीं।

रंगोली बनाने की प्रतियोगिता ने कॉरिडोर को एक जीवंत कैनवास में बदल दिया, जो हमारे छात्रों की कलात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करता है।

मुख्य कार्यक्रम, जिसे डॉ. निधि गुप्ता ने होस्ट किया था, की शुरुआत डीन रिसर्च, डॉ. ज्योति बत्रा द्वारा जैवनैतिकता में अनुसंधान पर एक शक्तिशाली संदेश और एक प्रेरक व्याख्यान के साथ हुई।

वाइस चांसलर डॉ. तृप्ता भगत और डीन डेंटल डॉ. अक्षय भार्गव सहित सम्मानित अतिथियों ने अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाई, इस आयोजन में ज्ञान और जानकारी जोड़ी। दीप प्रज्वलन समारोह में देवी सरस्वती के आशीर्वाद का आह्वान किया गया, जो ज्ञान की प्राप्ति का प्रतीक है।

कॉलेज मैगज़ीन के न्यूज़लेटर के उद्घाटन समारोह और फ़ैशन सोसाइटी "इनायत" के लॉन्च ने खुशी और जश्न के पल जोड़ दिए, जिससे यह आयोजन और शानदार हो गया।

क्विज प्रतियोगिता

पूरी सोच के साथ, क्विज़ प्रतियोगिता ने हर किसी को अपनी सीट पर चिपके रहने के लिए मजबूर कर दिया!डॉ. कनिका भल्ला और डॉ. अरुणा नौटियाल के मार्गदर्शन में, छात्रों ने दो राउंड की कड़ी प्रतियोगिता में मुकाबला किया।

19 अप्रैल 23 को, प्रारंभिक राउंड में 'सात' टीमों ने प्रतिस्पर्धा की, जहाँ प्रतिभागियों को अपने ज्ञान और कौशल का प्रदर्शन करने के साथ-साथ नई चीज़ें सीखने के लिए एक बेहतरीन मंच मिला, लेकिन 21 अप्रैल 23 को आयोजित ग्रैंड फिनाले में जाने के लिए केवल 'तीन' को चुना गया। प्रतियोगिता बहुत कड़ी थी, जिसमें "स्पिन द व्हील," "बाउल ऑफ़ बोनस," और "जज़ वर्डिक्ट" जैसे चुनौतीपूर्ण राउंड थे।

इस आयोजन में 200 से अधिक उत्साही छात्रों ने भाग लिया, जिन्होंने प्रतिस्पर्धी टीमों की हौसला अफजाई की और इलेक्ट्रिक माहौल को तरोताजा कर दिया।और जब प्रतियोगिता ख़त्म हुई, तो पृथु शर्मा, डी.अनिरुद्ध और भावना मिश्रा विजयी हुए और अपने साथ सुयोग्य प्रमाणपत्र लेकर घर गए।

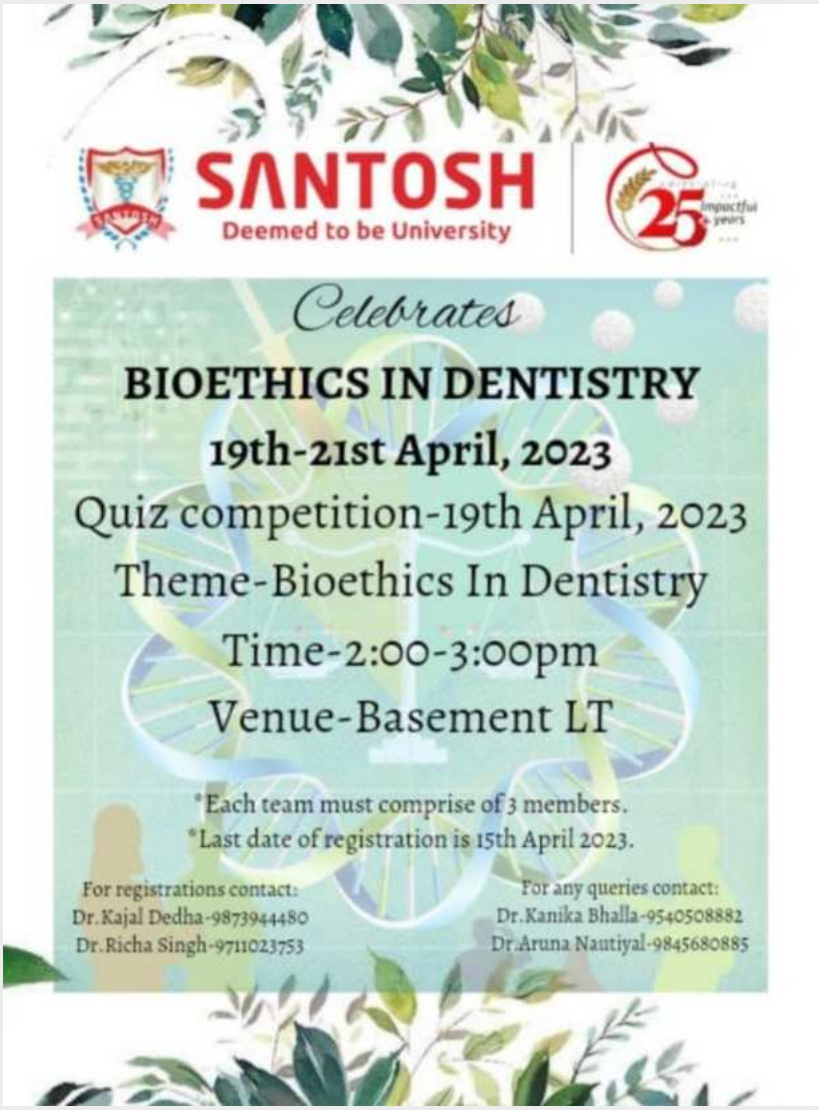

क्विज प्रतियोगिता

SANTOSH
BIOETHICS IN DENTISTRY
GPS Map Camera

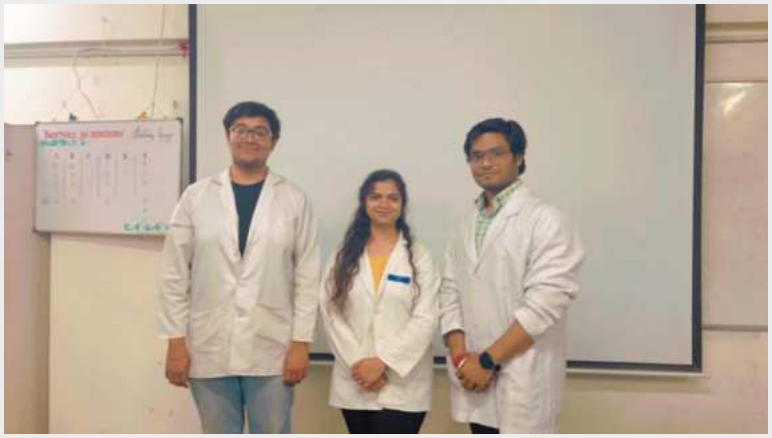

EVENTS
LOGO DESIGNING

BIOETHICS IN DENTISTRY

SANTOSH
BIOETHICS IN DENTISTRY

वाद-विवाद प्रतियोगिताजहाँ

"बुद्धिजीवियों की अंतिम लड़ाई" का प्रारंभिक राउंड 20 अप्रैल 23 को डॉ. अमित गर्ग, डॉ. चेतना और डॉ. सृष्टि अग्रवाल की सलाह पर आयोजित किया गया था, जिसमें 'तेरह' प्रतिभागी शामिल थे, उन्हें प्रस्ताव के पक्ष में या उसके खिलाफ बोलने के लिए कई तरह के टॉपिक्स दिए गए थे।

प्रतिभागियों को कई मानदंडों के आधार पर आंका गया, जिसमें उनके तर्कों की प्रासंगिकता और प्रभावशीलता,उनके अनोखे दृष्टिकोण और अपने पक्ष का बचाव करने की उनकी क्षमता शामिल है। तेरह में से केवल चार ही अंतिम राउंड में जगह बना पाए, जो 21 अप्रैल, 2023 को आयोजित किया गया था।

चार फाइनलिस्ट को दो समूह में बांटा गया था और हर ग्रुप को पक्ष और विपक्ष में बहस करने के लिए एक विषय दिया गया था।प्रतियोगिता बहुत कड़ी थी, और विजेता का निर्धारण करने के लिए जज, डॉ. पुनीत कुमार, डॉ. राजीव कुमार गुप्ता, डॉ. प्रियंका अग्रवाल और डॉ. निशांत गुप्ता ने अपना काम बखूबी निभाया।

एक गहन प्रतियोगिता के बाद, वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की गई, और यह ताज किसी और को नहीं, बल्कि बी.डी.एस. छात्रों, "सिया सक्सेना" और "लाभांशी" को मिला। इस प्रतियोगिता ने छात्रों को अपने विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोच कौशल को निखारने के साथ-साथ अपनी सार्वजनिक बोलने की क्षमताओं को प्रदर्शित करने का एक असाधारण अवसर प्रदान किया।

वाद-विवाद प्रतियोगिताजहाँ

लोगो बनाना

19 अप्रैल, 2023 को आयोजित लोगो डिजाइनिंग प्रतियोगिता के दौरान असाधारण प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन किया गया और परिणाम शानदार थे। इस आयोजन को शानदार सफलता दिलाने वाले थे डॉ. प्रियंका अग्रवाल और डॉ. श्रेया सिंह।

सभी अंडरग्रेजुएट, पोस्टग्रेजुएट और पैराडेंटल कोर्स के प्रतिभागियों ने अपनी अपार प्रतिभा और समर्पण का प्रदर्शन किया, क्योंकि उन्होंने विचार के लिए 33 एंट्रीज प्रस्तुत कीं।लोगो का मूल्यांकन हमारे सम्मानित जज, डॉ. श्वेता बाली और डॉ. नताशा गंभीर ने किया, जिन्होंने प्रासंगिकता, विवरण, अपील, विशिष्टता और प्रभावशीलता जैसे मानदंडों के आधार पर उनका आकलन किया।

दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता की थीम पर असंख्य रचनात्मक तरीकों से विशिष्ट और आकर्षक विचारों की व्यापक रेंज प्रदर्शित की गई।बहुत विचार-विमर्श के बाद, प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की गई और यह टाइटल किसी और को नहीं बल्कि बी.डी.एस. प्रथम वर्ष के छात्र अक्षत कुशवाहा को मिला!उनकी उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए पुरस्कार के रूप में, उन्हें 2000/- रुपये के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया,जबकि बी.डी.एस. तृतीय वर्ष की सिया सक्सैना प्रथम रनरअप रहीं, उनके बाद बी.डी.एस. इंटर्न नेहा सेकंड रनरअप रहीं।

यह प्रतियोगिता हमारे छात्र समूह के भीतर मौजूद अविश्वसनीय प्रतिभा और रचनात्मकता का सच्चा प्रमाण थी।

लोगो बनाना

BIOETHICS IN DENTISTRY
LOGO DESIGNING

BIOETHICS IN DENTISTRY

BIOETHICS IN DENTISTRY

BIOETHICS IN DENTISTRY
LOGO DESIGNING

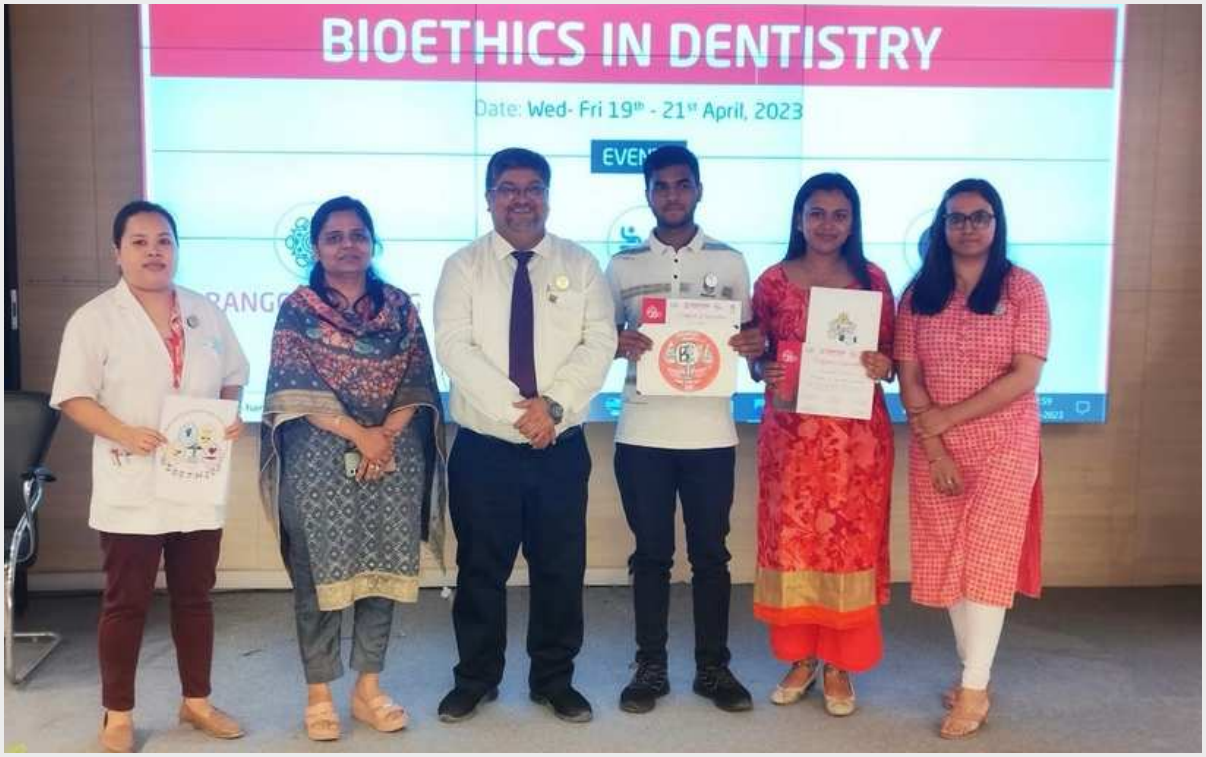
BIOETHICS IN DENTISTRY
Date: Wed- Fri 19th - 21st April, 2023

लोगो बनाना

Students Entries

रंगोली बनाना

पूरा कॉरिडोर आकर्षक रंगों और जटिल डिज़ाइनों से भरा हुआ था, जब हमारे छात्रों ने 19 मार्च, 2023 को रंगोली बनाने की प्रतियोगिता में भाग लिया था, जिसका नेतृत्व डॉ. नताशा गंभीर और डॉ. दिव्या सिंह ने किया था, यह आयोजन हमारे छात्रों की कलात्मक प्रतिभा और रचनात्मकता का सच्चा समारोह था।

हर कोई अपनी कलात्मक प्रतिभा दिखाने के लिए इकट्ठा हुआ, हर कोई शीर्ष पुरस्कार लेने की होड़ में थे। चुनने के लिए रंगों, पैटर्न और डिज़ाइन की एक विस्तृत रेंज के साथ, छात्रों ने काम करना शुरू कर दिया, शानदार और जटिल रंगोली बनाई, जिससे जज हैरत में पड़ गए।

काफी विचार-विमर्श के बाद आखिरकार प्रतियोगिता के विजेता की घोषणा कर दी गई।यह खिताब बी.डी.एस. के तीसरे वर्ष की दीप्ति, मोनिका और विधि को मिला।

रंगोली बनाना

समारोह का दिन

19 अप्रैल 2023 को, संतोष डेंटल कॉलेज ने बड़े उत्साह और जोश के साथ जैवनैतिकता दिवस मनाया। दिन की शुरुआत डॉ. रसल के एक प्रभावशाली संदेश के साथ हुई, उसके बाद डॉ. ज्योति भत्रा द्वारा जैवनैतिकता में अनुसंधान पर एक प्रेरक व्याख्यान दिया गया।इस व्याख्यान ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया गया, जिससे छात्रों के बीच बातचीत और चर्चाएं शुरू हो गईं।

इसके बाद जाने-माने दंत चिकित्सक और जैवनैतिक विज्ञानी, डॉ. राजीव आहलूवालिया ने तब स्टेज पर दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के बारे में बात की।उनका परिज्ञान सोचने पर मजबूर करने वाला था, और छात्रों को दंत चिकित्सा अभ्यास में नैतिक विचारों के बारे में मूल्यवान ज्ञान प्राप्त हुआ।

मंच पर कॉलेज नेतृत्व टीम का तालियों के साथ स्वागत किया गया और उन्होंने नेताओं के रूप में अपने अनुभव और ज्ञान को साझा किया। ब्रोच प्लांटर समारोह एक मुख्य आकर्षण था, जहाँ नेतृत्व टीम ने कॉलेज की तरक्की और विकास के प्रतीक के रूप में ब्रोच लगाए थे।

दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना ने इस आयोजन में आध्यात्मिकता और श्रद्धा का भाव भर दिया। डेंटल कॉलेज के वाइस चांसलर और डीन ने दंत चिकित्सा क्षेत्र में जैवनैतिकता के महत्व के बारे में प्रेरणादायक भाषण दिए।

आयोजन का समापन छात्रों द्वारा समूह फोटो और मनोरंजन से भरे नुक्कड़ नाटक के साथ हुआ।आयोजन के अंत में, जब उन्होंने एक साथ राष्ट्रगान गाया, तो दर्शकों में जोश भर गया। इस तरह के एक सफल आयोजन के लिए मार्गदर्शन और समर्थन के लिए कॉलेज नेतृत्व टीम को दिल से धन्यवाद देता है।जैवनैतिकता दिवस असल में प्रेरणा और नेतृत्व का दिन था, जिससे छात्रों को नई जानकारी मिली और दंत चिकित्सा में नैतिक विचारों की गहरी समझ पैदा हुई।

समारोह का दिन

कुछ पल एक नज़र में

हमें अपने सम्मानित आयोजन अध्यक्ष, डॉ. नीरज ग्रोवर और एंडोडॉन्टिक्स विभाग की सम्मानित प्रमुख डॉ. सुमिता गिरी निषाद की खास उपलब्धियों के साथ-साथ असाधारण पी.जी. और यू.जी. छात्रों के एक समूह को सम्मानित करते हुए बहुत गर्व होता है। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों में प्रतिष्ठित यूनेस्को जैवनैतिकता, हाइफ़ा ऑनलाइन कोर्स का सफलतापूर्वक समापन शामिल है। यह सम्मान स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में नैतिक सिद्धांतों की खोज औरअनुप्रयोग के प्रति उनके अटूट समर्पण का प्रमाण है। उनकी सराहनीय उपलब्धि हमारी संस्था और व्यापक शैक्षणिक समुदाय दोनों को समृद्ध करती है, जो विद्वत्तापूर्ण उत्कृष्टता का प्रकाशस्तंभ और नैतिक अखंडता का प्रतीक है।

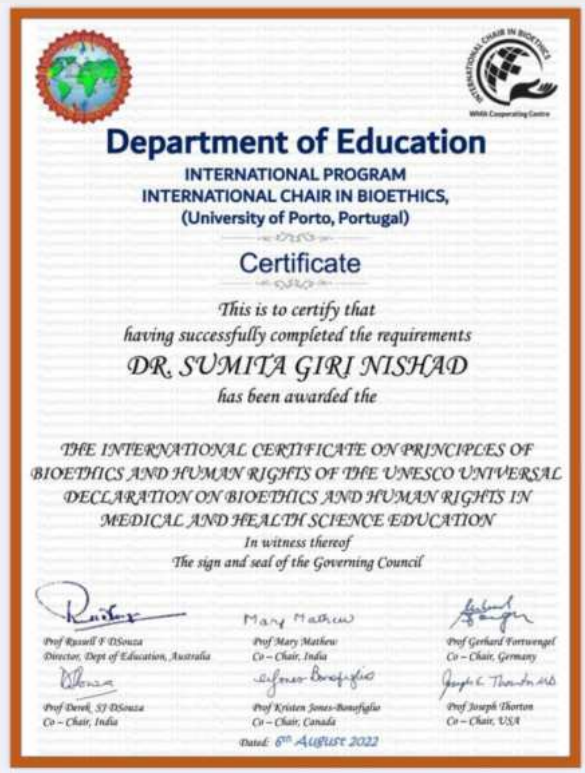

Department of Education

INTERNATIONAL PROGRAM
INTERNATIONAL CHAIR IN BIOETHICS,
(University of Porto, Portugal)

Certificate

This is to certify that
having successfully completed the requirements
DR. SUMITA GIRI NISHAD
has been awarded the

THE INTERNATIONAL CERTIFICATE ON PRINCIPLES OF BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS OF THE UNESCO UNIVERSAL DECLARATION ON BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS IN MEDICAL AND HEALTH SCIENCE EDUCATION

In witness thereof
The sign and seal of the Governing Council

Prof Russell F DSouza, Director, Dept of Education, Australia
Prof Mary Mathew, Co – Chair, India
Prof Gerhard Fortwengel, Co – Chair, Germany
Prof Derek SJ DSouza, Co – Chair, India
Prof Kristen Jones-Bonofiglio, Co – Chair, Canada
Prof Joseph Thorton, Co – Chair, USA

Dated: 6th August 2022

Department of Education

INTERNATIONAL PROGRAM
INTERNATIONAL CHAIR IN BIOETHICS,
(University of Porto, Portugal)

Certificate

This is to certify that
having successfully completed the requirements
DR. NEERAJ GROVER
has been awarded the

THE INTERNATIONAL CERTIFICATE ON PRINCIPLES OF BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS OF THE UNESCO UNIVERSAL DECLARATION ON BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS IN MEDICAL AND HEALTH SCIENCE EDUCATION

In witness thereof
The sign and seal of the Governing Council

Prof Russell F DSouza, Director, Dept of Education, Australia
Prof Mary Mathew, Co – Chair, India
Prof Gerhard Fortwengel, Co – Chair, Germany
Prof Derek SJ DSouza, Co – Chair, India
Prof Kristen Jones-Bonofiglio, Co – Chair, Canada
Prof Joseph Thorton, Co – Chair, USA

Dated: 6th August 2022

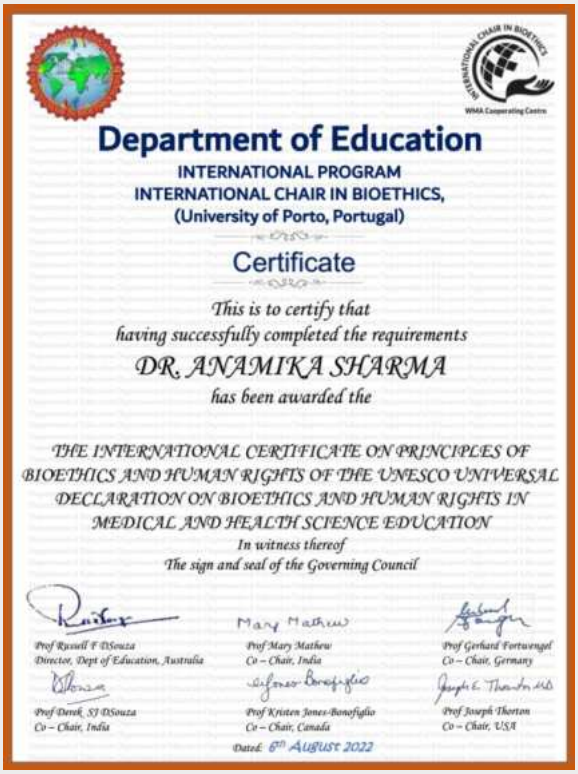

Department of Education

INTERNATIONAL PROGRAM
INTERNATIONAL CHAIR IN BIOETHICS,
(University of Porto, Portugal)

Certificate

This is to certify that
having successfully completed the requirements
DR. ANAMIKA SHARMA
has been awarded the

THE INTERNATIONAL CERTIFICATE ON PRINCIPLES OF BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS OF THE UNESCO UNIVERSAL DECLARATION ON BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS IN MEDICAL AND HEALTH SCIENCE EDUCATION
In witness thereof
The sign and seal of the Governing Council

Prof Russell F DSouza, Director, Dept of Education, Australia
Prof Mary Mathew, Co – Chair, India
Prof Gerhard Fortwengel, Co – Chair, Germany
Prof Derek SJ DSouza, Co – Chair, India
Prof Kristen Jones-Bonofiglio, Co – Chair, Canada
Prof Joseph Thorton, Co – Chair, USA
Dated: 6th August 2022

Department of Education

INTERNATIONAL PROGRAM
INTERNATIONAL CHAIR IN BIOETHICS,
(University of Porto, Portugal)

Certificate

This is to certify that
having successfully completed the requirements
DR. SHIVANGI SHUKLA
has been awarded the

THE INTERNATIONAL CERTIFICATE ON PRINCIPLES OF BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS OF THE UNESCO UNIVERSAL DECLARATION ON BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS IN MEDICAL AND HEALTH SCIENCE EDUCATION
In witness thereof
The sign and seal of the Governing Council

Prof Russell F DSouza, Director, Dept of Education, Australia
Prof Mary Mathew, Co – Chair, India
Prof Gerhard Fortwengel, Co – Chair, Germany
Prof Derek SJ DSouza, Co – Chair, India
Prof Kristen Jones-Bonofiglio, Co – Chair, Canada
Prof Joseph Thorton, Co – Chair, USA
Dated: 6th August 2022

Department of Education

INTERNATIONAL PROGRAM
INTERNATIONAL CHAIR IN BIOETHICS,
(University of Porto, Portugal)

Certificate

This is to certify that
having successfully completed the requirements
DR. AYUSHI JAIN
has been awarded the

THE INTERNATIONAL CERTIFICATE ON PRINCIPLES OF BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS OF THE UNESCO UNIVERSAL DECLARATION ON BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS IN MEDICAL AND HEALTH SCIENCE EDUCATION
In witness thereof
The sign and seal of the Governing Council

Prof Russell F DSouza, Director, Dept of Education, Australia
Prof Mary Mathew, Co – Chair, India
Prof Gerhard Fortwengel, Co – Chair, Germany
Prof Derek SJ DSouza, Co – Chair, India
Prof Kristen Jones-Bonofiglio, Co – Chair, Canada
Prof Joseph Thorton, Co – Chair, USA
Dated: 6th August 2022

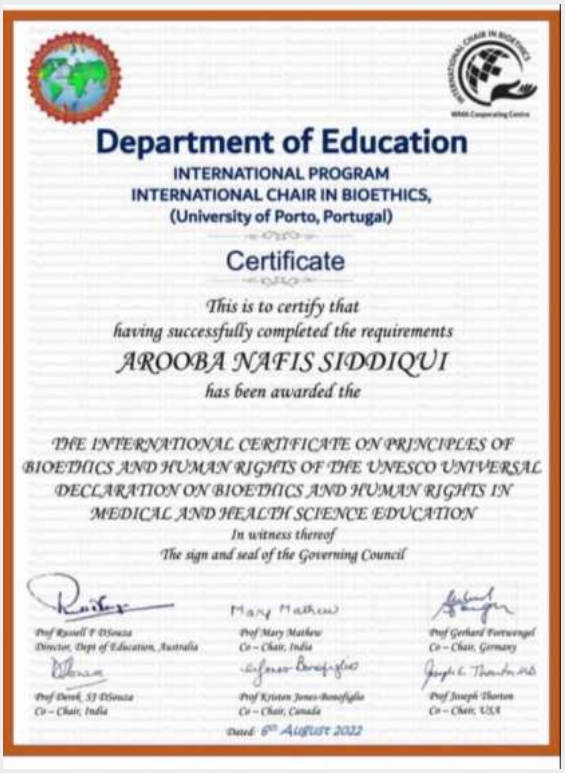

Department of Education

INTERNATIONAL PROGRAM
INTERNATIONAL CHAIR IN BIOETHICS,
(University of Porto, Portugal)

Certificate

This is to certify that
having successfully completed the requirements
AROOBA NAFIS SIDDIQUI
has been awarded the

THE INTERNATIONAL CERTIFICATE ON PRINCIPLES OF BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS OF THE UNESCO UNIVERSAL DECLARATION ON BIOETHICS AND HUMAN RIGHTS IN MEDICAL AND HEALTH SCIENCE EDUCATION
In witness thereof
The sign and seal of the Governing Council

Prof Russell F DSouza, Director, Dept of Education, Australia
Prof Mary Mathew, Co – Chair, India
Prof Gerhard Fortwengel, Co – Chair, Germany
Prof Derek SJ DSouza, Co – Chair, India
Prof Kristen Jones-Bonofiglio, Co – Chair, Canada
Prof Joseph Thorton, Co – Chair, USA
Dated: 6th August 2022

संतोष एन.डी.बी.यू.

एक महत्वपूर्ण अवसर पर, भाग लेने वाले सभी छात्रों और संकाय सदस्यों को एक प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया, जो उनके दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है। यह प्रतीक चिन्ह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई के साथ उनकी संबद्धता को गर्व से दर्शाता है, जो नैतिक उत्कृष्टता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

ब्रोच हमारी संस्था के मूल मूल्यों को मूर्त रूप देते हैं और जिम्मेदारी और समर्पण की निरंतर याद दिलाते हैं। सावधानी से तैयार किए गए, ये ब्रोच एकता की भावना का उदाहरण देते हैं, जो दंत चिकित्सा में नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए प्रसिद्ध है।

उनकी विज़ुअल अपील से परे, ये ब्रोच सामूहिक एकता का प्रतीक हैं, जो दंत चिकित्सा जैवनैतिकता के उच्चतम मानकों को कायम रखते हैं। प्रत्येक विवरण इकाई के प्रतिभागियों द्वारा की गई नैतिक उत्कृष्टता की अटूट खोज को दर्शाता है।

अलंकरण के रूप में उनकी भूमिका से आगे बढ़ते हुए, ब्रोच सौहार्द और छात्रों और शिक्षकों के बीच साझा प्रतिबद्धता को बढ़ावा देते हैं।

वे दंत चिकित्सा समुदाय में नैतिक आचरण के प्रकाशस्तम्भ बनकर सम्मान और विशिष्टता को प्रज्वलित करते हैं। इन ब्रोच को प्रदान करना हमारी संस्था के इतिहास में और उनके प्राप्तकर्ताओं के जीवन में एक मील का पत्थर साबित हुआ है।

वे जैवनैतिकता इकाई से जुड़े लोगों के समर्पण और धैर्य की याद दिलाते हैं।ये प्रतीक चिन्ह प्रतीकों से कहीं बढ़कर हैं; ये नैतिक उत्कृष्टता के प्रति विशिष्ट और अटूट समर्पण के प्रतीक हैं।वे दंत चिकित्सा शिक्षा पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को नैतिक दंत चिकित्सा के महान मार्ग को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

संतोष एन.डी.बी.यू.

सुशोभित बैचों के
ज़रिए जागरूकता
फैलाते छात्र

राष्ट्रीय जागरूकता

लेट्स बी दा चेंज

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली

13 फरवरी, 2017 को दंत चिकित्सा के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व घटना हुई।अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) ने संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई के साथ मिलकर "दंत चिकित्सा जैवनैतिकता - - लेट्स बी दा चेंज @" नामक सेमिनार आयोजित किया।इस आयोजन में अलग-अलग पृष्ठभूमियों के प्रतिष्ठित वक्ताओं ने दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के महत्व और उन सिद्धांतों के बारे में चर्चा की, जिनका दंत चिकित्सा पेशेवरों को अपने अभ्यास, अनुसंधान और प्रकाशनों में पालन करना चाहिए।

सेमिनार की शुरुआत विशिष्ट वक्ताओं के परिचय के साथ हुई, जिनमें से प्रत्येक ने अपनी विशिष्ट विशेषज्ञता और परिज्ञान को सामने रखा।हाइफ़ा में जैवनैतिकता कार्यक्रम की राष्ट्रीय प्रमुख, डॉ. मैरी मैथ्यू ने जैव चिकित्सा नैतिकता के बुनियादी सिद्धांतों पर बातचीत के साथ चर्चा की शुरुआत की।राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई के सचिव और हाइफ़ा में जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष डॉ. राजीव आहलूवालिया ने इसके बाद दंत चिकित्सा अभ्यास में नैतिकता पर एक प्रस्तुति दी।AIIMS में दंत चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र (CDER) में ऑर्थोडॉन्टिक्स की प्रोफ़ेसर डॉ. रितु दुग्गल ने दंत चिकित्सा अनुसंधान में नैतिकता के बारे में बताया।

अंत में, CDER, AIIMS में पेडोडोंटिक्स विभाग के प्रोफ़ेसर, डॉ. विजय माथुर ने वैज्ञानिक प्रकाशन में नैतिकता के विषय पर बात की।जैसे-जैसे वक्ताओं ने बातचीत की और अपना ज्ञान साझा किया, दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता का महत्व और भी स्पष्ट होता गया। दंत चिकित्सा का क्षेत्र, किसी भी अन्य चिकित्सा पेशे की तरह, नैतिक दुविधाओं और चुनौतियों से भरा हुआ है।दंत चिकित्सकों को अपने मरीज़ों को सर्वोत्तम संभव देखभाल प्रदान करते हुए इन जटिलताओं को नेविगेट करना चाहिए। सेमिनार में दंत चिकित्सा अभ्यास, अनुसंधान और प्रकाशन में एक मजबूत नैतिक आधार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया, जिसमें दंत चिकित्सा के भविष्य को आकार देने में जैवनैतिकता की भूमिका पर ज़ोर दिया गया।

जैव चिकित्सा नैतिकता के बुनियादी सिद्धांतों पर डॉ. मैरी मैथ्यू की प्रस्तुति ने बाद की चर्चाओं के लिए आधार तैयार किया।उन्होंने उन चार प्रमुख सिद्धांतों पर ज़ोर दिया, जिन्हें दंत चिकित्सा पेशेवरों को उनके काम में मार्गदर्शन करना चाहिए: स्वायत्तता, परोपकार, गैर-नुक्सानदेह, और न्याय।स्वायत्तता से तात्पर्य मरीज़ के इलाज के बारे में सोच-समझकर निर्णय लेने के अधिकार से है, जबकि लाभ और गैर-नुक्सानदेह में क्रमश: अच्छा करने और नुकसान से बचने का दायित्व शामिल होता है।अंत में, न्याय के लिए आवश्यक है कि दंत चिकित्सक सभी मरीज़ों के साथ उचित और समान व्यवहार करें।दंत चिकित्सा में नैतिकता पर डॉ. राजीव आहलूवालिया की बातचीत में इन सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुप्रयोग के बारे में गहराई से बताया गया है।

लेट्स बी दा चेंज

उन्होंने सूचित सहमति के महत्व, मरीज़ों की गोपनीयता, और दंत चिकित्सा पेशेवरों द्वारा लगातार सीखने के ज़रिए अपनी क्षमता बनाए रखने की ज़रूरत के बारे में चर्चा की।डॉ. आहलूवालिया ने दंत चिकित्सा पद्धति में उत्पन्न होने वाली नैतिक चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला, जैसे कि हितों का टकराव और दंत चिकित्सा का व्यावसायीकरण, चिकित्सकों से सतर्क रहने और उच्चतम नैतिक मानकों को बनाए रखने का आग्रह किया।

दंत अनुसंधान में नैतिकता पर डॉ. रितु दुग्गल की प्रस्तुति ने मानव विषयों से जुड़े अनुसंधान के संचालन में सख्त नैतिक निरीक्षण की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने अनुसंधान प्रतिभागियों से सूचित सहमति प्राप्त करने, उनकी निजता और गोपनीयता सुनिश्चित करने और वैज्ञानिक अखंडता के सिद्धांतों का पालन करने के महत्व पर ज़ोर दिया।डॉ. दुग्गल ने अनुसंधान के नैतिक आचरण की सुरक्षा में संस्थागत समीक्षा बोर्डों की भूमिका और अनुसंधानकर्ताओं को उनके वित्त पोषण स्रोतों और हितों के संभावित टकराव के बारे में पारदर्शी होने की आवश्यकता पर भी चर्चा की।

वैज्ञानिक प्रकाशन में नैतिकता पर डॉ. विजय माथुर की बातचीत ने वैज्ञानिक साहित्य की अखंडता को बनाए रखने के लिए लेखकों, संपादकों और समीक्षकों की ज़िम्मेदारी को दूर किया।उन्होंने अनुसंधान के निष्कर्षों की रिपोर्टिंग में ईमानदारी और पारदर्शिता के महत्व पर ज़ोर देते हुए साहित्यिक चोरी, डेटा निर्माण और डेटा फैब्रिकेशन के मुद्दों पर चर्चा की।डॉ. माथुर ने प्रकाशित अनुसंधान की गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने में सहकर्मी समीक्षा की भूमिका पर भी प्रकाश डाला, जिसमें समीक्षा प्रक्रिया में निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता और गोपनीयता के प्रति प्रतिबद्धता का आह्वान किया गया। "दंत चिकित्सा जैवनैतिकता - लेट्स बी दा चेंज"

सेमिनार दंत चिकित्सा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, जो जैवनैतिकता पर ज्ञान की चर्चा और प्रसार के लिए एक मंच प्रदान करता था।ICDER, AIIMS में आयोजित और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू.एच.ओ.) और वैश्विक गठबंधन द्वारा नॉलेज पार्टनर के रूप में समर्थित इस कार्यक्रम ने बदलाव के लिए उत्प्रेरक का काम किया, जिसने दंत चिकित्सा पेशेवरों को अपने अभ्यास, अनुसंधान और प्रकाशनों में नैतिक सिद्धांतों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। अंत में "दंत चिकित्सा जैवनैतिकता - लेट्स बी दा चेंज" सेमिनार एक ऐतिहासिक कार्यक्रम था जो दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता के महत्व पर चर्चा करने के लिए क्षेत्र के विशेषज्ञों को एक साथ ले आया।

वक्ताओं ने जैव चिकित्सा नैतिकता के चार सिद्धांतों का पालन करने की वकालत की और दंत पेशेवरों को अपने काम में नैतिक मानकों को बनाए रखने में सतर्क रहने की आवश्यकता पर जोर दिया।सेमिनार ने दंत चिकित्सा समुदाय के लिए कॉल टू एक्शन यानी कार्रवाई के आह्वान का काम किया, जिसमें उनसे दंत चिकित्सा की दुनिया में वह बदलाव लाने का आग्रह किया जो वे देखना चाहते हैं।जैवनैतिकता को अपनाकर और लगातार सीखने के लिए प्रतिबद्ध होकर, दंत चिकित्सा पेशेवर अपने क्षेत्र के लिए एक उज्जवल, अधिक नैतिक भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

बायोएथिकॉन:
एस.आर.एम. विश्वविद्यालय, तमिलनाडु

स्वास्थ्य विज्ञान में जैवनैतिकता पर पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, बायोएथिकॉन 2019, बहुत खुशी देने वाला आयोजन था, जिसने दुनिया भर के विशेषज्ञों, अनुसंधानकर्ताओं और छात्रों को एक साथ लाकर स्वास्थ्य देखभाल के नैतिक आयामों पर चर्चा की और उनका पता लगाया।जैवनैतिकता एशिया पैसिफिक डिवीजन में यूनेस्को अध्यक्ष और एस.आर.एम. मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर द्वारा आयोजित, यह सम्मेलन डॉ. एन विवेक के अथक प्रयासों और पहल का एक प्रमाण था, जिन्होंने इसकी सफलता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।इस आयोजन की शुरुआत एक सामान्य रूपरेखा के साथ हुई, जिसमें विशिष्ट मेहमानों और वक्ताओं के लिए मंच तैयार किया गया, जो सम्मेलन में अपने ज्ञान और विशेषज्ञता का योगदान देंगे।

इस आयोजन को शानदार ढंग से सफल बनाने वाले लोगों में डॉ. सुशील गुप्ता, भारत के संसद सदस्य, शामिल थे, जो इस अवसर पर सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।एशिया पैसिफिक जैवनैतिकता कार्यक्रम के प्रमुख और जैवनैतिकता, मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया में यूनेस्को अध्यक्ष, प्रोफ़ेसर रसल डी'सूज़ा ने मुख्य भाषण दिया, जिससे बाद में होने वाली ज्ञानवर्धक चर्चाओं के लिए माहौल तैयार हो गया।

डॉ. एन. विवेक, डीन, प्रोफ़ेसर, और एस.आर.एम. कट्टनकुलाथुर डेंटल कॉलेज में ओरल एंड मैक्सिलोफ़ेशियल सर्जरी के प्रमुख, ने सम्मेलन के दंत चिकित्सा सेगमेंट के आयोजन अध्यक्ष के रूप में काम किया।

जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष (हाइफ़ा) के राष्ट्रीय जैवनैतिकता कार्यक्रम और इंटरनेशनल नेटवर्क की इंडिया हेड, डॉ. मैरी मैथ्यू, कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज "मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय", कराड, महाराष्ट्र, भारत की पूर्व वाइस चांसलर प्रोफेसर और मुंबई में कंसल्टेंट ओरल और मैक्सिलोफ़ेशियल सर्जन डॉ. नीलिमा मलिक के साथ अतिथि वक्ता थीं।

अन्य उल्लेखनीय अतिथि वक्ताओं में एम. आई.एम.ई.आर. मेडिकल कॉलेज, तालेगांव, पुणे में राष्ट्रीय जैवनैतिकता पाठ्यचर्या कार्यान्वयन केंद्र के निदेशक डॉ. डेरेक डी'सूज़ा और राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम के प्रमुख, संतोष डेंटल कॉलेज के वाइस डीन और संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय के प्रमुख डॉ (प्रोफेसर) राजीव आहलूवालिया शामिल थे।डॉ. आहलूवालिया ने 'दंत चिकित्सा में संचार और नैतिकता' पर एक कार्यशाला का भी निरीक्षण किया।

सम्मेलन में दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता पर कई दिलचस्प व्याख्यान दिए गए, जो सम्मानित अतिथि वक्ताओं द्वारा दिए गए थे।इन व्याख्यानों में जैवनैतिकता के अलग-अलग पहलुओं, जैसे कि दंत चिकित्सा में नैतिक विचार, सूचित सहमति का महत्व और दंत चिकित्सा देखभाल प्रदान करने में सांस्कृतिक संवेदनशीलता की भूमिका,पर प्रकाश डाला गया।वक्ताओं ने मरीज़ के अपने स्वयं के फैसले और गरिमा का सम्मान करने के नैतिक दायित्व के साथ प्रभावी इलाज की ज़रूरत को संतुलित करने में दंत पेशेवरों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में भी बात की। बायोएथिकॉन 2019 का एक मुख्य आकर्षण इस आयोजन का व्यापक स्तर था,

जिसमें 3,500 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि, 20 मुख्य वक्ता और 4000 छात्र शामिल हुए थे।सम्मेलन में 475 वैज्ञानिक अनुसंधान पत्रों का प्रस्तुतीकरण भी किया गया था, जिसमें जैवनैतिकता के क्षेत्र में नवीनतम प्रगति और खोजों को दिखाया गया था।

यह आयोजन पूरी बारीकी से आयोजित किया गया था, जिसमें एक सुनियोजित शेड्यूल था, जिसमें नेटवर्किंग, चर्चाओं और उपस्थित लोगों के बीच विचारों के आदान-प्रदान के लिए पर्याप्त समय मिल गया था।सम्मेलन ने जैवनैतिकता पर कई दिलचस्प बिंदुओं के बारे में जानने के लिए एक अनोखा मंच भी प्रदान किया।उदाहरण के लिए, दंत चिकित्सा में उभरती तकनीकों के नैतिक प्रभावों, जैसे कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोटिक्स के इस्तेमाल पर चर्चा की गई।वक्ताओं ने दंत चिकित्सा पेशेवरों को इन विकासों से अवगत रहने और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली संभावित नैतिक दुविधाओं पर विचार करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया।एक और आकर्षक विषय जो सम्मेलन के दौरान सामने आया, वह था "दंत चिकित्सा न्याय" की अवधारणा, जो दंत चिकित्सा देखभाल संसाधनों के समान वितरण और दंत चिकित्सा सेवाओं तक पहुंच में असमानताओं को दूर करने की आवश्यकता को संदर्भित करता है।

वक्ताओं ने मौखिक स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों को पहचानने और उनसे निपटने के महत्व पर प्रकाश डाला, साथ ही दंत चिकित्सा न्याय को बढ़ावा देने वाली नीतियों की वकालत करने में दंत पेशेवरों की भूमिका पर प्रकाश डाला।

हमारे विचार का निष्कर्ष यह है कि बायोएथिकॉन 2019 एक ऐतिहासिक घटना थी, जिसने न केवल जैवनैतिकता के क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधान और विकास को प्रदर्शित किया, बल्कि विशेषज्ञों, अनुसंधानकर्ताओं और छात्रों के बीच विचारों और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक मंच भी प्रदान किया।यह सम्मेलन स्वास्थ्य देखभाल में नैतिक मुद्दों की समझ को आगे बढ़ाने में सहयोग और संचार की शक्ति का एक प्रमाण था।इस आयोजन की सफलता का श्रेय आयोजकों, वक्ताओं और उपस्थित लोगों के समर्पण और कड़ी मेहनत को दिया जा सकता है, जो इसमें शामिल सभी लोगों के लिए एक यादगार और समृद्ध अनुभव बनाने के लिए एक साथ आए।

Name	Designation	
Dr. Sushil Gupta	Member of Parliament, India	Guest of Honour
Prof. Russell D' Souza	Head Asia Pacific Bioethics Program UNESCO Chair in Bioethics, Melbourne Australia	Keynote address
Dr. N Vivek	Dean, Prof and Head, Oral & Maxillofacial Surgery SRM Kattankulathur Dental College	Organizing chair- Dental
Dr. Mary Mathew	India Head, National Bioethics Program International Network of the UNESCO Chair in Bioethics (HAIFA)	**Guest Speaker**
Prof. Dr. Neelima Malik	Former Vice Chancellor, Krishna Institute of Medical Sciences "Deemed to be University ", Karad, Maharashtra, India. Consultant Oral and Maxillofacial Surgeon. Mumbai	**Guest Speaker**
Dr. Derek D' Souza	Director, National Bioethics Curriculum Implementation Centre MIMER Medical College, Talegaon, Pune	**Guest Speaker**
Dr. (Prof) Rajiv Ahluwalia	Head, National Dental Bioethics Program Vice Dean, Santosh Dental College Santosh aDeemed to be University	Workshop on 'Communication and Ethics in Dentistry'

राजस्थान डेंटल कॉलेज

ब्रिजिंग दा एथिकल गैप

प्रकाशमान राजस्थान डेंटल कॉलेज ने 31 मार्च, 2020 को एक आकर्षक संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें "जैवनैतिकता - नैतिक अंतर को दूर करना यानी "बायोइथिक्स - ब्रिजिंग द एथिकल गैप" के मनोरम क्षेत्र में जाने का प्रयास किया गया।यह उल्लेखनीय आयोजन जैवनैतिकता के अभिसरण की खोज करने और विभिन्न क्षेत्रों में नैतिक असमानताओं को दूर करने के लिए चल रहे प्रयासों को समर्पित था।इस संस्करण में, हम जैवनैतिकता के क्षेत्र में नैतिक आचरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मूलभूत बाधाओं, युक्तियों और पहलों के बारे में विचार करेंगे।

प्रख्यात वक्ताओं, संतोष डेंटल कॉलेज के वाइस डीन, डॉ. राजीव आहलूवालिया, संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय, गाजियाबाद, और डॉ. रोहित आदिंथाया, जो राजस्थान डेंटल कॉलेज के प्रतिष्ठित प्रिंसिपल हैं, ने मंत्रमुग्धता की आभा बिखेरते हुए, इस आयोजन को और अधिक अविस्मरणीय और उल्लेखनीय बना दिया।अपनी विशाल विशेषज्ञता और गहन शिक्षा का लाभ उठाते हुए, डॉ. आहलूवालिया ने महत्वपूर्ण चिंताओं पर प्रकाश डाला और नैतिक खाई को सामूहिक रूप से पाटने के लिए एक यात्रा शुरू की।

कोऑर्डिनेटर, डॉ. शिखा सिंह और डॉ. चिरंजीव सिंह ने इस आयोजन को सुनियोजित करने में सराहनीय सक्रियता दिखाई।

उनके समझदारी के मार्गदर्शन से, उपस्थित लोगों को जैव-नैतिक विभाजन को पाटने के सबसे महत्वपूर्ण महत्व के बारे में जानकारी मिली।यह नेक प्रयास मानव अधिकारों को कायम रखता है, ज़िम्मेदारी से नवाचार को बढ़ावा देता है, नैतिक उलझनों से निपटता है, विश्वास और आत्मविश्वास पैदा करता है, समानता और न्याय सुनिश्चित करता है और लोगों को भविष्य की नैतिक उलझनों का सामना करने के लिए तैयार करता है।यह आयोजन 97 से अधिक सहभागी लोगों की उत्साहपूर्ण भागीदारी की वजह से एक बहुत ही संवादात्मक अनुभव के रूप में विकसित हुआ, जिसमें छात्र और सम्मानित संकाय सदस्य दोनों शामिल थे।उनकी सामूहिक भागीदारी ने वेबिनार में जीवन शक्ति और उत्साह का एक और आयाम जोड़ दिया। इस उल्लेखनीय वेबिनार ने विशेषज्ञों और प्रतिभागियों को गहन चर्चाओं में शामिल होने, नैतिक उलझनों पर प्रकाश डालने और नैतिक और समावेशी स्वास्थ्य देखभाल परिदृश्य को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियां खोजने के लिए एक बेहतरीन मंच प्रदान किया।हम अपने सम्मानित वक्ताओं के अमूल्य योगदान, उपस्थित लोगों की सक्रिय भागीदारी और इस आयोजन के कुशल समन्वय के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।वेबिनार ने वास्तव में जैवनैतिक चुनौतियों को संबोधित करने में सहयोग की क्षमता और परिवर्तनकारी क्षमता का उदाहरण दिया।यहाँ संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय में, हमें ऐसे आयोजन जो सुनियोजित करने के अपने कौशल पर बहुत गर्व है, जो एक अमिट छाप छोड़ते हैं, अविस्मरणीय अनुभव पैदा करते हैं और दंत चिकित्सा पेशेवर के बीच नैतिक जागरूकता को बढ़ावा देते हैं।

Convenor : Dr Rohit Adyanthaya, Principal

Moderator : Dr. Anup Hola

Co-ordinators : Dr Shikha Singh
Dr Chiranjeeve Singh

Participants : 97 participants including students & faculty attended.

मानव रचना डेंटल कॉलेज, हरियाणा

रिसर्चजेनिक्स - 2020

मानव रचना डेंटल कॉलेज द्वारा आयोजित तीन दिवसीय अनुसंधान परिचर्चा, रिसर्चजेनिक्स वेबिनार पर अपना अनुभव साझा करते हुए हमें खुशी हो रही है।यह आयोजन 22 अक्टूबर से 24 अक्टूबर, 2020 तक आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य दंत चिकित्सा पेशेवरों और छात्रों को दंत चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में नवीनतम रुझानों और प्रगति के बारे में प्रेरित करना और शिक्षित करना था।

वेबिनार की शुरुआत एक आकर्षक उद्घाटन समारोह के साथ हुई, जिसमें सम्मानित गणमान्य व्यक्ति और जाने-माने अनुसंधानकर्ता उपस्थित थे, जिसमें नवाचार को बढ़ावा देने और मरीजों की देखभाल में सुधार लाने में अनुसंधान के महत्व पर ज़ोर देते हुए एक प्रेरक भाषण दिया गया था।प्रतिभागियों ने उत्साह बढ़ाया और उन्हें इस शानदार आयोजन का ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने के लिए प्रेरित किया।

रिसर्चजेनिक्स का दूसरा दिन संवादात्मक वर्कशॉप और दिलचस्प पेपर प्रस्तुतियों को समर्पित था।विभिन्न दंत विशेषज्ञों के विशेषज्ञों ने आकर्षक वर्कशॉप आयोजित कीं, जिनमें अनुसंधान पद्धति, डेटा विश्लेषण और वैज्ञानिक लेखन जैसे विषय शामिल थे।

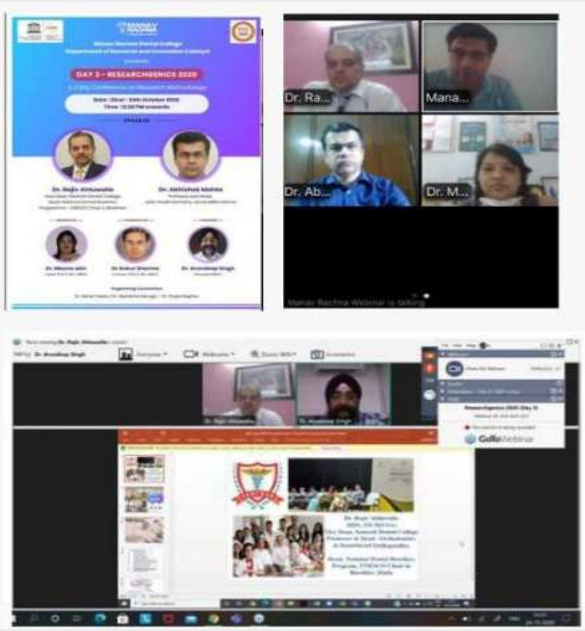

इन सत्रों ने प्रतिभागियों को अपने अनुसंधान प्रयासों को मज़बूत करने के लिए व्यावहारिक कौशल और ज्ञान से सुसज्जित किया।

समानांतर रूप से, अनुसंधानकर्ताओं और छात्रों को सूचनात्मक पेपर प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने अनुसंधान के निष्कर्ष प्रस्तुत करने का अवसर मिला।वर्चुअल प्लेटफ़ॉर्म ने सार्थक चर्चाओं और रचनात्मक प्रतिक्रिया की सुविधा दी, जिससे बौद्धिक आदान-प्रदान और विकास का माहौल तैयार हुआ।

अंतिम दिन का मुख्य आकर्षण था, डॉ. राजीव आहलूवालिया का बहुप्रतीक्षित अतिथि व्याख्यान, जो दंत चिकित्सा और अनुसंधान के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।डॉ. आहलूवालिया ने दंत चिकित्सा अनुसंधान के भविष्य के बारे में, उभरते रुझानों और संभावित सफलताओं के बारे में अपनी अमूल्य जानकारी और विशेषज्ञता साझा की।

प्रतिभागी उनके गहन ज्ञान और दूरदृष्टि से मंत्रमुग्ध हो गए, जिससे उन्हें दंत चिकित्सा अनुसंधान की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा मिली।वेबिनार के दौरान आयोजित संवादात्मक वर्कशॉप में आपकी सक्रिय भागीदारी और सीखने की इच्छा देखी गई।अनुसंधान पद्धति, डेटा विश्लेषण और वैज्ञानिक लेखन जैसे व्यावहारिक अनुसंधान कौशल हासिल करने में आपका उत्साह सचमुच सराहनीय था।आपके द्वारा पूछे गए व्यावहारिक प्रश्न और आपके द्वारा शुरू की गई चर्चाओं ने इसमें शामिल सभी लोगों के लिए सीखने के अनुभव को बेहतर बनाया।हम असाधारण रिसर्चजेनिक्स वेबिनार के आयोजन के लिए मानव रचना डेंटल कॉलेज की पूरी टीम का हार्दिक आभार वयक्त करते हैं और सराहना करते हैं।

यह अत्यंत खुशी और संतोष की बात है कि हम इस ज्ञानवर्धक कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला, इस असाधारण अवसर प्रदान करने के लिए हम अपना हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

एस.जी.टी. विश्वविद्यालय, हरियाणा

क्रिटेसेंटिअल ' 2 2

एस.जी.टी. विश्वविद्यालय की यूनेस्को जैवनैतिकता इकाई ने जैवनैतिकता में अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष के सहयोग से, 13 अगस्त 2022 को एक बौद्धिक रूप से उत्तेजक कार्यक्रम, समकालीन जैवनैतिक मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार - "क्रिटेसेंटिअल एथिक्स 2022" का आयोजन किया।इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में देश-विदेश के जाने-माने वक्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया, जिनमें संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय के वाइस डीन डॉ. राजीव आहलूवालिया शामिल थे।

सेमिनार ने तरह-तरह के समकालीन नैतिक मुद्दों पर गहन चर्चा के लिए एक मंच के रूप में काम किया, जो आज की दुनिया में महत्वपूर्ण प्रासंगिकता रखते हैं।विशिष्ट विशेषज्ञों ने कई विषयों पर प्रकाश डाला, जिनमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नैतिकता की भूमिका, शिक्षा के साथ टिकाऊ विकास लक्ष्यों का एकीकरण, युद्ध के समय नैतिक विचार, महामारी के दौरान स्वास्थ्य देखभाल में नैतिकता के दृष्टिकोण, डिजिटल युग में नैतिकता से उत्पन्न चुनौतियां, स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए जोखिम से संबंधित नैतिक मुद्दों और और जीवन के अंत की देखभाल की जटिलताओं को समझना शामिल हैं।

प्रतिष्ठित वक्ताओं में संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय के सम्मानित वाइस डीन, डॉ. राजीव आहलूवालिया की मौजूदगी ने नैतिक चर्चाओं को बढ़ावा देने और अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया।

डॉ. आहलूवालिया की विशेषज्ञता और परिज्ञान ने सेमिनार को समृद्ध किया, और समग्र बौद्धिक विमर्श को उभारा।

समारोह का एक खास पहलू इसकी मिश्रित प्रकृति थी, जिससे प्रतिभागी व्यक्तिगत रूप से या ऑनलाइन शामिल हो सकते थे। इस समावेशिता के नतीजे में शानदार प्रदर्शन हुआ, जिसमें लगभग 450 प्रतिभागी सेमिनार के विचारोत्तेजक सत्रों में शामिल हुए।

संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का हिस्सा बनकर बहुत गर्व महसूस करता है, जिसने न केवल जैवनैतिकता को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय के समर्पण को प्रदर्शित किया, बल्कि दुनिया भर के विशेषज्ञों और प्रतिभागियों के बीच सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक मंच भी प्रदान किया।

इस तरह के प्रयास अपने छात्रों के बीच समग्र शिक्षा और नैतिक मूल्यों को पोषित करने के विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह से मेल खाते हैं।

क्रिटेसेंटिअल एथिक्स 2022, बौद्धिक विकास, नैतिक विचारों और वैश्विक जुड़ाव के लिए संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय की अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण देता है।आधुनिक दुनिया की चुनौतियों और जटिलताओं का समाधान करने वाले प्रगतिशील शैक्षिक माहौल को बढ़ावा देने की दिशा में विश्वविद्यालय की यात्रा में यह एक और मील का पत्थर है।

अंतर्राष्ट्रीय जागरूकता

एथिकल एस्पेक्ट्स ऑफ़ एमरर्जेंस स्ट्रैटेजीज

कोविड -19 महामारी में अनुसंधान और जैवनैतिकता की भूमिका पर 15 अक्टूबर 2020 को दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे के बीच एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

इस वेबिनार का प्राथमिक उद्देश्य कोविड -19 संकट के दौरान अनुसंधान करने में शामिल नैतिक विचारों पर प्रकाश डालना था, साथ ही वैज्ञानिक प्रयासों का मार्गदर्शन करने में जैवनैतिकता की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर देना था।

इस आयोजन का उद्देश्य गहन चर्चाओं, ज्ञान के आदान-प्रदान और महामारी में आई नैतिक चुनौतियों का पता लगाने के लिए एक मंच प्रदान करना था।वेबिनार ने वैश्विक विशेषज्ञों, अनुसंधानकर्ताओं और स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों के लिए कोविड -19 महामारी के बारे में अपने ज्ञान, अनुभव और जानकारी साझा करने के लिए एक मंच के रूप में काम किया।इसका उद्देश्य इस वैश्विक स्वास्थ्य संकट से उत्पन्न चुनौतियों को समझने और उनसे निपटने में सहयोगात्मक प्रयासों को बढ़ावा देना था।

अनुसंधान के डीन और जैवनैतिकता इकाई के प्रमुख प्रोफ़ेसर डॉ. ज्योति बत्रा ने सभी प्रतिभागियों का गर्मजोशी से स्वागत किया और वेबिनार में उनकी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया।वैश्विक सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने में इस आयोजन के महत्व पर ज़ोर दिया गया।

उन्होंने प्रतिष्ठित अतिथि वक्ताओं का परिचय कराया, जिसमें कोविड -19 अनुसंधान और जैवनैतिकता के क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता और योगदान पर प्रकाश डाला गया।वक्ताओं ने अलग-अलग देशों का प्रतिनिधित्व किया और वेबिनार में विविध दृष्टिकोण पेश किए।उन्होंने शुरुआती टिप्पणियां दीं, जिसमें महामारी के दौरान अनुसंधान पद्धतियों का मार्गदर्शन करने में जैवनैतिकता की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया गया था।

ज़िम्मेदार और न्यायसंगत अनुसंधान सुनिश्चित करने में नैतिक विचारों के महत्व को रेखांकित किया गया था।

हमारे संस्थान की जैवनैतिकता इकाई ने जैवनैतिकता के क्षेत्र में उनकी गतिविधियों, पहलों और उपलब्धियों, विशेष रूप से चल रही कोविड -19 महामारी के संदर्भ में, प्रकाश डालते हुए एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की और प्रस्तुत की। रिपोर्ट में चल रही कोविड -19 महामारी के संदर्भ में नैतिक पद्धतियों और ज़िम्मेदारी से अनुसंधान को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों को शामिल किया गया था।

रिपोर्ट में अलग-अलग क्षेत्रों में इकाई के योगदानों को दिखाया गया है, जिसमें नैतिक दिशानिर्देश विकसित करना, शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम, अनुसंधान सहयोग और नीतिगत अनुशंसाएं शामिल हैं।इसने नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने और अनुसंधान प्रतिभागियों के अधिकारों और कल्याण की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इकाई की प्रतिबद्धता को उजागर किया।जैवनैतिकता के जाने-माने विशेषज्ञ प्रोफ़ेसर डॉ. रसल डी'सूज़ा ने जैवनैतिकता इकाई द्वारा पेश की गई व्यापक रिपोर्ट की सराहना की।उन्होंने नैतिक सिद्धांतों और अनुसंधान की अखंडता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हुए, उनकी गतिविधियों का व्यापक अवलोकन प्रदान करने में उनके प्रयासों की सराहना की।जैवनैतिकता में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध विशेषज्ञ, प्रोफ़ेसर डॉ. रसल डी'सूज़ा की सराहना, जैवनैतिकता इकाई के काम की वैश्विक पहचान को दर्शाती है।

नैतिक मानकों को बनाए रखने और ज़िम्मेदार अनुसंधान पद्धतियों को बढ़ावा देने की उनकी प्रतिबद्धता स्थानीय संदर्भ से परे है।

राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम के प्रमुख और संतोष डेंटल कॉलेज के वाइस डीन ने कार्यक्रम के उद्देश्यों और गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।उन्होंने दंत चिकित्सा के क्षेत्र में नैतिक पद्धतियों और जिम्मेदार अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों को कार्यक्रम द्वारा बनाई जाने वाली आगामी गतिविधियों की एक झलक दी गई।इन पहलों में शामिल हैं:

• शैक्षिक वर्कशॉप: यह कार्यक्रम डेंटल दंत चिकित्सा जैवनैतिकता पर शैक्षिक वर्कशॉप आयोजित करेगा, जिसका उद्देश्य दंत चिकित्सा पेशेवरों और अनुसंधानकर्ताओं के बीच नैतिक विचारों की समझ को बढ़ाना है।

• अनुसंधान सहयोग: इस कार्यक्रम का उद्देश्य दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता पर ध्यान केंद्रित करने वाली अनुसंधान परियोजनाओं को शुरू करने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दंत चिकित्सा संस्थानों के साथ सहयोग को बढ़ावा देना है।

• नीति विकास: इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर दंत चिकित्सा संबंधी नैतिक दिशा-निर्देशों और नीतियों के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेना है, जिससे दंत चिकित्सा अभ्यास में नैतिक सिद्धांतों का एकीकरण सुनिश्चित किया जा सके।

• जन जागरूकता अभियान: इस कार्यक्रम की योजना दंत चिकित्सा देखभाल के नैतिक पहलुओं के बारे में आम जनता को शिक्षित करने के लिए जन जागरूकता अभियान शुरू करने की है, जिसमें मरीज़ों के अधिकारों और सूचित सहमति के महत्व पर जोर दिया गया है।

उन्होंने प्रतिभागियों से सहयोग और सहभागिता को प्रोत्साहित किया, उनसे कार्यक्रम की गतिविधियों में योगदान देने का आग्रह किया।

उन्होंने नैतिक दंत चिकित्सा पद्धतियों और अनुसंधान को बढ़ावा देने में सामूहिक प्रयासों के महत्व पर जोर दिया।

प्रोफेसर रसल डी'सूज़ा, प्रोफेसर मैडलेना पेट्रिको, प्रोफेसर डेरेक डी'सूज़ा और प्रोफेसर अनिमेष जैन ने इस महत्वपूर्ण विषय पर बहुमूल्य जानकारी और दृष्टिकोण प्रदान किए।प्रख्यात अनुसंधानकर्ता और जैवनैतिकता विशेषज्ञ, प्रोफ़ेसर रसल डी'सूज़ा ने कोविड-19 महामारी के दौरान अनुसंधान करने में आने वाली नैतिक बातों और चुनौतियों पर अपनी बात प्रस्तुत की।

उन्होंने प्रतिभागियों के अधिकारों और कल्याण की रक्षा के लिए नैतिक सुरक्षा उपायों के साथ तेजी से अनुसंधान के लिए तात्कालिकता को संतुलित करने के महत्व पर चर्चा की।सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठित अनुसंधानकर्ता प्रोफ़ेसर मडलेना पैट्रिको ने अनुसंधान पद्धतियों और अध्ययन डिज़ाइनों पर कोविड-19 महामारी के प्रभाव के बारे में अपनी जानकारी साझा की।

उन्होंने बदलती परिस्थितियों के लिए अनुसंधान पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता पर चर्चा की और डेटा सटीकता और विश्वसनीयता के महत्व पर जोर दिया।:प्रोफ़ेसर डेरेक डी'सूज़ा, जो एक कुशल अकादमिक और अनुसंधानकर्ता हैं, अनुसंधान के लिए फ़ंडिंग और संसाधनों पर महामारी के प्रभाव का अवलोकन किया।

उन्होंने फ़ंडिंग हासिल करने और आवश्यक संसाधनों तक पहुंचने में अनुसंधानकर्ताओं के सामने आने वाली चुनौतियों पर चर्चा की और इन बाधाओं को नेविगेट करने के लिए रणनीतियों का प्रस्ताव दिया।डेटा विज्ञान के क्षेत्र में प्रसिद्ध विशेषज्ञ प्रोफेसर अनिमेष जैन ने कोविड-19 अनुसंधान में डेटा एनालिटिक्स और टेक्नोलॉजी की भूमिका पर एक भाषण दिया।उन्होंने महामारी के प्रभाव को समझने और साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने में मार्गदर्शन करने के लिए डेटा-संचालित दृष्टिकोणों की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

SANTOSH Deemed to be University

in Association with

United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization | UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa

DEPARTMENT OF EDUCATION, UNESCO CHAIR IN BIOETHICS, UNIVERSITY OF HAIFA

Organizing an International Webinar

PROGRAM DETAILS

Sr. No.	NAME OF THE SPEAKER	TITLE	AFFILIATION
1.	Prof. (Dr.) Jyoti Batra	Call to Attention Welcome & introduction to program	Head, Bioethics unit & Dean Research, Santosh Deemed to be University
2.	Prof. (Dr.) Russell D'Souza	Equitably Sharing the Benefits & Burdens of Research in COVID 19	Chair Education Department International Program UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa Melbourne Australia
3.	Prof. Madalena Patrico	How Medical Education faced COVID-19 pandemic situation?	Chair of Best Evidence Medical Education BEME Board for Europe Former President Association of Medical Education of Europe AMEE Department of Medical Education University of Lisbon Lisbon Portugal
4.	Prof Derek D'Souza	Ethical Challenges in Post covid world	National Head Training Indian Program UNESCO Chair in Bioethics MIMER Pune
5.	Prof Animesh Jain	Research in COVID 19	Professor of Community Medicine Head Bioethics Unit UNESCO Chair in Bioethics KMC Mangalore
6.	Dr. Rajiv Ahluwalia	Dental Ethics	Head, National Dental Bioethics Program, UNESCO Chair in Bioethics, Haifa

SANTOSH
Deemed to be University
25 Impactful years
in Association with
UNESCO
United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization
uniTwin
UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa
DEPARTMENT OF EDUCATION,
UNESCO CHAIR IN BIOETHICS, UNIVERSITY OF HAIFA
Organizing an International Webinar
Research in
COVID-19
Pandemic & Role of Bioethics
Date: Thursday, 15th October, 2020 | Time: 02:00 pm to 04:00 pm
OUR SPEAKERS
PROF. (DR.) JYOTI BATRA
Head, Bioethics unit & Dean Research, Santosh Deemed to be University
PROF. (DR.) RUSSELL D'SOUZA
Chair Education Department International Program UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa
PROF. MADALENA PATRICO
Department of Medical Education, School of Medicine, University of Lisbon
PROF. DEREK D'SOUZA
National Head Training Indian Program UNESCO Chair in Bioethics MIMER Pune
PROF. ANIMESH JAIN
Professor of Community Medicine Head Bioethics Unit UNESCO Chair in Bioethics KMC Mangalore
DR RAJIV AHLUWALIA
Head, National Dental Bioethics Program, UNESCO Chair in Bioethics, Haifa

हम उन सम्मानित वक्ताओं और विशेषज्ञों का आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने इतने कठिन समय में वेबिनार के दौरान अपने ज्ञान और विशेषज्ञता को साझा किया।आपकी बहुमूल्य जानकारी और योगदान ने चर्चाओं को समृद्ध किया और प्रतिभागियों को अनुसंधान, जैवनैतिकता और कोविड-19 महामारी के अंतर को और जानने के लिए प्रेरित किया।

PANELIST

Webinar & Lead Chair	Dr. Russell D'Saouza	Chair, Dept of Education, UNESCO Chair in Bioethics
Co-Chair	Prof. Mary Mathew	Head, Indian Program of UNESCO Chair in Bioethics
Moderator	Dr. Derek D'Souza	Advisor, National Dental Bioethics Program
	Dr. Rajiv Ahluwalia	Head, National Dental Bioethics Program, UNESCO Chair in Bloethics

S. No.	Name	Country	Designation
1	**Dr. Chad Gehani**	USA	Chad P. Gehani, D.D.S. President, American Dental Association
2	**Dr. Robert Love**	Australia	Chair of the Australasian Council of Dental Schools and Dean and Head of the School of Dentistry and Oral Health at Griffith University
3	**Dr. Peter Mossey**	Scotland	Peter Mossey Professor of Craniofacial Development, Associate Dean Internationalisation, School of Dentistry, University of Dundee
4	**Dr. Peter Wanzala**	Kenya	Dr Peter Wanzala Research Scientist at Kenya Medical Research Institute (KEMRI),
5	**Dr. Prathip Phantumvanit**	Thailand	PrathipPhantumvanit Former-Dean, Faculty of Dentistry, Thammasat University, Thailand. Founder-Chair, Asian Chief Dental Officers Meeting (ACDOM) Expert-Panel on Oral Health, World Health Organization (WHO)
6	**Dr. Nilantha Ratnayake**	Srilanka	Dr. Nilantha Ratnayake Consultant in Community Dentistry Ministry of Health, Sri Lanka
7	**Shaili Pradhan**	Nepal	Dr Shaili Pradhan Chief Consultant Dental Surgeon Prof and Head Department of Dental Surgery Bir Hospital, NAMS Founder President, NSPOI President, NADR
8	**Dr. OP Kharbanda**	India	Dr CG Pandit National Chair Indian Council of Medical Research New Delhi 110029

कोविड-19 महामारी के विरुद्ध वैश्विक गठबंधन

जैसे-जैसे दुनिया कोविड-19 महामारी से जूझ रही है, दंत चिकित्सा पेशे को अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष के हालिया वैश्विक वेबिनार में महामारी के मद्देनजर फिर से उभरने की रणनीतियों के नैतिक पहलुओं पर चर्चा की गई।इस लेख में, हम वेबिनार में चर्चा की गई मुख्य बातों को संक्षेप में बताएँगे और दंत पेशे के भविष्य के बारे में जानकारी देंगे।

वेबिनार चर्चा की शुरुआत दिल्ली में भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के डॉ. खरबंदा ने की थी, जिन्होंने दंत चिकित्सा क्लिनिक जाने से होने वाले जोखिमों के बारे में चिंता जताई थी।उन्होंने पूछा कि क्या दंत चिकित्सा क्लीनिक में आना सुरक्षित है और क्लीनिक में काम करने वालों के लिए यह कितना सुरक्षित है।अमेरिकन दंत चिकित्सा संघ के वर्तमान अध्यक्ष, डॉ. चाड गेहानी ने यह पूछकर चर्चा में इजाफा किया कि अगर कोई मरीज़ इलाज के कुछ दिनों बाद कोविड-19 पॉजिटिव आता है, तो क्या होगा और क्या वेटिंग रूम में मौजूद लोगों को सूचित किया जाना चाहिए।

भिन्न देशों के अन्य वक्ताओं ने भी अपने अनुभव और चिंताएं साझा कीं।श्रीलंका से डॉ. निलंथा रत्नायके ने बताया कि दंत चिकित्सा सेवाएं फिलहाल केवल आपातकालीन मामलों के लिए प्रदान की जाती हैं, और सुरक्षित व्यवहार के लिए दिशानिर्देश जारी किए गए हैं।ऑस्ट्रेलिया की ग्रिफ़िथ विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर रॉबर्ट लव ने ऑनलाइन दंत चिकित्सा शिक्षा के बारे में चर्चा की, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि यह अच्छा काम कर रहा है लेकिन परीक्षाओं के लिए चुनौतियां पैदा कर रहा है।

स्कॉटलैंड में डंडी विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर पीटर मोसी ने डेंटल एरोसोल और दंत चिकित्सा प्रक्रियाओं के दौरान ट्रांसमिशन की संभावना के मुद्दे को उठाया।

वक्ताओं ने इस चुनौतीपूर्ण समय में स्पष्ट वैश्विक दिशानिर्देशों की आवश्यकता के बारे में भी चर्चा की।उदाहरण के लिए, नेपाल में, आपातकालीन मामलों को छोड़कर दंत चिकित्सा बंद हो गई है, जिससे कई उपचार योग्य स्थितियां अधर में लटकी हुई हैं।बैंकॉक की थम्मसैट विश्वविद्यालय के डॉ. प्रथमेप फंटुमवनीत ने बताया कि थाईलैंड की स्थिति इतनी खराब नहीं है, लेकिन वहां ट्रांसमिशन को लेकर चिंता है।निजी दंत चिकित्सा क्लिनिक एक महत्वपूर्ण समस्या है, और इस पर अधिक चर्चा और सरल अंतर-राष्ट्रीय दिशानिर्देशों की आवश्यकता है।

वक्ताओं ने टेलीमेडिसिन और टेली दंत चिकित्सा के उपयोग पर भी चर्चा की।मरीज इलाज चाहते हैं, लेकिन गलत इलाज और जरूरत से ज्यादा इलाज का खतरा रहता है।डॉ. खरबंदा ने टेली-दंत चिकित्सा और इसकी वैधता का मुद्दा उठाया, जबकि डॉ. गेहानी ने वेबिनार को याद दिलाया कि मरीज़ पहले आते हैं क्योंकि दंत चिकित्सक मरीज़ के लिए बाध्य होते हैं।वक्ताओं ने भविष्य की दंत चिकित्सा पद्धति और स्वास्थ्य योजना की दिशा पर भी चर्चा की।प्रोफेसर लव ने दंत चिकित्सा के भविष्य में विश्वास व्यक्त किया, हालांकि विशेष रूप से प्री-ऑपरेटिव क्षेत्र में बदलाव होंगे।

सामाजिक दूरी और पी.पी.ई. दिशानिर्देशों में ढील दी जाएगी और दंत चिकित्सा का वैश्वीकरण होगा। हालाँकि, वे नैतिक मुद्दों के बारे में चिंतित थे जहाँ दाँत संबंधी समझौता और जोखिम का आकलन होता है, और उचित दिशा-निर्देश उचित विज्ञान पर आधारित होने चाहिए।

वेबिनार में उठाई गई महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है दांतों की प्रक्रियाओं के दौरान संक्रमण का जोखिम। स्कॉटलैंड में डंडी विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर पीटर मोसी ने डेंटल एरोसोल और दंत चिकित्सा प्रक्रियाओं के दौरान ट्रांसमिशन की संभावना के मुद्दे को उठाया। दंत चिकित्सा पेशेवर यह सुनिश्चित करने के लिए सभी ज़रूरी सावधानियां बरत रहे हैं कि मरीज़ और स्वास्थ्य कर्मचारी सुरक्षित रहें। मरीज़ों को दंत चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करते समय सुरक्षा के सभी उपायों का पालन करना ज़रूरी है।

वक्ताओं ने मरीज़ों की सुरक्षा के महत्व, साफ़ वैश्विक दिशा-निर्देशों और दंत चिकित्सकों द्वारा अपने मरीज़ों की ज़रूरतों को प्राथमिकता देने की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया। दंत चिकित्सालयों को सरकार और दंत चिकित्सा संघों द्वारा जारी सभी सुरक्षा दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि मरीज़ और स्वास्थ्यकर्मी सुरक्षित रहें। मरीज़ों की सुरक्षा हर दंत चिकित्सा क्लिनिक की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए, और मरीज़ों को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें सभी ज़रूरी सावधानियां बरतनी चाहिए।

अंत में, दंत चिकित्सा के पेशे को कोविड-19 महामारी के कारण आए बदलते समय के अनुकूल होना चाहिए। हालांकि चिंताएं और चुनौतियां हैं, लेकिन नवाचार और एकजुटता के लिए भी अवसर हैं। जैवनैतिकता वेबिनार में यूनेस्को अध्यक्ष के वक्ताओं ने मरीज़ों की सुरक्षा के महत्व, स्पष्ट वैश्विक दिशा-निर्देशों और अपने मरीज़ों की ज़रूरतों को प्राथमिकता देने के लिए दंत चिकित्सकों की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। दंत चिकित्सा का भविष्य उज्ज्वल है, और यह पेशा सार्वजनिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

कोविड-19 महामारी दंत चिकित्सा पेशे के लिए अभूतपूर्व चुनौतियां लेकर आई है, जिसमें दंत चिकित्सा क्लिनिक संक्रमण के सबसे ज़्यादा जोखिम वाले क्षेत्रों में से एक हैं। महामारी के चलते दंत उद्योग को अनोखी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, और जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष ने फिर से उभरने की रणनीतियों के नैतिक पहलुओं पर चर्चा करने के लिए एक वैश्विक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार ने अलग-अलग देशों के विशेषज्ञों को एक साथ लाया, ताकि वे आगे के रास्ते के बारे में अपने अनुभव और चिंताओं को साझा कर सकें।

जैवनैतिकता की सीमाओं को बढ़ावा देना

संतोष डेंटल कॉलेज, संतोष मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय के ऑर्थोडॉन्टिक्स विभाग के भीतर स्थित राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई ने गर्व से "इथियोस्कोप" का पहला संस्करण पेश किया। यह सम्मानित न्यूज़लेटर देश में जैवनैतिकता के क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई कमेटी के निरंतर प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

इथियोस्कोप ज्ञान प्रदान करने और अपने पाठकों को जैवनैतिकता के क्षेत्र में नवीनतम विकास, कहानियों, अनुसंधान और विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में जानकारी देने के लिए बनाया गया है। स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान देने के साथ, इस न्यूज़लेटर का उद्देश्य स्वास्थ्य देखभाल विशेषज्ञों को अपनी मान्यताओं को बताने के लिए एक मंच प्रदान करना है, जिससे नैतिक सिद्धांतों पर सोच-समझकर चर्चा की सुविधा मिलती है।

सही और गलत को पहचानने में जैवनैतिकता का मूलभूत महत्व, खासकर स्वास्थ्य देखभाल में, इथियोस्कोप की आधारशिला है। पाठकों को जैवनैतिकता विचारों की व्यापक समझ प्रदान करके, यह न्यूज़लेटर उन जैवनैतिकतावादी को विकसित करने का प्रयास करता है, जिनके पास स्वास्थ्य देखभाल में विशेषज्ञता के साथ-साथ नैतिक निर्णय की गहरी समझ होती है। इथियोस्कोप के पन्नों के अंदर, पाठकों को आकर्षक सामग्री का खजाना मिलेगा। आकर्षक लेख, विचारोत्तेजक निबंध और विशेषज्ञों की राय जैवनैतिकता के विषयों की एक विस्तृत रेंज पर विविध दृष्टिकोण प्रदान करती है। जाने-माने विद्वान, चिकित्सकों और छात्र सहित सम्मानित योगदानकर्ता, जैवनैतिक अन्वेषण की एक समृद्ध टेपेस्ट्री बनाते हुए अपनी अंतर्दृष्टि, अनुभव और अनुसंधान के नतीजों को साझा करते हैं।

इथियोस्कोप न सिर्फ़ जानकारी देता है, बल्कि पाठकों को स्वास्थ्य देखभाल में नैतिकता के बारे में बातचीत में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित भी करता है। इस न्यूज़लेटर के ज़रिए, लोगों को अपनी विश्वासों को व्यक्त करने का अवसर मिलता है, जो स्वास्थ्य देखभाल के पेशे में जटिल नैतिक चुनौतियों से निपटने के लिए समर्पित एक जीवंत समुदाय में योगदान देता है।

जैसे ही इथियोस्कोप ने अपना उद्घाटन संस्करण लॉन्च किया, इसने पाठकों को ज्ञान और आलोचनात्मक सोच की रोमांचक यात्रा शुरू करने के लिए आमंत्रित किया। जानकारी प्रसारित करके, महत्वपूर्ण विश्लेषण को बढ़ावा देकर और सहयोगात्मक सहभागिता को बढ़ावा देकर, इथियोस्कोप का उद्देश्य कॉलेज के भीतर और उसके बाहर जैवनैतिकता के विकास को बढ़ावा देना है।

इथियोस्कोप के आने वाले संस्करणों की उम्मीद करें, जो नैतिक ज्ञान के मार्ग को रोशन करते रहेंगे। समाचार पत्र नैतिक मार्ग दर्शक बनने के लिए पाठकों को सशक्त बनाने की आकांक्षा रखता है, जो नैतिक विचारों को प्राथमिकता देने वाली पद्धतियों की दिशा में स्वास्थ्य देखभाल पेशे का मार्गदर्शन करता है।

साथ में, आइए हम जैवनैतिकता के क्षेत्र में खोज की यात्रा शुरू करें, जो नैतिक स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों के लिए एक सामूहिक जुनून को प्रज्वलित करती है।

जैवनैतिकता की सीमाओं को बढ़ावा देना

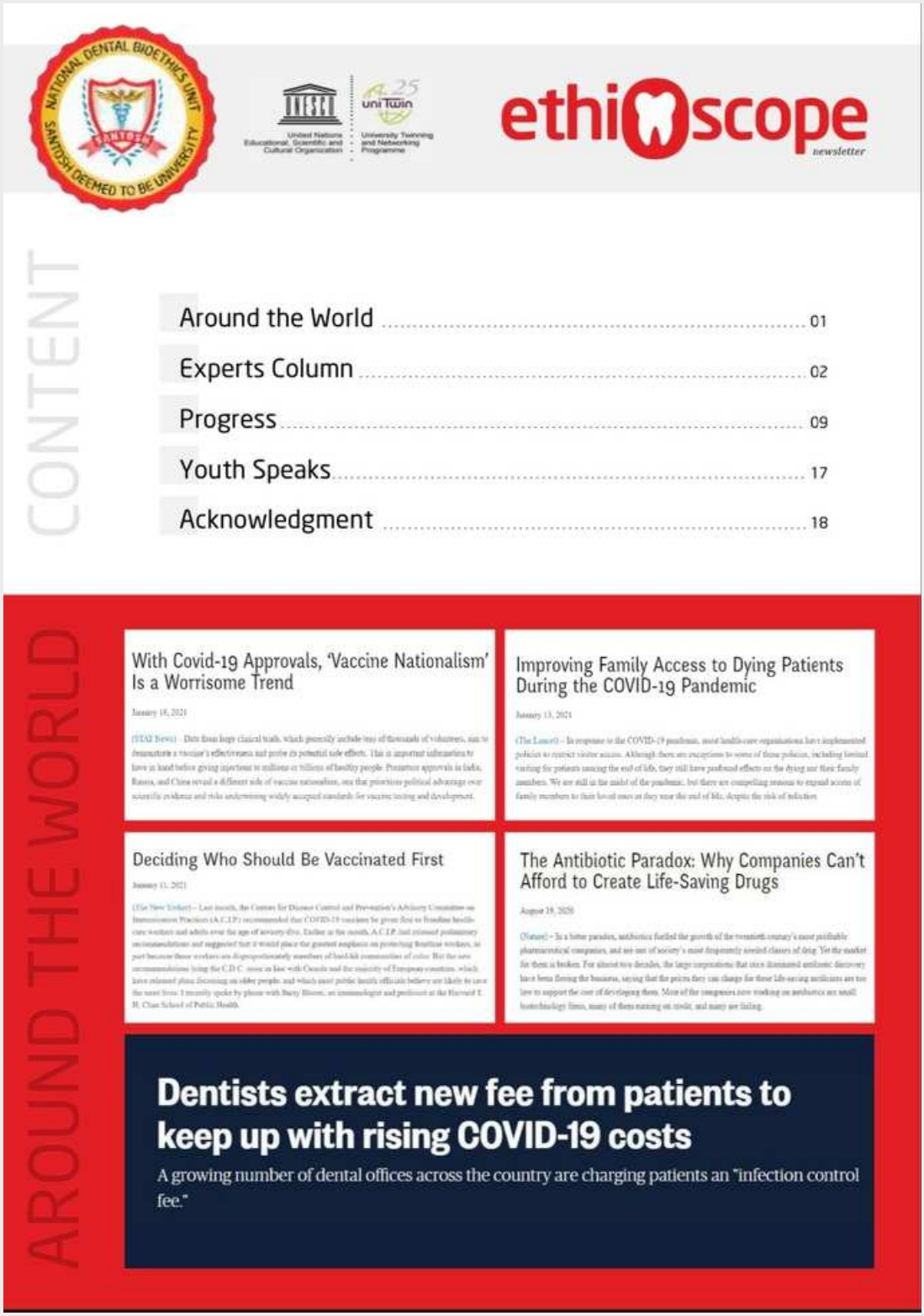

ethiscope
newsletter

CONTENT

Around the World 01
Experts Column 02
Progress 09
Youth Speaks 17
Acknowledgment 18

AROUND THE WORLD

With Covid-19 Approvals, 'Vaccine Nationalism' Is a Worrisome Trend

Improving Family Access to Dying Patients During the COVID-19 Pandemic

Deciding Who Should Be Vaccinated First

The Antibiotic Paradox: Why Companies Can't Afford to Create Life-Saving Drugs

Dentists extract new fee from patients to keep up with rising COVID-19 costs

A growing number of dental offices across the country are charging patients an "infection control fee."

इथियोस्कोप की संपादकीय टीम

समर्पण और जुनून के शानदार प्रदर्शन के साथ, दंत चिकित्सा के युवा जैवनैतिकता के क्षेत्र में बदलाव के लिए उत्प्रेरक के रूप में उभरे हैं। "इथियोस्कोप" की संपादकीय टीम इन युवाओं के अविश्वसनीय प्रयासों को उजागर करने में बहुत गर्व महसूस करती है, जिन्होंने राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता कार्यक्रम को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में मदद की है, जो हमारे देश के हर कोने में व्याप्त है। उनकी अटूट प्रतिबद्धता और उत्साह हम सभी के लिए प्रेरणा का काम करते हैं, जो हमें बेहतर भविष्य बनाने में सामूहिक कार्रवाई की ताकत की याद दिलाते हैं।

इस संबंध में, 5 ज़ोन निर्दिष्ट किए गए थे और दंत चिकित्सा के युवा इसमें शामिल हैं।

इस न्यूज़लेटर के आने वाले अंक में, वे एक नया प्रश्नोत्तर सेक्शन पेश करेंगे, जो दंत चिकित्सा जैवनैतिकता के बारे में आपके सवालों और चिंताओं को दूर करने के लिए समर्पित है। टीम ने सम्मानित विशेषज्ञों का एक पैनल बनाया है, जिनके पास जैवनैतिकता के क्षेत्र में गहन ज्ञान और अनुभव है। उनका गहरी पहुँच वाला मार्गदर्शन आपको दंत चिकित्सा में आने वाली नैतिक चुनौतियों के बारे में एक व्यापक दृष्टिकोण हासिल करने में मदद करेगा और आपको उन्हें प्रभावी ढंग से नेविगेट करने के लिए आवश्यक टूल से लैस करेगा। हम सभी पाठकों को सक्रिय रूप से भाग लेने और इस महत्वपूर्ण अवसर का ज़्यादा से ज़्यादा लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

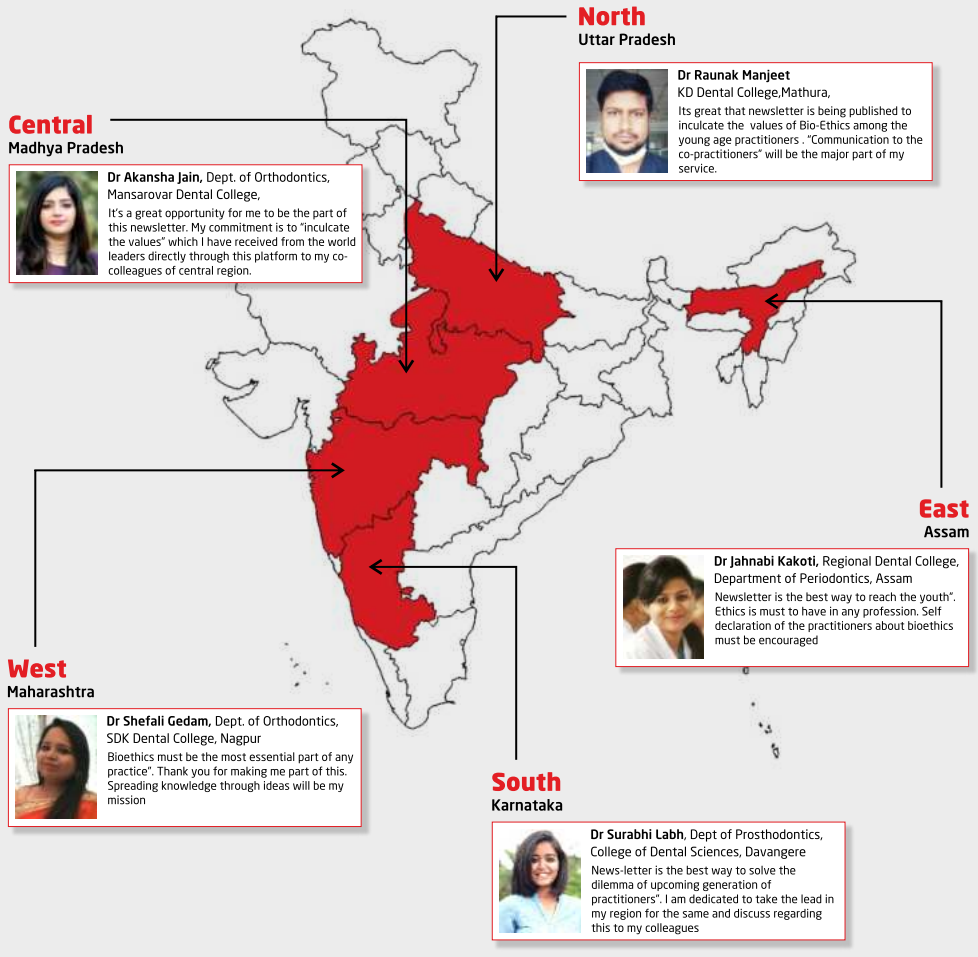

हमारे संस्थान की संपादकीय टीम

राष्ट्रीय दंत जैवनैतिकता प्रोग्राम समिति के प्रयासों के साथ, हम खुशी से राष्ट्रीय दंत बायोएथिक्स प्रोग्राम के पहले न्यूजलेटर 'एथिओस्कोप' के अवगमन का साझा कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य इस न्यूजलेटर के माध्यम से पाठकों को बायोएथिक्स की जानकारी प्रदान करना है और उन्हें क्षेत्र में विभिन्न दृष्टिकोणों से कहानियों, अनुसंधानों, और रायों के साथ अपडेट रखना है। 'एथिओस्कोप' उन पाठकों के लिए समर्पित है जो स्वास्थ्य क्षेत्र में नैतिकता के बारे में अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करना।

मुझसे क्षमा करें। डॉ. रसेल डी'सूजा (शिक्षा विभाग के अध्यक्ष, यूनेस्को बायोथिक्स चेयर) के लिए हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं उनके स्थिर समर्थन, प्रेरणा और मार्गदर्शन के लिए और इस समर्थन के लिए कि उन्होंने हमें बायोथिक्स के इस श्रेष्ठ कारण पर काम करने का यह अवसर दिया। हम उनके नेतृत्व में काम करने का भाग्यशाली महसूस करते हैं, डॉ. राजीव अहलुवालिया (राष्ट्रीय दन्त बायोथिक्स प्रोग्राम के हेड, यूनेस्को बायोथिक्स चेयर, हैफा) के नेतृत्व में, जिनकी न्यूज़लेटर के लिए दृष्टिकोण ने सब कुछ संभव बना दिया है।

संपादकीय टीम:
फैकल्टी : डॉ. कुमार अमित
छात्र : डॉ. ऋधि अग्रवाल
डॉ. अंकित
डॉ. श्रेयाष गुप्ता

प्रकाशक :
राष्ट्रीय दन्त नैतिकीय इकाई
आपदंतशास्त्र विभाग
संतोष दन्त विद्यालय
संतोष स्वयं महाविद्यालय
1, संतोष नगर, प्रताप विहार, गाजियाबाद - 201009

जैवनैतिकता में अनुसंधान

इस प्रतिबद्धता के अनुरूप, हमें स्वास्थ्य कर्मियों के बीच नैतिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक ज़बरदस्त अवधारणा के विकास की घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है। जाने-माने पेशेवरों के विशेषज्ञ मार्गदर्शन में जैवनैतिकता मापदंडों पर स्व-मूल्यांकन के लिए एक व्यापक ढांचा तैयार किया गया है। यह दस्तावेज़, जो अब कॉपीराइट द्वारा सुरक्षित है, स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों में जैवनैतिकता के एकीकरण को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

Copyright Office
Government of India

सत्यमेव जयते

Extracts from the Register of Copyrights

Dated : 09/10/2020

1.	Registration Number	: L-95536/2020
2.	Name, address and nationality of the applicant	: SANTOSH DEEMED TO BE UNIVERSITY , GHAZIABAD UTTAR PRADASH-201009 INDIAN
3.	Nature of the applicant's interest in the copyright of the work	: OWNER
4.	Class and description of the work	: LITERARY/ DRAMATIC WORK
5.	Title of the work	: ETHICAL SCORE
6.	Language of the work	: ENGLISH
7.	Name, address and nationality of the author and if the author is deceased, date of his decease	: DR RAJIV AHLUWALIA , SANTOSH DEEMED TO BE UNIVERSITY GHAZIABAD UTTAR PRADASH-201009 INDIAN DR. RIDHI AGGARWAL , SANTOSH DEEMED TO BE UNIVERSITY GHAZIABAD UTTAR PRADASH-201009 INDIAN
8.	Whether the work is published or unpublished	: UNPUBLISHED
9.	Year and country of first publication and name, address and nationality of the publisher	: N.A.
10.	Years and countries of subsequent publications, if any, and names, addresses and nationalities of the publishers	: N.A.
11.	Names, addresses and nationalities of the owners of various rights comprising the copyright in the work and the extent of rights held by each, together with particulars of assignments and licences, if any	: SANTOSH DEEMED TO BE UNIVERSITY , GHAZIABAD UTTAR PRADASH-201009 INDIAN
12.	Names, addresses and nationalities of other persons, if any, authorised to assign or licence of rights comprising the copyright	: N.A.
13.	If the work is an 'Artistic work', the location of the original work, including name, address and nationality of the person in possession of the work. (In the case of an architectural work, the year of completion of the work should also be shown).	: N.A.
14.	If the work is an 'Artistic work' which is used or capable of being used in relation to any goods or services, the application should include a certification from the Registrar of Trade Marks in terms of the provision to Sub-Section (i) of Section 45 of the Copyright Act, 1957	: N.A.
15.	If the work is an 'Artistic work', whether it is registered under the Designs Act 2000 if yes give details.	: N.A.
16.	If the work is an 'Artistic work', capable of being registered as a design under the Designs Act 2000,whether it has been applied to an article though an industrial process and ,if yes ,the number of times it is reproduced.	: N.A.
17.	Remarks, if any	:

Diary Number : 12614/2020-CO/L
Date of Application : 03/09/2020
Date of Receipt : 03/09/2020

DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHTS

COPYRIGHT OFFICE GOVT. OF INDIA

समझौता प्रमाणपत्र

जैवनैतिकता को बढ़ावा देने और व्यापक दर्शकों तक पहुंचने के हमारे निरंतर प्रयासों में, हमें प्रमुख पेशेवर संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर करने की घोषणा करते हुए बेहद खुशी हो रही है। इन एम.ओ.यू. ने इन संघों को सम्मानित ज्ञान भागीदारों के रूप में स्थापित किया है, जिससे उनके सदस्यों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए सहयोगात्मक प्रयास किए जा सकते हैं। अतिथि व्याख्यान, अतिथि संपादकीय और वेबिनार सहित कई गतिविधियों के ज़रिए, हमारा लक्ष्य पेशेवरों के एक जीवंत समुदाय को बढ़ावा देना है, जो अपने-अपने क्षेत्रों में नैतिक अभ्यासों के लिए समर्पित हैं।

भारतीय ऑर्थोडॉन्टिक्स सोसाइटी के साथ समझौता ज्ञापन:

यह सहयोग इस क्षेत्र के अलग-अलग पेशेवरों की विशेषज्ञता और संसाधनों को इकट्ठा करता है, जिससे सभी के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान और नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा मिलता है। जाने-माने विशेषज्ञों द्वारा अतिथि व्याख्यान, विचारोत्तेजक अतिथि संपादकीय और आकर्षक वेबिनार के माध्यम से, हमारा लक्ष्य उनके पेशेवर समुदाय में जैवनैतिकता के बारे में जागरूकता और समझ को बढ़ाना है।

भारतीय प्रोस्थोडॉन्टिक सोसायटी के साथ समझौता ज्ञापन:

हम इस समझौता ज्ञापन को स्थापित करके सम्मानित महसूस कर रहे हैं, जो नैतिक स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों के लिए प्रतिबद्ध एक बेहद सम्मानित पेशेवर संघ है। यह साझेदारी उनकी सदस्यता के अंदर जागरूकता बढ़ाने और जैव-नैतिक विचारों को बढ़ावा देने के लिए कई सहयोगात्मक अवसरों के द्वार खोलती है। जानकारीपूर्ण अतिथि व्याख्यान, विचार नेतृत्व अतिथि संपादकीय और इंटरैक्टिव वेबिनार के जरिए, हमारा लक्ष्य जैवनैतिक चुनौतियों और समाधानों के प्रति व्यापक दृष्टिकोण के साथ सभी को सशक्त बनाना है। जैवनैतिकता के क्षेत्र में इन सम्मानित पेशेवर संघों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करना सहयोगात्मक प्रयासों को बढ़ावा देने और पेशेवरों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँचने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्हें ज्ञान भागीदार के रूप में स्थापित करके, हमारे विश्वविद्यालय का उद्देश्य छात्रों के बीच जैवनैतिकता के साथ जागरूकता, समझ और जुड़ाव को बढ़ावा देना है। अतिथि व्याख्यान, अतिथि संपादकीय और वेबिनार के माध्यम से ज्ञान के आदान-प्रदान के ज़रिए, हम नैतिक पद्धतियों के लिए प्रतिबद्ध पेशेवरों के एक समुदाय को विकसित करने और उनके संबंधित क्षेत्रों में जैवनैतिकता की

इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ ओरल एंड मैक्सिलोफ़ेशियल पैथोलॉजिस्ट के साथ समझौता ज्ञापन

यह सहयोग ओरल और मैक्सिलोफ़ेशियल पैथोलॉजी के क्षेत्र में विभिन्न पेशेवरों की विशेषज्ञता और संसाधनों को एक साथ लाता है, ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है और इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ ओरल एंड मैक्सिलोफ़ेशियल पैथोलॉजिस्ट के अंदर नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देता है। अतिथि व्याख्यानों, विचारोत्तेजक संपादकीय और जाने-माने विशेषज्ञों की दिलचस्प वेबिनार के ज़रिए, हमारा उद्देश्य जैवनैतिकता के बारे में जागरूकता और समझ बढ़ाना है, हमारे पेशेवर समुदाय को उनकी पद्धतियों के बारे में सूचित और नैतिक निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाना है।

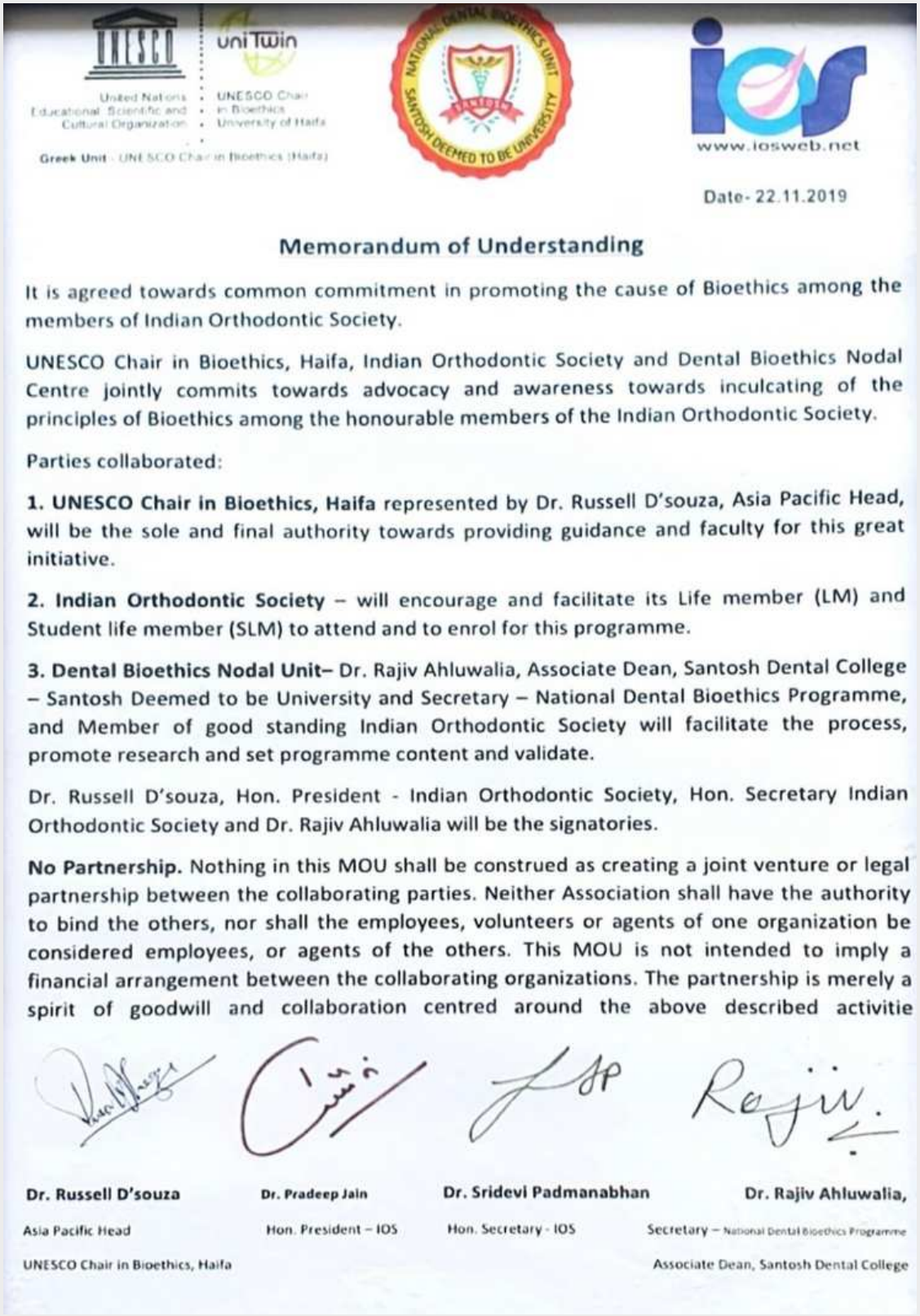

United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization · UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa

Greek Unit - UNESCO Chair in Bioethics (Haifa)

www.iosweb.net

Date- 22.11.2019

Memorandum of Understanding

It is agreed towards common commitment in promoting the cause of Bioethics among the members of Indian Orthodontic Society.

UNESCO Chair in Bioethics, Haifa, Indian Orthodontic Society and Dental Bioethics Nodal Centre jointly commits towards advocacy and awareness towards inculcating of the principles of Bioethics among the honourable members of the Indian Orthodontic Society.

Parties collaborated:

1. **UNESCO Chair in Bioethics, Haifa** represented by Dr. Russell D'souza, Asia Pacific Head, will be the sole and final authority towards providing guidance and faculty for this great initiative.

2. **Indian Orthodontic Society** – will encourage and facilitate its Life member (LM) and Student life member (SLM) to attend and to enrol for this programme.

3. **Dental Bioethics Nodal Unit–** Dr. Rajiv Ahluwalia, Associate Dean, Santosh Dental College – Santosh Deemed to be University and Secretary – National Dental Bioethics Programme, and Member of good standing Indian Orthodontic Society will facilitate the process, promote research and set programme content and validate.

Dr. Russell D'souza, Hon. President - Indian Orthodontic Society, Hon. Secretary Indian Orthodontic Society and Dr. Rajiv Ahluwalia will be the signatories.

No Partnership. Nothing in this MOU shall be construed as creating a joint venture or legal partnership between the collaborating parties. Neither Association shall have the authority to bind the others, nor shall the employees, volunteers or agents of one organization be considered employees, or agents of the others. This MOU is not intended to imply a financial arrangement between the collaborating organizations. The partnership is merely a spirit of goodwill and collaboration centred around the above described activitie

Dr. Russell D'souza	**Dr. Pradeep Jain**	**Dr. Sridevi Padmanabhan**	**Dr. Rajiv Ahluwalia,**
Asia Pacific Head	Hon. President – IOS	Hon. Secretary - IOS	Secretary – National Dental Bioethics Programme
UNESCO Chair in Bioethics, Haifa			Associate Dean, Santosh Dental College

समझौता प्रमाणपत्र

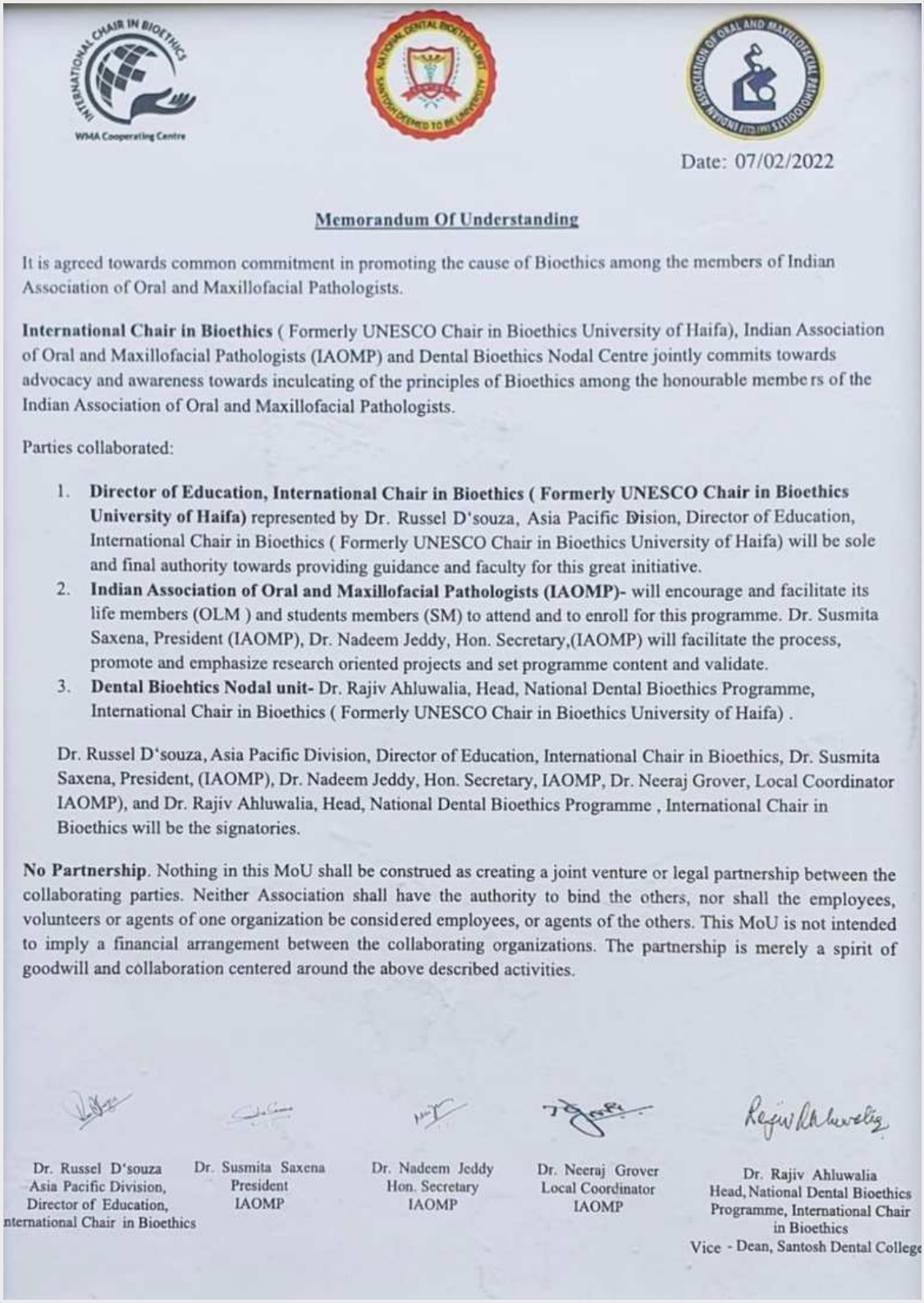

Date: 07/02/2022

Memorandum Of Understanding

It is agreed towards common commitment in promoting the cause of Bioethics among the members of Indian Association of Oral and Maxillofacial Pathologists.

International Chair in Bioethics (Formerly UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa), Indian Association of Oral and Maxillofacial Pathologists (IAOMP) and Dental Bioethics Nodal Centre jointly commits towards advocacy and awareness towards inculcating of the principles of Bioethics among the honourable members of the Indian Association of Oral and Maxillofacial Pathologists.

Parties collaborated:

1. **Director of Education, International Chair in Bioethics (Formerly UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa)** represented by Dr. Russel D'souza, Asia Pacific Division, Director of Education, International Chair in Bioethics (Formerly UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa) will be sole and final authority towards providing guidance and faculty for this great initiative.
2. **Indian Association of Oral and Maxillofacial Pathologists (IAOMP)-** will encourage and facilitate its life members (OLM) and students members (SM) to attend and to enroll for this programme. Dr. Susmita Saxena, President (IAOMP), Dr. Nadeem Jeddy, Hon. Secretary,(IAOMP) will facilitate the process, promote and emphasize research oriented projects and set programme content and validate.
3. **Dental Bioehtics Nodal unit-** Dr. Rajiv Ahluwalia, Head, National Dental Bioethics Programme, International Chair in Bioethics (Formerly UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa) .

Dr. Russel D'souza, Asia Pacific Division, Director of Education, International Chair in Bioethics, Dr. Susmita Saxena, President, (IAOMP), Dr. Nadeem Jeddy, Hon. Secretary, IAOMP, Dr. Neeraj Grover, Local Coordinator IAOMP), and Dr. Rajiv Ahluwalia, Head, National Dental Bioethics Programme , International Chair in Bioethics will be the signatories.

No Partnership. Nothing in this MoU shall be construed as creating a joint venture or legal partnership between the collaborating parties. Neither Association shall have the authority to bind the others, nor shall the employees, volunteers or agents of one organization be considered employees, or agents of the others. This MoU is not intended to imply a financial arrangement between the collaborating organizations. The partnership is merely a spirit of goodwill and collaboration centered around the above described activities.

Dr. Russel D'souza
Asia Pacific Division,
Director of Education,
nternational Chair in Bioethics

Dr. Susmita Saxena
President
IAOMP

Dr. Nadeem Jeddy
Hon. Secretary
IAOMP

Dr. Neeraj Grover
Local Coordinator
IAOMP

Dr. Rajiv Ahluwalia
Head, National Dental Bioethics
Programme, International Chair
in Bioethics
Vice - Dean, Santosh Dental Colleg

समझौता प्रमाणपत्र

United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization

UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa

Greek Unit - UNESCO Chair in Bioethics (Haifa)

Memorandum of Understanding

Date- 4.4.2020

It is agreed towards common commitment in promoting the cause of Bioethics among the members of Indian Prosthodontic Society.

UNESCO Chair in Bioethics, Haifa, Indian Prosthodontic Society (IPS) and Dental Bioethics Nodal Centre jointly commits towards advocacy and awareness towards inculcating of the principles of Bioethics among the honourable members of the Indian Prosthodontic Society.

Parties collaborated:

1. **UNESCO Chair in Bioethics, Haifa** represented by Dr. Russell D'souza, Asia Pacific Head, will be the sole and final authority towards providing guidance and faculty for this great initiative.

2. **Indian Prosthodontic Society (IPS)** – will encourage and facilitate its Life member (LM) and Student life member (SLM) to attend and to enrol for this programme.

3. **Dental Bioethics Nodal Unit**– Dr. Rajiv Ahluwalia, Secretary – National Dental Bioethics Programme, Dr. Akshay Bhargava, President-Elect, Indian Prosthodontic Society, Dr. N. Gopi Chander, Editor, Indian Prosthodontic Society will facilitate the process, promote research and set programme content and validate.

Dr. Russell D'souza, Asia Pacific head, UNESCO Chair in Bioethics, Haifa, Dr. J.R. Patel, Hon. President - Indian Prosthodontic Society, Dr.P.L. Rupesh, Hon. Secretary Indian Prosthodontic Society and Dr. Rajiv Ahluwalia ,Secretary- National Dental Bioethics Program will be the signatories.

No Partnership. Nothing in this MOU shall be construed as creating a joint venture or legal partnership between the collaborating parties. Neither Association shall have the authority to bind the others, nor shall the employees, volunteers or agents of one organization be considered employees, or agents of the others. This MOU is not intended to imply a financial arrangement between the collaborating organizations. The partnership is merely a spirit of goodwill and collaboration centred around the above described activities.

Dr. Russell D'souza	Dr. J.R. Patel	Dr. P.L. Rupesh	Dr. Rajiv Ahluwalia,
Asia Pacific Head UNESCO Chair in Bioethics, Haifa	Hon. President – IPS	Hon. Secretary - IPS	Secretary – National Dental Bioethics Programme

जैवनैतिकता में प्रस्तुतियां

Sn o.	Name of presentation	Event
1	Ethical responsibilities of an orthodontist (Poster presentation)	National PG convention
	Bioethics- the Legal perspective (Paper presentation)	UNSECO Chair in Bioethics, Haifa Bioethicon, Chennai
1	The ethical gap	IOS conference Kochi
2	What Would A Good Orthodontist Do- Ethical Reflection	IOS PG convention ITS Greater Noida
3	What Would A Good Orthodontist Do- Ethical Reflection	AIIMS conference
4	The Ethical gap	North zone PG convention, Jamia Islamia, Delhi
5	Bioethics lecture-orientation program PHD students	UNSECO Chair in Bioethics, Haifa Santosh Deemed to be University
6	Bioethics lecture-orientation program MBBS 1styr students	UNSECO Chair in Bioethics, Haifa Santosh Deemed to be University
7	Bioethics and communication	UNSECO Chair in Bioethics, Haifa Bioethicon, Chennai
8	Ensuring Bioethical Practice For Cleft Patients	UNSECO Chair in Bioethics, Haifa Indocleft Con 2020, Delhi

जैवनैतिकता में प्रकाशन

S.No.	Name of Article	Journal
1	Forgotten ethics	Dental practice
2	The ethics gap (editorial)	Journal of Indian Orthodontic Society
3	Beneficence or bucks	Global Bioethics Enquiry
4	What should a good orthodontist do?	Journal of Contemporary Orthodontics
5	Bioethical dilemmas in Covid - 19 era	Global Bioethics Enquiry

Guest Editorial

Importance of ethics in oral pathology

I feel extreme pleasure to share with you all that our association Indian Association of Oral and Maxillofacial Pathologists and International Chair in Bioethics (Formerly UNESCO Chair in Bioethics University of Haifa) have recently signed an Memorandum of Understanding (MOU) and jointly commits to promoting the cause of Bioethics as well as advocacy and awareness towards the principles of Bioethics among the honourable members of our association.

The term ethics refers to moral philosophy or a set of moral principles that regulate what is right, good, virtuous, true, and just, as defined by a culture or society.[1] Health care professionals always have the ethical responsibility to act in the best interest of the patient.

In addition to the standard moral and practice values published by Accredited Social Health Activistand other professional organizations, there are additional values that are relevant to medical ethics in both clinical care and research.[2-5] These include the following:

- Autonomy
- Beneficence
- Nonmaleficence
- Justice
- Dignity
- Truthfulness and Honesty.

AUTONOMY

The value of autonomy refers to the patient's (or the guardian's) right to be actively involved in making decisions about his or her own medical care. As oral pathologist, we describe the importance of various procedures as well as their drawbacks and give the decision making power to the patients to choose their preferred treatment plan.

BENEFICENCE

It is a core value of health care because it involves actions that result in the well-being of others. The health care professional has the ethical responsibility to act in the best interest of the patient at all times. As oral pathologists, we have a responsibility to ourselves for the best outcome for the patient of society at large.

NON-MALEFICENCE

The word maleficence means doing harm or evil. Therefore, it is best described by the phrase "first do no harm.". The health care practitioner must be reasonably sure that the patient will get benefit from the treatment prior to recommending the treatment. In histopathology laboratories nowadays, the lab technician uses a "sink test" for a small sample.

Sink testing is a form of laboratory diagnostics healthcare fraud where clinical specimens are discarded, via a sink drain and fabricated results are reported, without the clinical specimen actually being tested.[6] Giving a wrong report is doing harm to the patient health as the treatment of the patient will depend upon the reports of tests.

JUSTICE

It is the right of all individuals to have equal and fair access to health care resources. In a society where not all citizens have access to health care insurance, this value is often an ethical challenge for health care organisations and providers.

In oral pathology, there are many instances during the tissue processing that can lead to artifacts in the slides. Due to this, sometimes it might be difficult for an oral pathologist to give an exact diagnosis. Therefore, the pathologist must do justice to the patient by giving a correct diagnosis.

© 2022 Journal of Oral and Maxillofacial Pathology | Published by Wolters Kluwer - Medknow

डॉ. नीरज ग्रोवर
ओरल एवं मैक्सिलोफेशियल पैथोलॉजी विभाग

Guest Editorial

Aligners: Why NOT?

Journal of Indian Orthodontic Society
56(1) 11–12, 2022
© The Author(s) 2022
Reprints and permissions
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/03015742221076311
journals.sagepub.com/home/ijo
SAGE

Why NOT may mean that aligners are accepted as preferred treatment modality.

Why NOT may also mean why this modality should be discouraged as a possible treatment. This editorial focuses on that.

Aligners are a way of moving teeth into desirable positions and provide an esthetic alternate to conventional braces. Much has been published about its success. Also, the company has been successful in its "direct to patients" campaign and more patients are opting for it.

As per claims, more than 2 million patients were treated with a leading aligner provider. It would be fair to approximate that around more than 20 million aligner sets would have been produced till now (including other aligners providers with an average of 10 set per patient). This amount of the plastic generated from aligners will be soon enough to cover entire city of Mumbai, Spain, New York, Beijing, and so on in coming times. Adverse effects and environmental hazards from aligner usage are a reality. However, these are underreported and both professionals and patients are unaware of it.

This editorial is to draw your attention to the flip side of treatment with aligners.

Well-documented adverse effects that are reported include difficulty in breathing, sore throat, swollen throat, swollen tongue, swollen lips, hives and itchiness, anaphylaxis, airway obstruction/laryngospasm, chest pain, cough, nausea, difficulty swallowing, dry mouth, headaches, swelling of eyes, blisters or sores of lips, fatigue, burning blisters or ulcerations on tongue, swelling of gums, airway obstruction, and many more.[1] These were reported on MAUDE website, USA (Manufacturer and User Facility Device Experience) database. Despite these, no change in marketing or treatment strategy is reported by the manufacturers.

In an in vitro cytotoxicity study, oral epithelial cells exposed to Invisalign aligners eluate showed increase cell death, compromised membrane integrity, and reduced cell-to-cell contact and mobility which may be the mechanism for isocyanate allergy.[1]

Plastic is an established environmental hazard. It basically harms animals through entanglement and ingestion at all levels of the food chain. More than 50% of the oxygen we breathe is provided by phytoplankton that is living on the surface of the oceans. It is made up of plant microorganisms and is capable, through photosynthesis, of making organic matter from light, carbon dioxide, and nutrients, and releasing oxygen into the air. As the planet's "thermostat," it exchanges energy and heat with the atmosphere.[1]

Plastics break down into smaller pieces called microplastics, which act as poison for the plankton. Destruction of these organisms abrupt the environment's mechanism to maintain temperatures and hence leads to global warming.

Plastic may move teeth, but is terrible for the environment.

—Kevin Dillard

As per World Environment meet,[2] an ambitious target of restricting the global warming to 1.5° as acceptable increase in temperature by 2030 was agreed upon. The pressure is on the developed countries to lead by example. Citizens need to be more aware of the impending doom if they do not directly take responsibility. As orthodontists, we need to be more aware of our environment and seek alternate treatment modalities other than plastic.

Aligners contribute immensely to plastic production (aligners trays for patients and thermoplastic 3-dimensional (3D) models on which aligners are fabricated). Both are single-use plastic which cannot be recycled and hence are accumulating in the environment. Various thermoplastic materials, or combinations of materials, are being used for fabrication of 3D models. These include polyvinyl chloride, polyurethane, polyethylene terephthalate, and polyethylene terephthalate glycol.

Also, environment (mouth has harsh environment) induces changes in plastic and the additive agent bisphenol A (BPA) is released. It is a known carcinogen as it alters cell membrane properties and enables mutation. BPA is an industrial component commonly used in synthesis of polycarbonate plastics, epoxy resin, and other polymer materials (3D models). The underlying mechanisms of BPA-induced multiorgan toxicity are well summarized, involving the receptor pathways, disruption of neuroendocrine system, inhibition of enzymes, modulation of immune and

डॉ. राजीव आहलूवालिया
ऑर्थोडॉन्टिक्स एवं डेंटोफ़ेशियल ऑर्थोपेडिक्स विभाग

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के द्वारा मान्यता

राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई को दिसंबर 2022 में आयोजित प्रतिष्ठित GATEC सम्मेलन में भाग लेने का सौभाग्य मिला। दंत चिकित्सा में नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक अग्रणी संगठन के रूप में मान्यता प्राप्त, राष्ट्रीय दंत चिकित्सा जैवनैतिकता इकाई को इस सम्मानित कार्यक्रम के दौरान एक वर्कशॉप आयोजित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस सम्मेलन को भारत सरकार के प्रमुख मंत्रालयों से सहायता मिली और इसका आयोजन प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा किया गया था। इसके अलावा, इसने संतोष विश्वविद्यालय और IDEA का समर्थन प्राप्त किया, जिससे जैव-नैतिकता के क्षेत्र में इसका महत्व और बढ़ गया।

सम्मेलन का समर्थन:

दंत चिकित्सा में नैतिक पद्धतियों और नवाचार के महत्व को स्वीकार करते हुए GATEC सम्मेलन 2022 को विभिन्न सरकारी मंत्रालयों से बहुमूल्य समर्थन मिला। समर्थन शामिल थे:

1. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार : विदेश मंत्रालय ने जैव-नैतिकता के क्षेत्र में वैश्विक भागीदारी और सहयोग को बढ़ावा देने में GATEC सम्मेलन के महत्व को स्वीकार किया।

2. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार : सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने GATEC सम्मेलन का समर्थन करके समावेशी स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की, जो दंत चिकित्सा में नैतिक विचारों पर केंद्रित थी।

3. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार: सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय ने दंत चिकित्सा के क्षेत्र में नवाचार और उद्यमिता की संभावनाओं को पहचाना और GATEC सम्मेलन का समर्थन किया, जिससे नैतिक और टिकाऊ दंत चिकित्सा पद्धतियों के विकास को बढ़ावा मिला।

4. डी.आर.डी.ओ., रक्षा मंत्रालय, भारत सरकारः रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने दंत चिकित्सा में नैतिक पद्धतियों की भूमिका को स्वीकार किया और दंत चिकित्सा में जैवनैतिकता में प्रगति को प्रोत्साहित करने के लिए GATEC सम्मेलन का समर्थन किया।

सम्मेलन के आयोजक:

GATEC सम्मेलन 2022 का आयोजन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध संगठनों द्वारा किया गया था, जो स्वास्थ्य सेवा में प्रगति और उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आयोजन संस्थाओं में शामिल थेः

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू.एच.ओ.): सार्वजनिक स्वास्थ्य में एक वैश्विक प्राधिकरण के तौर पर, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने GATEC सम्मेलन के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें दंत चिकित्सा में जैव-नैतिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए दुनिया भर के विशेषज्ञों और चिकित्सकों को एक साथ लाया गया।

2. भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.): भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, जो भारत का एक प्रमुख चिकित्सा अनुसंधान संगठन है, ने GATEC सम्मेलन को अपनी विशेषज्ञता और सहायता दी, जिसमें दंत स्वास्थ्य देखभाल में साक्ष्य-आधारित जैवनैतिकता के महत्व पर प्रकाश डाला गया है

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के द्वारा मान्यता

3. I-स्टेम: I स्टेम, मूल कोशिका विज्ञान और पुनर्योजी चिकित्सा के लिए संस्थान, ने GATEC सम्मेलन के आयोजन में योगदान दिया, जिसमें दंत चिकित्सा में नैतिक विचारों और वैज्ञानिक प्रगति के एकीकरण पर ज़ोर दिया गया।

सम्मेलन अनुमोदन:

GATEC सम्मेलन 2022 को नैतिक पद्धतियों को बढ़ावा देने और स्वास्थ्य सेवा में प्रगति को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध प्रतिष्ठित संस्थानों का समर्थन मिला। इन अनुमोदनों में निम्नलिखित शामिल हैं:

1. संतोष विश्वविद्यालय: संतोष विश्वविद्यालय, दंत शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए अपनी प्रतिबद्धता के लिए प्रसिद्ध, GATEC सम्मेलन का समर्थन करता है, जैव-नैतिकता को बढ़ावा देने और दंत चिकित्सा के क्षेत्र को आगे बढ़ाने में इसके मूल्य को पहचानता है।

2. IDEA: दंत चिकित्सा में नैतिक पद्धतियों और कानूनी ढांचे को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठन, जिसने दंत चिकित्सा पेशे के नैतिक परिदृश्य को आकार देने में इसके महत्व को स्वीकार करते हुए GATEC सम्मेलन का समर्थन किया।

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के द्वारा मान्यता

GATEC
Global Assistive Technology Expo & Conference

Supported By

To,
Dr Rajiv Ahluwalia
Head,National Dental Bioethics Program,Unesco Chair in Bioethics,Haifa
National Dental Bioethics Unit,Dept of Orthodontics
Santosh Dental College
Santosh deemed to be University

18th Aug,2022

Sub: Invitation to conduct Workshop on Bioethical aspects in Assistive Technology (Global Assistive Technology Expo & Conference) 07 – 09 from December at GMR Ground Aerocity, New Delhi

We are pleased to inform you that **SHESpro** is organising the mega event called **"Global Assistive Technology Expo & Conference 2022" to be held on 07th – 09th December, at GMR Aerocity, New Delhi**. The event is planned to discuss the possibilities of Assistive Technologies with a vision to create a world where all people have equal opportunity for full participation in society.

We are planning to organise pre-conference workshops for younger colleagues in the related fields with the objective to create trained human resources. On behalf of Dr. Ravinder Singh, I would request you to plan a Pre-conference workshop in your area of expertise, which would enable our participants to gain knowledge from your vast experience in the field.

The Suggested Topic for your workshop is "***Bioethics in Assistive Technology***".You may modify the title as per your requirement.

The date for the workshop to be conducted by you and your team will be on 6th Dec, 2022 with 2 slots available between 9 am-1 pm : Morning slot and 2 pm-6 pm :Evening slot. You may choose any one of the slots.

Shall you have any queries about the conference/workshop or need more details about GATEC 2022, you may kindly contact: Dr Deepti Khanna, Project Head, Email: deepti@iconex.in and Mobile: +91 9354744580.

The potential participants who are likely to be benefitted from this workshop, may register through the website link https://globalassistivetech.com/. Also it is requested that you may encourage and promote your work among fellow colleagues, researchers, academicians, students, contacts etc.

Looking forward to a successful program.
Best Regards,

Dr. Ravinder Singh
Co-Chairman, GATEC
Indian Council of Medical Research

GATEC SECRETARIAT:
B-181, Ground Floor, East of Kailash, New Delhi - 110065
Email: info@globalassistivetech.com • Tel: 011 4912 2344
Web: www.globalassistivetech.com

Organised By — Managed By — iCONEX

पैनलिस्ट की सूची

S.No.	Name	Country	Contact Number	E-mail	Introduction
1	Dr. OP Kharbanda	India		dr.opk15@gmail.com	
2	Dr. Nilantha Ratnayake	SriLanka	+94 714 317312	nilantha.ratnayake @yahoo.com	Dr. Nilantha Ratnayake is a Consultant in Community Dentistry attached to the Ministry of Health, Sri Lanka. A member of the COVID-19 Technical committee at the Ministry of Health and involved in the preparation of national guidelines for dentistry during COVID-19 in Sri Lanka
3	Dr. Prathip Phantumvanit	Thailand	66818330273	prathipphan @gmail.com	Bioethics in health professionals are vital since we are dealing with human life and dentists are no different to medical physicians and others. Besides bioethics for the best oral health leading to overall health of the patients and community, in this COVID-19 pandemic serious precautions for aerosol transmission in the dental clinic to prevent infections to the next patients and/or dental personnel's is highly concerned.
4	Dr. Peter Mossey	Scotland	+44 7900 897560	p.a.mossey @dundee.ac.uk	Professor Peter Mossey is a Consultant Orthodontist, Chair of Orthodontics and Associate Dean for Internationalization, Dundee Dental School. He is current President of International Association for Dental Research (IADR) Global Oral Health Inequalities Research Network (GOHIRA) and Chair of the IADR Science Information Committee (SIC), an expert on the International Dental Federation (FDI) Vision 2030 Committee and a leader in establishing international collaborations on clinical, epidemiologic, environmental and genetic approaches to Cleft lip and palate and other craniofacial anomalies and is Advisor to the WHO on these matters.
5	Shaili Pradhan	Nepal	+9779851037888	shaili_p@yahoo.com	Chief Consultant Dental Surgeon, National Academy of Medical Sciences, Ministry of Health, Government of Nepal Founder Presidents of Nepalese Society of Periodontology and Oral Implantology (NSPOI) and Nepal Association for Dental Research (NADR)
6	Dr. Chad Gehani	USA	+9779851037888	gehanic@ada.org	Professor Chad P. Gehani teaches at New York University ,President of The American Dental Association , Received Ellis Island Medal of Honor recognized by The United States Congress. A Proud American who was made in India .
7	Dr. Peter Wanzala	Kenya		wanzap2003 @yahoo.com	
8	Dr. Robert Love	Australia		r.love@griffith.edu.au	

दंत चिकित्सा आचार संहिता

A. घोषणापत्र:

हर दंत चिकित्सक, जो पंजीकृत हो गया है (या तो राज्य दंत चिकित्सक रजिस्टर के पार्ट A या पार्ट B में), इन विनियमों के लागू होने की तारीख से तीस दिनों की अवधि के भीतर, और हर दंत चिकित्सक जो इन विनियमों के लागू होने के बाद ख़ुद को पंजीकृत कर लेता है, वह पंजीकरण के तीस दिनों के भीतर, राज्य दंत चिकित्सा परिषद के रजिस्ट्रार के समक्ष, इन विनियमों की अनुसूची में इस उद्देश्य के लिए निर्धारित फ़ॉर्म में एक घोषणा करेगा और उसे पढ़ने, समझने और इसका पालन करने के लिए सहमत होगा।

2

B. सामान्य रूप से दंत चिकित्सकों के कर्तव्य और दायित्व

3.1 दंतचिकित्सक/दंत सर्जन का चरित्र

ओरल कैविटी की बीमारियों के सर्जिकल और चिकित्सा उपचार में शिक्षित और प्रशिक्षित एक स्वास्थ्य पेशेवर के रूप में एक दंत चिकित्सक / दंत सर्जन की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, वह करेंगे:

(3.1.1) अपने मिशन के उच्च चरित्र और एक स्वतंत्र स्वास्थ्य-देखभाल पेशेवर के रूप में अपने कर्तव्यों के निर्वहन में उनकी जिम्मेदारियों के प्रति सचेत रहें और हमेशा याद रखें कि रोगी की देखभाल और बीमारी का इलाज उसके द्वारा दिखाए गए कौशल और तुरंत ध्यान देने पर निर्भर करता है और हमेशा याद रखना चाहिए कि उसकी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा, पेशेवर क्षमता और निष्ठा ही उसकी सबसे अच्छी सिफारिशें बनी हुई हैं;

(3.1.2)मरीज़ों की भलाई को अन्य सभी बातों के लिए सर्वोपरि मानें और अपनी क्षमता के अनुसार इसे बनाए रखें;
(3.1.3) विनम्र, सहानुभूतिपूर्ण, मिलनसार और उनके मरीजों की कॉल का जवाब देने के लिए हमेशा तैयार रहें और सभी परिस्थितियों में अपने मरीजों और जनता के प्रति उनका व्यवहार विनम्र और सम्मानजनक रहे;

3.2 अच्छी नैदानिक पद्धतियों को बनाए रखना:

दंत चिकित्सा व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य पेशे और मनुष्य की गरिमा के प्रति पूरे सम्मान के साथ मानवता की सेवा करना है। दंत चिकित्सकों को अपनी देखभाल के लिए सौंपे गए मरीज़ों के विश्वास के योग्य होना चाहिए, प्रत्येक को सेवा और समर्पण का एक पूरा उपाय प्रदान करना चाहिए। उन्हें चिकित्सा ज्ञान और कौशल में सुधार करने के लिए लगातार प्रयास करना चाहिए और अपने मरीजों और सहकर्मियों को अपनी पेशेवर उपलब्धियों का लाभ देना चाहिए। दंत चिकित्सक / दंत सर्जन को वैज्ञानिक आधार पर चिकित्सा के तरीकों का इस्तेमाल करना चाहिए और इस सिद्धांत का उल्लंघन करने वाले किसी भी व्यक्ति के साथ पेशेवर रूप से जुड़ना नहीं चाहिए। दंत चिकित्सा पेशे के सम्मानित आदर्शों का तात्पर्य यह है कि दंत चिकित्सा पेशेवरों की जिम्मेदारियां न केवल व्यक्तियों बल्कि समाज तक भी फैली हुई हैं।

(3.2.1) दंत चिकित्सा व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य पेशे और मनुष्य की गरिमा के प्रति पूरे सम्मान के साथ मानवता की सेवा करना है। दंत चिकित्सकों को अपनी देखभाल के लिए सौंपे गए मरीज़ों के विश्वास के योग्य होना चाहिए, प्रत्येक को सेवा और समर्पण का एक पूरा उपाय प्रदान करना चाहिए।

उन्हें चिकित्सा ज्ञान और कौशल में सुधार करने के लिए लगातार प्रयास करना चाहिए और अपने मरीजों और सहकर्मियों को अपनी पेशेवर उपलब्धियों का लाभ देना चाहिए। दंत चिकित्सक / दंत सर्जन को वैज्ञानिक आधार पर चिकित्सा के तरीकों का इस्तेमाल करना चाहिए और इस सिद्धांत का उल्लंघन करने वाले किसी भी व्यक्ति के साथ पेशेवर रूप से जुड़ना नहीं चाहिए। दंत चिकित्सा पेशे के सम्मानित आदर्शों का तात्पर्य यह है कि दंत चिकित्सा पेशेवरों की जिम्मेदारियां न केवल व्यक्तियों बल्कि समाज तक भी फैली हुई हैं।

(3.2.2) दंत चिकित्सा और चिकित्सा संघों और समाजों में सदस्यता: अपने पेशे को आगे बढ़ाने के लिए, दंत सर्जन को दंत चिकित्सा, मौखिक और संबद्ध चिकित्सा पेशेवरों के संघों और समाजों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और विशेष रूप से मौखिक स्वास्थ्य और सामान्य रूप से किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

(3.2.3) एक दंत चिकित्सक/दंत सर्जन को समय-समय पर वैधानिक निकायों द्वारा बनाए गए विनियमों के अनुसार निरंतर दंत चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों/वैज्ञानिक सेमिनार/कार्यशालाओं के हिस्से के रूप में पेशेवर बैठकों में भाग लेकर अपने पेशेवर ज्ञान को समृद्ध करना चाहिए और उन्हें किसी भी अनिवार्य आवश्यकता को निर्धारित अनुसार राज्य पंजीकरण निकायों या किसी अन्य निकाय के साथ पंजीकृत करना चाहिए।

3

3.3 दंत चिकित्सा / चिकित्सा रिकॉर्ड का रखरखाव:

(3.3.1) हर दंत सर्जन अपने बाह्य मरीजों और आंतरिक मरीजों (जहां भी लागू हो) से संबंधित प्रासंगिक रिकॉर्ड बनाए रखेगा। इन रिकॉर्ड को काउंसिल द्वारा निर्धारित फ़ॉर्मेट में इलाज शुरू होने की तारीख से कम से कम तीन साल की अवधि के लिए सुरक्षित रखा जाना चाहिए या दस्तावेज़ीकरण के मानक तरीके के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

(3.3.2) अगर मरीजों/अधिकृत अटेंडेंट या कानूनी अधिकारियों द्वारा चिकित्सा या दंत रिकॉर्ड के लिए कोई अनुरोध किया जाता है, तो सभी दस्तावेज़ों की वैध रसीद मिलने के 72 घंटों के भीतर सक्षम प्राधिकारी को जारी किया जा सकता है। ऐसे सबमिशन की प्रमाणित फ़ोटोकॉपी/कार्बन कॉपियां अपने पास रखना समझदारी की बात है।

(3.3.3) एक पंजीकृत दंत चिकित्सक के पास चिकित्सा प्रमाणपत्र का एक रजिस्टर होगा, जिसमें जारी किए गए प्रमाणपत्रों की पूरी जानकारी होगी। चिकित्सा प्रमाणपत्र जारी करते समय वह हमेशा मरीज़ के पहचान चिह्न दर्ज करेगा और प्रमाणपत्र की एक कॉपी अपने पास रखेगा। वह चिकित्सा प्रमाण पत्र या रिपोर्ट पर मरीज़ के हस्ताक्षर और / या अंगूठे के निशान, पते और कम से कम एक पहचान चिह्न को रिकॉर्ड करने से नहीं चूकेगा। चिकित्सा प्रमाण पत्र इस दस्तावेज के परिशिष्ट 2, संशोधित दंत चिकित्सक आचार संहिता विनियम, 2012 के रूप में तैयार किया जाएगा।

(3.3.4) दंत चिकित्सा / चिकित्सा रिकॉर्ड को डिजिटल बनाने की कोशिश की जाएगी, ताकि उन्हें तुरंत ठीक किया जा सके।

3.4 रजिस्ट्रेशन नंबर प्रदर्शित करना:

(3.4.1) हर दंत चिकित्सक अपने क्लिनिक में राज्य दंत चिकित्सा परिषद द्वारा दिए गए रजिस्ट्रेशन नंबर को अपने मरीजों को दिए गए सभी प्रिस्क्रिप्शन, प्रमाणपत्रों और पैसों की रसीदों में दिखाएगा।

(3.4.2) दंत चिकित्सक केवल मान्यता प्राप्त दंत चिकित्सा डिग्री जो परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त हैं या इस तरह के प्रमाण पत्र / डिप्लोमा और सदस्यता / सम्मान / फैलोशिप जो परिषद द्वारा अनुमोदित मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों / मान्यता प्राप्त निकायों द्वारा प्रदान की जाती हैं और व्यक्तिगत रूप से या अनुपस्थिति में दीक्षांत समारोह द्वारा द्वारा प्राप्त किये गये हैं, उन्हें अपने नाम के साथ प्रत्यय के रूप में प्रदर्शित करेंगे कोई भी अन्य योग्यता जैसे मेडिकल डिग्री, डॉक्टरेट, पोस्ट-डॉक्टोरल डिग्री या कोई भी डिग्री जो व्यक्ति के ज्ञान या अनुकरणीय योग्यता पर असर डालती हो, उसे प्रत्यय के रूप में इस तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे पर्यवेक्षक या मरीज को दंत चिकित्सा पेशेवर के रूप में चिकित्सक के ज्ञान या क्षमता के बारे में गलत धारणा न मिले। एसोसिएशन या पेशेवरों के संगठनों में सदस्यता के संक्षिप्त रूपों का इस्तेमाल ऐसे तरीके से नहीं किया जाना चाहिए जो जनता को गुमराह कर सके [प्रासंगिक जानकारी के लिए इस दस्तावेज़ का अनुच्छेद 8.9.3, संशोधित दंत चिकित्सक आचार संहिता विनियम, 2012 देखें]।

.5 दवाओं का प्रिस्क्रिप्शन:

हर दंत सर्जन को ज़िम्मेदारी से दवा लिखने और देने का ध्यान रखना चाहिए और दवाओं का सुरक्षित और तर्कसंगत इस्तेमाल सुनिश्चित करना चाहिए। जहाँ तक संभव हो, उन्हें जेनेरिक रूप में दवाएँ लिखनी चाहिए।

4 5 दवाओं का प्रिस्क्रिप्शन:

हर दंत सर्जन को ज़िम्मेदारी से दवा लिखने और देने का ध्यान रखना चाहिए और दवाओं का सुरक्षित और तर्कसंगत इस्तेमाल सुनिश्चित करना चाहिए। जहाँ तक संभव हो, उन्हें जेनेरिक रूप में दवाएँ लिखनी चाहिए।

3.6 मरीज़ों की देखभाल में सबसे अच्छी गुणवत्ता का आश्वासन:

हर दंत चिकित्सक को गुणवत्तापूर्ण इलाज सुनिश्चित करना चाहिए, जिससे इलाज के नतीजे से कोई समझौता न हो। उन्हें अन्य चिकित्सकों द्वारा किए जाने वाले कदाचार के बारे में सतर्क रहना चाहिए, जिससे दूसरों की जान खतरे में पड़ सकती है और जिससे जनता को नुकसान हो सकता है। सभी चिकित्सकों को अयोग्य व्यक्तियों द्वारा किए जाने वाले अनैतिक व्यवहारों और पद्धतियों के बारे में पता होना चाहिए। दंत चिकित्सक / दंत सर्जन अपने पेशेवर अभ्यास के संबंध में किसी भी ऐसे अटेंडेड को नियुक्त नहीं करेंगे जो न तो दंत चिकित्सक अधिनियम के तहत पंजीकृत है और न ही उन्हें सूचीबद्ध किया गया है और जहाँ भी पेशेवर विवेक या कौशल की आवश्यकता होती है, ऐसे लोगों को मरीज़ों के पास जाने, उनका इलाज करने या ऑपरेशन करने की अनुमति नहीं देगा।

3.7 अनैतिक आचरण का पर्दाफाश:

एक दंत सर्जन को बिना किसी डर या पक्ष के, पेशे के सदस्यों की ओर से अक्षम या भ्रष्ट, बेईमान या अनैतिक आचरण का पर्दाफाश करना चाहिए।

दंत सर्जन की ज़िम्मेदारी है कि वह सक्षम अधिकारियों की नीरसता के मामलों और किसी भी तरह के दुर्व्यवहार के मामलों, जिसमें डॉक्टर-मरीज़ के साथ यौन दुराचार, भरोसेमंद रिश्ते का दुरुपयोग, बाल दुर्व्यवहार और अन्य सामाजिक बुराइयाँ शामिल हैं, जो उनके ध्यान में आ सकती हैं, उनकी रिपोर्ट करें।

3.8 पेशेवर सेवाओं का भुगतान:

दंत चिकित्सक, जो अपने पेशे का अभ्यास कर रहे हैं, मरीजों के हितों को प्राथमिकता देंगे। एक दंत सर्जन के निजी वित्तीय हितों का मरीजों के चिकित्सकीय हितों से टकराव नहीं होना चाहिए। दंत चिकित्सक को सेवा देने से पहले अपनी फीस की घोषणा करनी चाहिए, न कि ऑपरेशन या इलाज के बाद। इस तरह की सेवाओं के लिए मिलने वाला पारिश्रमिक उस फ़ॉर्म और राशि में होना चाहिए, जिसकी घोषणा ख़ासतौर पर मरीज़ को सेवा दिए जाने के समय की गई थी। "कोई इलाज नहीं - कोई भुगतान नहीं" का अनुबंध करना अनैतिक है।

राज्य की ओर से सेवा प्रदान करने वाले दंत सर्जन किसी भी विचार का पूर्वानुमान लगाने या उसे स्वीकार करने से परहेज करेंगे। जबकि साथी दंत चिकित्सा या चिकित्सा पेशेवरों और उनके नजदीकी परिवार को मुफ़्त में परामर्श देना अनिवार्य नहीं है, लेकिन जिन स्थितियों में कोई खास खर्च नहीं होता है, उन्हें मुफ़्त या रियायती दर पर परामर्श और इलाज देना शिष्टाचार माना जाएगा।

3.9 विधियों का अवलोकन:

दंत सर्जन दंत चिकित्सक अधिनियम 1948 और उसमें किए गए संशोधनों सहित अपने पेशे के अभ्यास को विनियमित करने के लिए देश के कानूनों का पालन करेंगे और ऐसे कानूनों से बचने में दूसरों की मदद नहीं करेंगे। उन्हें सार्वजनिक स्वास्थ्य के हित में सैनिटरी कानूनों और विनियमों के पालन और उन्हें लागू करने में सहयोग करना चाहिए। उन्हें औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940; फार्मेसी अधिनियम, 1948;स्वापक औषधि और मन:प्रभावी पदार्थ अधिनियम, 1985; पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986; औषधि और जादुई उपचार (आपत्तिजनक विज्ञापन) अधिनियम, 1954; विकलांग व्यक्ति (समान अवसर और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 और जैव - चिकित्सा अपशिष्ट (प्रबंधन और प्रबंधन) नियम, 1998 और केंद्र/राज्य सरकारों या स्थानीय प्रशासनिक निकायों द्वारा बनाए गए ऐसे ही अन्य अधिनियम, नियम, विनियम या सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा और संवर्धन से संबंधित कोई अन्य प्रासंगिक अधिनियम जैसे राज्य अधिनियमों के प्रावधानों का पालन करना चाहिए।

5

3.10 पेशेवर प्रमाणपत्र, रिपोर्ट और अन्य दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करना:

एक पंजीकृत दंत सर्जन दंत चिकित्सा और मौखिक शल्य चिकित्सा के उपचार में स्वतंत्र रूप से शामिल है

एकीकृत जैवनैतिकता बीडीएस. पाठ्यक्रम

फर्स्ट ईयर बी.डी.एस पाठ्यक्रम

जैवनैतिकता के इतिहास और विकास और मूलभूत सिद्धांतों के साथ-साथ सामान्य शरीर रचना से जुड़ी जैवनैतिक अवधारणाओं पर ध्यान दिया जाएगा, जिसमें भ्रूणविज्ञान और ऊतक विज्ञान ; जैव रसायन, पोषण और आहार विज्ञान सहित सामान्य मानव शरीर विज्ञान; और दंत शरीर रचना विज्ञान, भ्रूणविज्ञान और मौखिक ऊतक विज्ञान शामिल हैं।

भ्रूणविज्ञान और ऊतक विज्ञान सहित सामान्य मानव शरीर रचना विज्ञान।

- शव से संबंधित नैतिक मुद्दे
- निजता गोपनीयता
- मानवीय गरिमा और सम्मान
- मानवीय गरिमा और सम्मान
- आनुवंशिक परामर्श
- Øप्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम

सामान्य मानव शरीर क्रिया विज्ञान और जैव रसायन, पोषण और आहार विज्ञान।

- पशु नैतिकता
- अनुसंधान नैतिकता
- अनुसंधान नैतिकता
- स्वास्थ्य नीति
- परीक्षणों और परिणामों के संबंध में निजता गोपनीयता
- जांच की विवेकशीलता
- जांच सामग्री का निपटान सत्यनिष्ठा
- फीस बंटवारा
- आनुवंशिक रूप से संशोधित पौधे और जानवर

दंत शरीर रचना विज्ञान, भ्रूणविज्ञान और मौखिक ऊतक विज्ञान।

- नमूनों, दांतों आदि से संबंधित नैतिक समस्याएं
- ऊतकों और अंगों का निपटान
- परीक्षण, रिपोर्ट की निजता गोपनीयता

दंत चिकित्सा सामग्री:

- बायोकम्पैटिबिलिटी
- जैव सामग्री और जैव सुरक्षा
- नैदानिक परीक्षण और अनुसंधान
- स्वदेशी सामग्री / सस्ती सामग्री
- दंत चिकित्सा सामग्री के स्रोत, विशेषकर ग्राफ्ट और प्रत्यारोपण

प्रीक्लिनिकल प्रोस्थोडोंटिक्स और क्राउन एंड ब्रिज।

- निजता और गोपनीयता
- मरीजों का सम्मान
- मरीज का सम्मान
- उपचार योजना के नैतिक मुद्दे
- तकनीशियन अधिकार

द्वितीय वर्ष बी.डी.एस. पाठ्यक्रम

छात्रों को विशिष्ट जैव-नैतिक अवधारणाओं जैसे कि लाभकारी, गैर-दुर्भावना, न्याय और स्वायत्तता, सूचित सहमति और मौखिक स्वास्थ्य सेवा सेटिंग पर लागू होने वाले पेशेवर आचार संहिता जैसी अवधारणाओं को सिखाया जाएगा। दंत चिकित्सा सामग्री के शिक्षण के साथ-साथ जैव सुरक्षा और शोध नैतिकता की अवधारणाओं को पर्याप्त रूप से शामिल किया जाएगा।

सामान्य पैथोलॉजी और माइक्रोबायोलॉजी।

- जांच की विवेकशीलता
- निजता और गोपनीयता
- रक्त आधान एवं परीक्षण
- जांच सामग्री का संग्रह और निपटान
- खोजी सामग्री का मालिकाना हक
- अस्पताल कचरा प्रबंधन
- तकनीशियन अधिकार

सामान्य और दंत औषध विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान:

- तर्कसंगत दवा का उपयोग और प्रिस्क्राइबिंग
- क्लिनिकल परीक्षण
- पशु नैतिकता
- दवाओं की बर्बादी का प्रबंधन और निपटान
- औषधि सूचना सेवाएँ
- पॉली फार्मेसी
- फायदा और नुकसान

दंत चिकित्सा सामग्री:

- जैव अनुकूलता
- जैव सामग्री और जैव सुरक्षा
- नैदानिक परीक्षण और अनुसंधान
- स्वदेशी सामग्री / सस्ती सामग्री
- दंत चिकित्सा सामग्री के स्रोत, विशेषकर ग्राफ्ट और प्रत्यारोपण

एकीकृत जैवनैतिकता बीडीएस. पाठ्यक्रम

प्रीक्लिनिकल रूढ़िवादी दंत चिकित्सा।

- निजता और गोपनीयता
- मरीजों का सम्मान
- सामग्री का चयन
- उपचार योजना के नैतिक मुद्दे
- सूचित सहमति

प्रीक्लिनिकल प्रोस्थोडोंटिक्स और क्राउन एंड ब्रिज।

- निजता और गोपनीयता
- निजता और गोपनीयता
- सामग्री का चयन
- उपचार योजना के नैतिक मुद्दे
- सूचित सहमति
- तकनीशियन अधिकार

एकीकृत जैवनैतिकता बी.डी.एस. पाठ्यक्रम

- मौखिक पैथोलॉजी और मौखिक माइक्रोबायोलॉजी।
- जांच की विवेकशीलता
- निजता और गोपनीयता
- रक्त आधान एवं परीक्षण
- जांच सामग्री का संग्रह और निपटान
- खोजी सामग्री का मालिकाना हक
- आनुवंशिक अनुसंधान
- स्टेम कोशिका अनुसंधान
- स्टेम कोशिकाओं की बायो-बैंकिंग
- तकनीशियन अधिकार
- दवा प्रतिरोधक क्षमता
- रोगाणुनाशन और हाथ धोना
- पर्यावरण की चिंता

थर्ड ईयर बी.डी.एस.

छात्रों को मेडिसिन और सर्जरी में क्लीनिकल सेटिंग्स की ओर रुख करना होगा और साथ ही वे विभिन्न क्लिनिकल अंडरग्रेजुएट डेंटल डिपार्टमेंट में रोटेशन पर रहेंगे।

इस तरह बेडसाइड नैतिकता, बुरी खबर देना, जीवन की शुरुआत और जीवन के अंत से जुड़ी समस्याओं के विषयों को आदर्श रूप से छात्रों के नियमित पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा।

जनरल मेडिसिन:

- तर्कसंगत दवा का इस्तेमाल
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- फायदा और नुकसान
- बुरी खबर देना
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- सूचित सहमति
- सामान्य सर्जरी।
- तर्कसंगत दवा का इस्तेमाल
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- फायदा और नुकसान
- ब्रेन डेथ
- अंग प्रत्यारोपण
- बुरी खबर देना
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- सूचित सहमति
- इलाज की निरर्थकता
- जीवन की समस्याओं का अंत
- प्रशामक देखभाल
- मौखिक पैथोलॉजी और मौखिक माइक्रोबायोलॉजी।
- जांच की विवेकशीलता
- निजता और गोपनीयता
- रक्त आधान एवं परीक्षण
- जांच सामग्री का संग्रह और निपटान
- खोजी सामग्री का मालिकाना हक
- आनुवंशिक अनुसंधान
- स्टेम कोशिका अनुसंधान
- स्टेम कोशिकाओं की बायो-बैंकिंग
- दवा प्रतिरोधक क्षमता
- रोगाणुनाशन और हाथ धोना
- रूढ़िवादी दंत चिकित्सा और एंडोडोंटिक्स।
- तर्कसंगत दवा का इस्तेमाल
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- फायदा और नुकसान
- बुरी खबर देना
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- सूचित सहमति
- इलाज की निरर्थकता
- जीवन की समस्याओं का अंत

एकीकृत जैवनैतिकता बीडीएस. पाठ्यक्रम

मौखिक एवं मैक्सिलोफेशियल सर्जरी।

- तर्कसंगत दवा का इस्तेमाल
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- फायदा और नुकसान
- बुरी खबर देना
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- सूचित सहमति
- प्रत्यारोपण और ग्राफ्ट
- ब्रेन डेथ
- इलाज की निरर्थकता
- जीवन की समस्याओं का अंत
- प्रशामक देखभाल

मौखिक चिकित्सा और रेडियोलॉजी

- तर्कसंगत दवा का इस्तेमाल
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- फायदा और नुकसान
- बुरी खबर देना
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- सूचित सहमति
- इलाज की निरर्थकता
- विकिरण खतरा
- जीवन की समस्याओं का अंत
- प्रशामक देखभाल

ऑर्थोडॉन्टिक्स और डेंटोफेशियल ऑर्थोपेडिक्स।

- बायोकम्पैटिबिलिटी
- जैव सामग्री और जैव सुरक्षा
- नैदानिक परीक्षण और अनुसंधान
- स्वदेशी सामग्री / सस्ती सामग्री
- दंत चिकित्सा सामग्री के स्रोत, विशेषकर ग्राफ्ट और प्रत्यारोपण
- सूचित सहमति
- कमजोर आबादी
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- प्रत्यारोपण और ग्राफ्ट
- फायदा और नुकसान
- बाल चिकित्सा रोगियों के नैतिक मुद्दे
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- उपचार के विकल्प नैतिक विकल्प
- फीस बंटवारा

बाल चिकित्सा और निवारक दंत चिकित्सा।

- बायोकम्पैटिबिलिटी
- जैव सामग्री और जैव सुरक्षा
- नैदानिक परीक्षण और अनुसंधान
- सूचित सहमति
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- कमजोर आबादी
- फायदा और नुकसान
- बाल चिकित्सा रोगियों के नैतिक मुद्दे
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- उपचार के विकल्प नैतिक विकल्प
- फीस बंटवारा

पीरियडोंटोलॉजी

- बायोकम्पैटिबिलिटी
- जैव सामग्री और जैव सुरक्षा
- नैदानिक परीक्षण और अनुसंधान
- स्वदेशी सामग्री / सस्ती सामग्री
- दंत चिकित्सा सामग्री के स्रोत, विशेषकर ग्राफ्ट और प्रत्यारोपण
- तर्कसंगत दवा का इस्तेमाल
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- फायदा और नुकसान
- मूल कोशिका चिकित्सा
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- सूचित सहमति
- प्रत्यारोपण और ग्राफ्ट
- उपचार के विकल्प नैतिक विकल्प
- फीस बंटवारा

प्रोस्थोडोंटिक्स और क्राउन एंड ब्रिज।

- बायोकम्पैटिबिलिटी
- जैव सामग्री और जैव सुरक्षा
- नैदानिक परीक्षण और अनुसंधान
- स्वदेशी सामग्री / सस्ती सामग्री
- दंत चिकित्सा सामग्री के स्रोत, विशेषकर ग्राफ्ट और प्रत्यारोपण
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- प्रत्यारोपण और ग्राफ्ट
- फायदा और नुकसान
- कमजोर आबादी

एकीकृत जैवनैतिकता बीडीएस. पाठ्यक्रम

- तकनीशियन अधिकार
- सूचित सहमति
- इलाज की निरर्थकता
- जीवन की समस्याओं का अंत

प्रशामक देखभाल

- फायदा और नुकसान
- बुरी खबर देना
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- स्वास्थ्य कानून
- सूचित सहमति
- न्याय और सार्वजनिक स्वास्थ्य संसाधनों का समान वितरण
- राष्ट्रीय मौखिक स्वास्थ्य कार्यक्रम
- मौखिक स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच
- इलाज की निरर्थकता
- जीवन की समस्याओं का अंत
- प्रशामक देखभाल
- पर्यावरण की नैतिकता
- पेशेवर नैतिकता,
- अनुसंधान की नैतिकता, प्रकाशन और शिक्षाविदों,
- रिकॉर्ड रखने और प्रलेखन की नैतिकता
- एकीकृत जैवनैतिकता बी.डी.एस. पाठ्यक्रम

रूढ़िवादी दंत चिकित्सा और एंडोडोंटिक्स।

- तर्कसंगत दवा का इस्तेमाल
- परीक्षण और नैदानिक परीक्षण में विवेक
- फायदा और नुकसान
- बुरी खबर देना
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- सूचित सहमति
- इलाज की निरर्थकता
- जीवन की समस्याओं का अंत

प्रशामक देखभाल:

- सार्वजनिक स्वास्थ्य दंत चिकित्सा
- फायदा और नुकसान
- बुरी खबर देना
- डॉक्टर का अधिकार; मरीज का अधिकार
- स्वास्थ्य कानून
- सूचित सहमति
- न्याय और सार्वजनिक स्वास्थ्य संसाधनों का समान वितरण
- राष्ट्रीय मौखिक स्वास्थ्य कार्यक्रम
- मौखिक स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच
- इलाज की निरर्थकता
- जीवन की समस्याओं का अंत
- प्रशामक देखभाल
- पर्यावरणीय नैतिकता
- व्यावसायिक नैतिकता और विज्ञापन
- अनुसंधान की नैतिकता, प्रकाशन और शिक्षाविदों,
- रिकॉर्ड रखने और प्रलेखन की नैतिकता

कुल मिलाकर लक्ष्य यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि छात्र निम्नलिखित प्रमुख शैक्षिक परिणामों के लिए तैयार हैं:

- नैतिक दुविधा को कैसे पहचानें और उसका विश्लेषण कैसे करें;
- किसी विशेष कार्यवाही के बारे में तर्क, बहस और निर्णय;
- पेशे के नैतिक सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता क्या है; और
- आदर्श योजना को कैसे लागू किया जाए।
- यह तथ्य कि पेशे के नैतिक मुद्दों पर विशेष ध्यान देने के साथ दंत चिकित्सा स्नातक कार्यक्रम के प्रत्येक वर्ष में नैतिकता और व्यावसायिकता निर्देश शामिल किए जा रहे हैं, निश्चित रूप से छात्रों की प्रतिबद्धता, व्यावसायिकता और तर्क और निर्णय क्षमता में सुधार होगा। प्रशिक्षित संकाय सदस्यों द्वारा निर्देशित मौजूदा पाठ्यक्रम में लंबवत एकीकरण और मरीजों के चेयर साइड क्लीनिकल मूल्यांकन के दौरान नैतिक चर्चाओं में छात्रों की भागीदारी से यह सुनिश्चित होगा कि छात्रों को स्वास्थ्य पेशेवरों के रूप में उनकी चौतरफा ज़िम्मेदारी के बारे में जागरूक करने का अंतिम लक्ष्य पूरा हो जाएगा।

अभिनव शिक्षण-सीखने और आकलन दृष्टिकोण कार्यशालाओं, छोटे समूहों, समस्या-आधारित शिक्षा और रोल प्ले

उपदेशात्मक तरीके और अन्य पारंपरिक शिक्षण विधियाँ जैवनैतिकता सिखाने के लिए अब प्रभावी साधन नहीं माने जाते हैं।

- यह समूह दृष्टिकोण छात्रों से बातचीत को आसान बनाता है; सक्रिय अनुसंधान, पढ़ने और नैतिक दुविधाओं की चर्चा को प्रोत्साहित करता है।
- इस तरह की बातचीत से छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी व्यक्तिगत नैतिक विश्वास प्रणालियों की जाँच करें और उनका बचाव करें और वे अपने सहकर्मी समूह के नैतिक दृष्टिकोण को भी समझेंगे।

- यह छोटे समूह में सीखने का फ़ॉर्मेट छात्र-संकाय संवाद और आत्मनिरीक्षण को प्रोत्साहित करने में भी मदद करता है। यहाँ संकाय नैतिक मानकों और व्यवहार को प्रदर्शित करने के संबंध में अपने छात्रों के लिए रोल मॉडल के रूप में काम करते हैं। नैतिकता और व्यावसायिकता में भूमिका-निभाने को एक प्रभावी शिक्षण पद्धति के रूप में भी पहचाना गया है।
- समस्या-आधारित शिक्षा (PBL) का इस्तेमाल मेडिकल स्कूल के पाठ्यक्रम में जैवनैतिकता सिखाने के लिए समूहों में भी प्रभावी रूप से किया गया है और यह दंत चिकित्सा शिक्षा में सीखने के समान रूप से अवसर प्रदान करता है। इनका इस्तेमाल छात्रों के व्यवहार और प्रतिक्रियाओं को देखकर मूल्यांकन के उद्देश्य से भी किया जा सकता है।

मामले के आधार पर सीखना:

- जैवनैतिकता सिखाने का सबसे प्रभावी साधन वास्तविक मरीज़ मामलों का इस्तेमाल करके मामला-आधारित शिक्षा के रूप में सीखना है।

दंत चिकित्सा संकाय जो शिक्षा के इस साधन को अपनाते हैं, वे पाएंगे कि यह छात्रों का ध्यान आकर्षित करता है और जैवनैतिकता पाठ को नैदानिक रूप से प्रासंगिक बनाता है। सीखने के लिए मामला-आधारित दृष्टिकोण छात्र-प्रशिक्षक के बीच बातचीत को भी बढ़ाता है, सीखने के परिणामों को बढ़ाता है और इसका इस्तेमाल आसानी से छात्रों में सीखने के स्तर का आकलन करने के लिए किया जा सकता है।

अभिनव शिक्षण - सीखने की सामग्री:

- अभिनव शिक्षण सामग्री जैसे कि नैतिक प्रश्नों को उत्तेजित करने वाली फिल्मों को देखना जैवनैतिकता के शिक्षण को बढ़ाने का एक और तरीका है। छोटे-छोटे किस्से या असल जीवन की कहानियों का इस्तेमाल छात्रों के चिंतन के लिए किया जा सकता है।
- इस तरह छात्रों को इन मुद्दों को अलग-थलग घटनाओं के रूप में जांचने के बजाय नैतिक दुविधाओं के समग्र संदर्भ पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अन्य उपकरण जो अवलोकन संबंधी सीखने की सुविधा प्रदान करते हैं, उन्हें दवा और दंत चिकित्सा में प्रभावी जैवनैतिकता के शिक्षण में भी शामिल किया जा सकता है।
- ये असल मरीज़ों और "नकली मरीज़ों" दोनों के टेप और लाइव वीडियो के रूप में हो सकते हैं।

इसके बाद, मूल्यांकन के उद्देश्य से छात्रों से अपनी प्रतिक्रियाएँ लिखने या व्यक्तिपरक सवालों के जवाब देने के लिए कहा जा सकता है।

बहुविषयक संकाय शिक्षण:

- शिक्षण के लिए अंतःविषय दृष्टिकोण, जो विभिन्न विषयों (जैसे, नैतिकता, चिकित्सा, मनोविज्ञान और कानून) के प्रशिक्षकों का उपयोग करता है, मेडिकल छात्रों को नैतिकता के प्रभावी शिक्षण में अमूल्य साबित हुआ है।
- अंतःविषय शिक्षा अलग-अलग पृष्ठभूमियों के लोगों की धारणाओं को महत्व देने के लिए चिकित्सकों की आवश्यकता पर ज़ोर देती है और बाद में अंतर-पेशेवर सहयोग के लिए एक मॉडल के रूप में काम करती है।
- इस तरह के दृष्टिकोण डेंटल अंडरग्रेजुएट छात्रों को नैतिक निर्णय लेने के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकते हैं और साथ ही बहु-विषयक टीम प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण प्रदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण ज़रूरतों पर ध्यान दिया जाना चाहिए:

आवश्यकता 1: एकीकृत जैवनैतिकता पाठ्यक्रम

- नैतिकता को पूरे पाठ्यक्रम में पूरी तरह से शामिल किया जाना चाहिए, जिसमें नैदानिक वर्षों में उपयुक्त कैरीओवर, क्लिनिकल सेमिनार, चेयर-साइड और/या अन्य औपचारिक हैंड्स-ऑन कोर्स शामिल हैं।
- दंत स्नातक पाठ्यक्रम में जैवनैतिकता के हॉरिजॉन्टल और वर्टिकल रूप से सुझाए गए एकीकरण से यह सुनिश्चित होगा कि यह ज़रूरत पूरी हो।
- अगला कदम यह सुनिश्चित करना होगा कि दंत चिकित्सा स्नातकोत्तर शिक्षा के सभी चरणों में उन्हीं सिद्धांतों पर चर्चा की जाए, उन पर विचार किया जाए और उन पर अमल किया जाए

आवश्यकता 2. नैतिक क्षमता का आकलन और सुनिश्चित करने की आवश्यकता।

- जैव-नैतिक पहलुओं को पेशेवर क्षमता और नैतिक क्षमता की व्यवहारिक अभिव्यक्ति (नैतिक संवेदनशीलता, नैतिक तर्क और निर्णय, और नैतिक कार्यान्वयन) में परिवर्तित किया जाना चाहिए।
- सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों परीक्षाओं में नैतिक क्षमता का व्यापक मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

- यह रोगी-डॉक्टर द्वारा रिकॉर्ड की गई बातचीत के माध्यम से किया जा सकता है; मानकीकृत मरीज़ों का उपयोग, उपयुक्त रूप से डिज़ाइन किए गए OSCE, रोल प्ले आदि के माध्यम से किया जा सकता है।

आवश्यकता 3. संकाय विकास की आवश्यकता.

- पूरे पाठ्यक्रम में जैवनैतिकता के शिक्षण को लागू करने के लिए प्रभावी संकाय विकास के लिए तत्काल संवेदीकरण और प्रशिक्षण की तत्काल आवश्यकता है और यह सुनिश्चित करें कि शिक्षक आदर्श रोल मॉडल के रूप में कार्य करें।
- स्वास्थ्य सेवा संकाय के लिए जैवनैतिकता में यूनेस्को अध्यक्ष (हाइफ़ा) के भारतीय कार्यक्रम का 3T जैवनैतिकता प्रशिक्षण कार्यक्रम इस संबंध में एक स्वागत योग्य कदम है और इसे दंत चिकित्सा स्कूलों में भी आगे ले जाने की ज़रूरत है।

आवश्यकता 4. शिक्षा के नवीन तरीकों की आवश्यकता.

- सभी अंडरग्रेजुएट डेंटल स्कूलों में प्रचलित पारंपरिक शिक्षण-अध्ययन पद्धतियों के परिवर्तन की तत्काल आवश्यकता है। नवीन शिक्षण पद्धतियां जैसे कि छोटे समूह,मामला-आधारित तरीके; भूमिका निभाना, फ़िल्में, कहानी आदि सक्रिय शिक्षा को बढ़ावा देंगी और जैवनैतिकता के क्षेत्र में स्व-मूल्यांकन/चिंतनशील अभ्यास को बढ़ावा देंगी।

मीडिया कवरेज

PANELISTS:
DR. RAJIV AHLUWALIA
MEENAKSHI LEKHI
DR. NARENDRA SAINI
DR. NARESH TREHAN
NDTV
NDTV PROFIT
NDTV'S
ETHICS IN MEDICAL ADVERTISING
23RD MAY 2013

मीडिया कवरेज

संसद टीवी पर डॉ. राजीव आहलूवालिया
शो : हैलो इंडिया

मीडिया कवरेज

यूट्यूब का आकर्षक वीडियो देखें और उस ज़बरदस्त फ़्लैशमोब के बारे में पढ़ें, जिसने लाखों लोगों के दिलों पर कब्जा कर लिया और एक प्रमुख अख़बार में प्रतिष्ठित प्रदर्शन किया, जिसमें हमारे नेक काम की शानदार सफलता दिखाई गई।

संपादकीय टीम

डॉ राजीव आहलूवालिया

अध्यक्ष, राष्ट्रीय दंत चिकित्सक जैवनैतिकता इकाई

डॉ. मन्नत सिंह

सिया सक्सेना

नैमिषा शर्मा

कैफ़ मलिक

सार्थक गर्ग

पृथु शर्मा

डी. अनिरुद्ध

भावना मिश्रा

अधिक जानकारी के लिए
QR कोड स्कैन करें

SANTOSH
Deemed to be University

नंबर 1 संतोष नगर, प्रताप विहार,
गाज़ियाबाद (दिल्ली एन.सी.आर.)
+91 78385 54410 | +91 78385 54404